हम और हमारी दुनिया

अनुवादः अब्बास असग़र शबरेज़

हम और हमारी दुनिया

अनुवाद

अब्बास असग़र शबरेज़

किताब : हम और हमारी दुनिया
अनुवाद : अब्बास असग़र शबरेज़
पहला प्रिन्ट : अगस्त 2017
तादाद : 2000
पब्लिशर : ताहा फ़ाउंडेशन, लखनऊ
प्रेस : न्यु लाइन प्रॉसेस, दिल्ली
क़ीमत : 60 रूपए

+91- 8127 79 3428
9956 62 0017

कुरआन

ज़मीन–आसमान के बनने में, दिन–रात के आने–जाने में, लोगों की भलाई के लिए दरियाओं में चलने वाली कश्तियों में, आसमान से बरसने वाले पानी में जिस से अल्लाह ने बंजर ज़मीनों को उपजाऊ बना दिया है और इसमें तरह–तरह के जानवर फैला दिए हैं और हवाओं के चलाने में और ज़मीन–आसमान के बीच उसका हुक्म मानने वाले बादलों में समझदारों के लिए अल्लाह की निशानियाँ पाई जाती हैं।

(सूरए बक़रा/164)

Contents

अपनी बात

इस दुनिया की बनावट और इसकी सीमाओं का अभी तक सही अंदाज़ा नहीं लगाया जा सका है। इस बारे में करोड़ों प्रकाश वर्ष की खोज की कम साबित हुई है।

नास्तिकों ने बिग-बैंग थ्योरी बनाई लेकिन उस पर भी सवाल उठे जिनका जवाब अभी तक दुनिया को नहीं दिया जा सका है।

किसी कार के पुर्ज़ों को एक कनस्तर में भरकर हाई स्पीड से जितना भी घुमाया जाए वह पुर्ज़े कभी भी कार का रूप नहीं धार सकते लेकिन अगर एक सिस्टम से काम किया जाए तो इन्हीं पुर्ज़ों से एक से डेढ़ घंटे में कार बनकर तैयार हो जाएगी।

इस्लाम ने इसी क़ानून के तहत दुनिया के बनाने वाले को एक अल्लाह, एक ईश्वर कहा है। वह अल्लाह जिसका न कोई आदि है और न कोई अंत और न ही उसे कोई देख सकता है लेकिन उससे कुछ भी नहीं छुपा हुआ है, यहाँ तक कि छोटी से छोटी चीज़ भी उसकी जानकारी में है। न उसे कभी नींद आती है और न वह कभी ऊँघता है। उसे किसी ने पैदा भी नहीं किया है लेकिन हर चीज़ बस उसी की वजह से टिकी हुई है। न उसके बच्चे हैं और न ही वह ख़ुद किसी से पैदा हुआ है। इन गुणों की मालिक वह ऐसी शक्ति है जिसने सारी दुनिया को बनाया है।

छटी शताब्दी में इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] जिन्हें सभी मुसलमान अपना गुरू मानते हैं और कुछ अपना मार्ग-दर्शक या इमाम जो सच्चाई और सीधा रास्ता दिखाने वाले हैं उन्होंने उस वक़्त के राजघरानों ''बनी उमय्या'' और ''बनी अब्बास'' के आपसी झगड़ों की वजह से मिलने वाले कुछ शांति भरे पलों में अरब

के शहर मदीना में एक युनिवर्सिटी की नींव रखी थी जिसमें उन्होंने हज़ारों लोगों को फ़िज़िक्स, कैमिस्ट्री, मैथ्मेटिक्स, जियॉलोली, सोशियॉलोजी आदि का ज्ञान दिया था। उनके शिष्यों की अनेक किताबें तो आज भी युरोप और अमेरिका की पुरानी लाइब्रेरियों में रखी हुई हैं और उनके सहारे आज भी दुनिया के साइंटिस्ट रिसर्च के कामों में अपने-अपने देशों का नाम ऊँचा कर रहे हैं।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के शिष्यों में से एक *मुफ़ज़्ज़ल बिन उमर* भी थे जिन्होंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से नास्तिक विचारों के ख़िलाफ़ बहुत कुछ सीखा था और *तौहीद-ए-मुफ़ज़्ज़ल* नाम की किताब भी लिखी थी।

जो किताब आपके हाथों में है यह उसी किताब *तौहीद-ए-मुफ़ज़्ज़ल* का हिन्दी अनुवाद है जिसमें नीचे लिखे विषयों पर बात की गई हैः

(1) आदमी
(2) जानवर, पशु-पक्षी और कीड़े-मकोड़े
(3) दुनिया
(4) आपदा और महामारी

इस किताब को छापने की बस एक ही वजह है कि छटी शताब्दी में जलाए गए उस दीपक की रौशनी उन सभी लोगों तक पहुँच जाए जो सोच-विचार और तर्क में भरोसा रखते हैं और तार्किक ज्ञान को फ़ौरन मानने की ताक़त भी रखते हैं।

ताहा फ़ाउण्डेशन

लखनऊ

तौहीद

पर पहला लेक्चर

(आदमी के बारे में)

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं कि ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अल्लाह हमेशा से है और उससे पहले कुछ भी नहीं था। वह सदा बाक़ी रहेगा और उसके बाक़ी रहने की कोई सीमा नहीं है। हम उसकी तारीफ़ करते हैं कि उसने हमें इल्हाम (Holy Message) किया और इस बात पर उसका शुक्र करते हैं कि उसने हमें सब से बड़ा और ऊँचा इल्म सिखाया है और सब से ऊँचा मुक़ाम दिया है। उसने अपनी इस पूरी दुनिया में सिर्फ़ हमें अपने सब से ख़ास इल्म के लिए चुना है और अपनी हिकमत[1] से सब पर हमें गवाह बनाया है।

अल्लाह के बारे में शक करने वालों की नासमझी

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! शक करने वाले यह बात समझ ही नहीं पाए हैं कि यह दुनिया आख़िर बनी कैसे है और जब यह लोग अपनी छोटी सी अक़्ल व समझ से इस दुनिया और इस में रहने वाली

---

[1] हिकमत ऐसे काम को कहते हैं जिसमें किसी भी तरह की कोई कमी, ग़ल्ती, बुराई या ख़राबी न हो। हर तरह से ठीक काम।

चीज़ों के बनाने के पीछे अल्लाह की हिकमत को नहीं समझ पाए तो इन्होंने हर चीज़ का इन्कार कर दिया और अपनी समझ की कमी की वजह से हर चीज़ को झुठला दिया। इन लोगों ने इस बात को भी ठुकरा दिया कि इस दुनिया का कोई बनाने वाला भी है और फिर इस बात का एलान कर दिया कि चीज़ों के बनने-बनाने के पीछे कोई सिस्टम या कोई प्लानिंग नहीं है यानी इस दुनिया को किसी ने भी नहीं बनाया है।

यह सब इनकी ज़बानी बातें हैं... अल्लाह इन सब को हलाक करे! यह कहाँ बहके चले जा रहे हैं?[1]

यह लोग अपने भटकने, अपनी हैरानी और अपने अंधेपन में उन अंधों की तरह हैं जो किसी शानदार घर में आए हुए हों जहाँ बहतरीन फ़र्श बिछा हुआ है, खाने-पीने की हर चीज़ सजी हुई है, पहनने के लिए तरह-तरह के कपड़े भी मौजूद हैं और उनकी ज़रूरत की हर चीज़ रखी हुई है। उस घर में हर चीज़ अच्छे ढंग से अपनी जगह पर रखी गई है लेकिन यह अंधे पूरे घर में इधर-उधर जाते हैं तो हर चीज़ को अपने पैरों से रोंदते हुए क्योंकि यह किसी चीज़ को देख ही नहीं पाते। न उस घर को देख पाते हैं और न उन चीज़ों को जो उस घर में रखी हुई हैं बल्कि कभी-कभी तो ऐसा भी होता है कि यह अंधे जब उस घर में इधर-उधर जाते हैं तो उनका पैर किसी ऐसी चीज़ से भी टकरा जाता है जो उनकी ज़रूरत की ही होती है और उन्हीं के लिए सही जगह पर रखी होती है जबकि इन्हें इस बारे में कुछ भी पता नहीं होता कि उस चीज़ को वहाँ क्यों रखा गया है। टकराने के बाद उस घर के बनाने वाले को भी बुरा-भला कहते हैं और उन चीज़ों को भी जो ख़ुद उन्हीं के लिए उस घर में सजाकर रखी गई हैं।

अल्लाह को न मानने वाले इन लोगों का हाल भी उन्हीं अंधों की तरह है। इस दुनिया में पाई जाने वाली चीज़ों के पीछे क्या-क्या राज़ छुपे हैं यह लोग समझ ही नहीं पाए हैं। यह लोग

---

[1] सूरए तौबा/30

इस दुनिया में आँखें खोलकर इतने बौखला गए हैं कि अब इनकी समझ ही में नहीं आ पाता कि इस दुनिया को बनाने और चलाने में कितना ज़बरदस्त, कितना नपा-तुला, कितना मज़बूत और कितना शानदार सिस्टम काम कर रहा है। इन लोगों में से जब कोई किसी ऐसी चीज़ को देखता है जिसके बारे में वह कुछ भी नहीं जानता तो वह सिरे से उस चीज़ की ही बुराई करने लगता है और कह बैठता है कि यह तो इस सिस्टम की कमी है। यह लोग अल्लाह का इन्कार करने वाले हैं, दीन से बाहर निकल गए हैं और खुल्लम-खुल्ला बुराईयाँ फैलाते हैं। या इन जैसे दूसरे भटके हुए लोग जिन्होंने अपनी सोच में अल्लाह की बन्दगी को छोड़ दिया है और इसी में मगन रहते हैं।

इसलिए जिस आदमी को अल्लाह ने नेमतों को जानने-पहचानने की समझ दी है, जिसे अपने दीन का रास्ता दिखाया है, जिसे इस दुनिया में पाई जाने वाली चीज़ों को समझने की ताक़त दी है और जिसे यह बात समझने की ताक़त दी है कि उसे क्यों पैदा किया गया है और जो अल्लाह के बारे में दलीलों को समझ ले ऐसे आदमी को चाहिए कि वह जितना हो सके अल्लाह का शुक्र अदा करे और उससे दुआ करे कि वह उसे इस रास्ते में मज़बूती के साथ डटे रहने की हिम्मत दे। साथ ही यह भी दुआ करे कि अल्लाह उसके लिए अपनी नेमतें और बढ़ा दे क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया हैः

अगर तुम हमारा शुक्र अदा करोगे तो हम नेमतों को बढ़ा देंगे और अगर नेमतों को ठुकराओगे तो फिर हमारा अज़ाब (प्रकोप) भी बहुत कड़ा है।[1]

---

[1] सूरए इब्राहीम/7

यह दुनिया और इसकी बनावट

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अल्लाह के होने का पहला सुबूत इस दुनिया का बनना और इसकी एक-एक चीज़ के बीच पाया जाने वाला ज़बरदस्त बैलेंस व तालमेल है। इसलिए अगर तुम इस दुनिया की बनावट पर गहराई के साथ ध्यान दोगे तो यह तुम्हें बिल्कुल उस घर की तरह दिखाई देगी जिसमें अल्लाह ने अपने बन्दों की ज़रूरत का सारा सामान सजाकर रख दिया है। यह ऊँचा आसमान उस घर की छत की तरह है, यह फैली हुई ज़मीन उस घर के फ़र्श की तरह है, आसमान के तारे बिल्कुल एक लड़ी की तरह पिरो दिए गए हैं जो उस घर में चिराग़ों का काम कर रहे हैं और साथ ही अल्लाह ने ज़मीन के पेट में न जाने कैसे-कैसे ख़ज़ाने भी भर दिए हैं। इस तरह इस दुनिया की हर चीज़ बिल्कुल ठीक-ठीक अपनी जगह पर रखी हुई है जैसे उस घर में रखी हुई थी। यहाँ रहने वाले लोग यही इन्सान हैं जिन्हें यह घर दे दिया गया है और इस घर की हर चीज़ पर उनका पूरा-पूरा कंट्रोल है। तरह-तरह के पेड़-पौधे और जानवर इसी इन्सान के लिए बनाए गए हैं ताकि वह इन सब से अपनी ज़रूरतें पूरी कर सके।

यह सब इस बात का सुबूत है कि इस दुनिया को पूरी तैयारी के साथ बड़े तालमेल से और एक बड़े मज़बूत सिस्टम के तहत बनाया गया है। यह इस बात का भी सुबूत है कि इन सारी चीज़ों को बनाने वाला भी बस एक ही है जिसने यहाँ की हर चीज़ को एक-दूसरे से जोड़ दिया है।

बेशक! पाक है वह बनाने वाला, उसकी शान निराली और उसका मुक़ाम बहुत ऊँचा है। बस वही ख़ुदा है और उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है। उसको न मानने वाले जो कुछ उसके बारे में कहते हैं वह उन सारी बातों से पाक है और जो कुछ उसे न मानने वाले उसके बारे में बोलते हैं वह उससे परे है।

आदमी कैसे बनता है?

फिर इमाम ने फ़रमाया कि ऐ मुफ़ज़्ज़ल! हम अपनी बात आदमी के जन्म से शुरू करते हैं। तुम भी इन बातों से सीखने की कोशिश करना।

पहली बात तो यह है कि अल्लाह का फ़ैसला था कि आदमी का नुत्फ़ा (Fetus) तीन पर्दों के अंदर होः पेट, कोख और बच्चेदानी। यह वह जगहें हैं जहाँ बच्चे को न तो खाने की ज़रूरत होती है और न ही उसमें इतनी ताक़त होती है कि किसी नुक़सान देने वाली चीज़ को अपने आप से दूर कर सके। न ही वह अपने नुक़सान या फ़ाएदे को समझ पाता है।

बच्चा पेट में होता है तो माहवारी का ख़ून ही उसकी ख़ुराक बन जाता है जैसे पेड़-पौधों के लिए पानी। पेट के अंदर यही उसकी ख़ुराक रहती है।

बच्चे का जन्म, उसकी ख़ुराक, दाँतों का उभरना और उसका बड़ा होना

फिर जब उसकी बनावट पूरी हो जाती है, बदन में मज़बूती आ जाती है, उसकी खाल इतनी मज़बूत बन जाती है कि बाहर की दुनिया की हवा का सामना कर सके और उसकी आँखें भी रौशनी देखने के लायक़ हो जाती हैं तो उसकी माँ को बच्चा जनने का दर्द शुरू हो जाता है। यह दर्द इतना बढ़ता है कि दर्द के ज़ोर से बच्चा माँ के पेट से बाहर निकल पड़ता है। जब बच्चा बच्चेदानी की छोटी सी जगह से निकलकर इस खुली दुनिया में बाहर आता है तो वही ख़ून जो पहले भी उसकी ख़ुराक था अब एक नई शक्ल में और एक नए रंग में यानी माँ के दूध के रूप में उसकी ख़ुराक बन जाता है। यह दूध बच्चे के लिए दूसरी हर ख़ुराक से अच्छा होता है। जब बच्चा इस दुनिया में आता है तो भूख लगने पर अपनी ज़बान बाहर निकालकर

अपने मुँह में घुमाने लगता है। इस बीच उसकी माँ का सीना दो छोटी-छोटी थैलियों की तरह दूध से भर जाता है ताकि जब भी उसे भूख लगे तो उन थैलियों में दूध तैयार मिले। बच्चा तब तक इसी तरह अपना पेट भरता रहता है जब तक कि उसका बदन नर्म और उसकी हड्डियाँ मुलायम रहती हैं।

जैसे ही बच्चा थोड़ा बड़ा होता है और उसे ऐसे खानों की ज़रूरत होती है जिनसे उसका बदन मज़बूत हो जाए तो उसके मुँह में दोनों तरफ़ ऐसे दाँत निकल आते हैं जिनसे वह अपने खाने को चक्की की तरह पीस सके और फिर पिसे हुए खाने को आसानी से अपने हलक़ से नीचे उतार सके। यह बच्चा इसी तरह बड़ा होता रहता है यहाँ तक कि वह बालिग़ (व्यस्क) हो जाता है।

अब अगर वह मर्द होता है तो उसके चेहरे पर ऐसे बाल निकल आते हैं जो उसके मर्द होने की निशानी और उसकी शान होते हैं। अपने इन्हीं बालों की वजह से वह औरतों और बच्चों से बिल्कुल अलग दिखाई पड़ता है। अगर औरत होता है तो अल्लाह उसके चेहरे पर बाल नहीं उगाता ताकि उसके चेहरे की ख़ूबसूरती व ताज़गी मर्दों को लुभाती रहे। ऐसा इसलिए है ताकि आदमियों की नस्ल आगे बढ़ती रहे और दुनिया से आदमी ख़त्म न होने पाएं।

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! इस में से हर स्टेज को ध्यान से देखो और सोचकर बताओ कि क्या ऐसा हो सकता है कि यह सब बिना किसी बनाने वाले के बन गया हो? क्या तुम जानते हो कि अगर पेट में बच्चे को ख़ुराक के तौर पर ख़ून न मिल रहा होता तो वह भी उन पेड़-पौधों की तरह सूख जाया करता जिन्हें पानी नहीं मिल पाता है। अगर बड़ा होने पर उसकी माँ को दर्द न होता तो वह ज़िन्दा ही अपनी माँ के पेट में दफ़्न हो जाया करता और अगर पैदा होने के बाद उसे दूध न मिलता तो फिर या तो वह भूख से मर जाया करता या फिर नुक़सान देने वाली चीज़ें खाता। अगर अपने ख़ास वक़्त पर उसके दाँत न निकलते तो वह अपने खाने को चबा ही न पाता और अपने हलक़ से

नीचे ही न उतार पाता और उसे हमेशा दूध ही पीना पड़ता। जिसकी वजह से उसका बदन काम करने के लिए तैयार न हो पाता और वह कमज़ोर ही रह जाता। फिर यह होता कि उसकी माँ उसकी देख-रेख में ही लगी रहती और अपने दूसरे बच्चों पर ध्यान ही न दे पाती।

चेहरे पर बाल क्यों निकलते हैं?

क्या तुम्हें पता है कि अगर चेहरे पर बाल न निकलते तो मर्दों की सूरत भी हमेशा औरतों व बच्चों की तरह हुआ करती जिसकी वजह से न उन में कभी मर्दानगी आ पाती और न ही उनकी कोई मर्दाना शान होती।

मुफ़ज़्ज़ल कहते हैं: मैंने कहा कि मेरे मौला! मैंने ऐसे लोग भी देखे हैं जो बड़े हो जाते हैं लेकिन फिर भी उनके चेहरे पर बाल नहीं उगते।

इमाम[अ०] ने फ़रमाया: यह उनकी करनी का फल है क्योंकि अल्लाह अपने बन्दों पर कभी ज़ुल्म नहीं करता।[1]

अल्लाह से हटकर कौन है जिसने इन्सान को न होने से होने में बदला है और उसे ज़िंदगी दी है? कौन है जो हर पल उसकी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है और उसके हर अच्छे-भले का ध्यान रख रहा है?

अगर इस दुनिया की चीज़ें यूँ ही बन जातीं और कोई उनका बनाने वाला न होता तो फिर यह पूरा सिस्टम ही बिगड़ जाता और हर चीज़ गुड-मुड हो जाती क्योंकि यह दोनों बातें एक साथ इकट्ठा हो ही नहीं सकतीं। इसलिए यह बेकार की बात है कि इस दुनिया का बनाने वाला कोई नहीं है क्योंकि पहले से बनाए हुए किसी सिस्टम के बिना इस दुनिया में इतना ताल-मेल बन ही नहीं सकता था। अगर कोई ऐसा कहता है तो यह उसकी

---

[1] सूरए अन्फ़ाल/51

नासमझी है क्योंकि हर समझदार आदमी जानता है कि किसी सिस्टम के बिना ऐसी दुनिया बन ही नहीं सकती थी और उस सिस्टम को ज़रूर किसी न किसी ने बनाया ही होगा।

अल्लाह उन सारी बातों से परे है जो यह इन्कार करने वाले उसके बारे में कहते हैं।[1]

अगर बच्चा पूरी तरह समझदार पैदा होता

फिर इमाम ने फ़रमाया कि अगर बच्चा पूरी सूझ-बूझ वाला और समझदार पैदा होता तो वह इस दुनिया को पहचान ही न पाता और सिरे से इसका इन्कार कर देता। जब उसका जानवरों, परिंदों और दूसरी अजीब-ग़रीब चीज़ों से सामना होता और हर पल नई-नई शक्लों वाली चीज़ें देखता तो वह चकराकर रह जाता क्योंकि इससे पहले उसने यह सब देखा ही न होता।

इस बात को ऐसे समझो जैसे किसी आदमी को क़ैद करके किसी दूसरे मुल्क में ले जाया जाए तो वह वहाँ की नई-नई चीज़ें देखकर चकरा जाता है जबकि इसके उलट अगर किसी आदमी को उसके बचपने में ही क़ैद करके कहीं ले जाया जाए तो वह जल्दी ही वहाँ की बोली और रहन-सहन सीख जाता है।

इसी तरह अगर बच्चा भी अपनी पूरी समझ लेकर इस दुनिया में आता और फिर उसके बहुत कमज़ोर होने की वजह से दूसरे जब उसे गोद में लेते, दूध पिलाते, कपड़ों में लपेटते या झूले में लिटाते तो उसे कितना बुरा लगता। दूसरी तरफ़ से उसका बदन इतना नाज़ुक और इतना लचीला होता है कि उसे इन सारी चीज़ों की ज़रूरत भी होती। अगर ऐसी हालत बन जाती तो बड़ी दिक़्क़त हो जाती।

साथ ही अगर बच्चा समझदार पैदा होता तो न तो उसे अपने बचपने की मिठास का एहसास हो पाता और न ही उसे

---

[1] सूरए इस्रा/43

वह मोहब्बत मिल पाती जो छोटे बच्चों पर लुटाई जाती है। इसी लिए जब बच्चे इस दुनिया में आते हैं तो इस दुनिया और यहाँ की हर चीज़ से अन्जान होते हैं।

यह बच्चे अपनी छोटी सी समझ और ज़रा से दिमाग़ से दुनिया की हर चीज़ को देखते हैं और धीरे-धीरे यहाँ की चीज़ों के बारे में उनकी पहचान व समझ बढ़ती जाती है। बच्चा इसी तरह सीखता और समझता रहता है। यहाँ तक कि वह इस अचम्भे की इस स्टेज से आगे बढ़ जाता है और फिर वह वक़्त भी आता है जब वह अपनी समझ व अक़्ल के बल पर अपने सारे कामो के बारे में सोच-विचार करके प्लॉनिंग भी करने लगता है। साथ ही अपने तजुर्बों से सीखता भी रहता है। इतना ही नहीं बल्कि सही रास्ते पर भी चलता है और ग़ल्तियों, भूल-चूक और गुनाहों में भी गिर पड़ता है।

इन सारी बातों से हटकर इसमें और भी बहुत सारे राज़ छुपे हुए हैं जैसेः-

अगर बच्चा पैदा होते ही पूरी तरह समझदार होता और उसे किसी की भी कोई ज़रूरत न होती तो बच्चों के पालने-पोसने में कोई मज़ा ही न आता। माँ-बाप भी बच्चों के पालने में छुपी हुई गहरी बातों को न समझ पाते। इसका रिज़ल्ट यह होता कि जब माँ-बाप बूढ़े हो जाते तो उनके बच्चों को उनका कोई ध्यान न होता और न ही वह अपने माँ-बाप के साथ मोहब्बत या हमदर्दी कर पाते क्योंकि माँ-बाप ने उनके लिए कुछ किया ही न होता कि अब वह उनके बुढ़ापे में उनके काम आएं क्योंकि बच्चे तो शुरू ही से आज़ाद और उन से अलग-थलग रह रहे होते।

इस तरह बच्चों और माँ-बाप के बीच किसी तरह की कोई मोहब्बत न होती क्योंकि बच्चों को अपने माँ-बाप की ज़रूरत ही न होती और इसी लिए वह बचपन से ही उन से अलग हो जाते। जिसके बाद न वह अपने माँ-बाप को पहचान पाते और न अपने भाई-बहन को। फिर एक-दूसरे को न पहचानने की वजह

से अपनी माँ, अपनी बहन या किसी दूसरी महरम[1] औरत से शादी करने में भी कोई रूकावट न होती।

इन सारी बातों से भी बुरी बात यह होती कि अगर बच्चा अपनी पूरी अक़्ल और समझ के साथ माँ के पेट से बाहर आता तो उसकी पहली ही नज़र ऐसी चीज़ पर पड़ती जिसका देखना उसके लिए हराम है।

ज़रा देखो तो इस दुनिया की हर चीज़ कितनी सटीक और कितनी अच्छी बनाई गई है। छोटी-बड़ी किसी भी चीज़ में ज़रा सी कमी दिखाई नहीं पड़ती।

बच्चों के रोने के फ़ाएदे

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! तुम्हें बच्चों के रोने के फ़ाएदे भी पता होना चाहिएं। जान लो कि बच्चों के दिमाग़ में एक ऐसी तरी होती है जो अगर उनके दिमाग़ में बची रह जाए तो बच्चों को तरह-तरह की बीमारियाँ लग जाएंगी और उन्हें बहुत सी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा जैसे अंधापन या इस तरह की दूसरी बीमारियाँ। जब बच्चा रोता है तो उसके दिमाग़ से यह तरी बाहर निकलती रहती है और उसका बदन तंदरूस्त और आँखें सेहतमंद हो जाती हैं। माँ-बाप इस राज़ को नहीं जानते और इसीलिए बच्चे को नहीं रोने देते जबकि इसी रोने में बच्चे की भलाई होती है। माँ-बाप की कोशिश बस यह होती है कि किसी तरह बच्चे को चुप करा दें और जिसके लिए वह उसकी हर ज़रूरत पूरी करना चाहते हैं लेकिन माँ-बाप नहीं जानते कि अगर बच्चा रोएगा तो इससे उसी को फ़ाएदा होगा और रोना ही उसके लिए अच्छा है।

सच यह है कि अल्लाह को न मानने वाले इस दुनिया और इस दुनिया की चीज़ों के अंदर छुपी हुई बातों को नहीं समझ पाते

---

[1] महरम सगे रिश्ते की वह औरतें हैं जिनके साथ शादी नहीं हो सकती।

हैं और आराम से कह देते हैं कि यह सब अपने आप बन गया है। अगर यह लोग जानते होते और समझ पाते तो कभी भी न कहते कि यह चीज़ या वह चीज़ बेकार है। बेशक! जिन बातों को झुठलाने वाले यह लोग नहीं जानते उन बातों को जानकार लोग ख़ूब अच्छी तरह से समझते हैं। न जाने कितनी चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें आदमी जानता ही नहीं है लेकिन उसका पैदा करने वाला अल्लाह अपने असीम इल्म की वजह से हर चीज़ को अच्छी तरह से जानता है।

बच्चों की राल बहने का फ़ाएदा

बच्चों के मुँह से बहने वाली राल उनके बदन से बहुत सारी गंदगियों को बाहर निकाल देती है और अगर यह राल न बहे तो उन्हें तरह-तरह की बीमारियाँ हो जाएंगी। तुम ने देखा होगा कि जिन लोगों के बदन में रतूबत यानी तरी ज़्यादा हो जाती है वह बेवक़ूफ़, पागल और दीवाने हो जाते हैं। साथ ही उन्हें फ़ालिज, लक़्वा और इस तरह की दूसरी बीमारियाँ भी हो जाती हैं।

अल्लाह ने सिस्टम कुछ ऐसा बनाया है कि यह तरी बचपने में ही मुँह के रास्ते बदन से बाहर निकल जाए ताकि बड़ा होने के बाद आदमी सेहतमंद रह सके। सच यह है कि अल्लाह ने यह सब करके आदमियों की नासमझी की वजह से उन पर करम किया है। अगर यह लोग उसकी अनगिनत नेमतों को समझ पाते तो कभी भी उसका हुक्म मानने से इन्कार न करते और कभी भी उसके रास्ते से दूर न होते। अल्लाह हर तरह की बुराई से पाक है। उसी ने इतनी बड़ी-बड़ी नेमतें दी हैं और उसकी नेमतें हर एक को मिलती हैं। अल्लाह उन सब बातों से पाक है जो यह लोग उसके बारे में सोचते हैं।

औरत-मर्द के प्राइवेट-पार्टस

अब ऐ मुफ़ज़्ज़ल! इस बात पर भी ध्यान दो कि अल्लाह ने औरत-मर्द के प्राइवेट-पार्टस कैसे बनाए हैं। उसने इन में से हर एक को बहतरीन शक्ल में बनाया है। मर्द के लिए ऐसा प्राइवेट-पार्ट बनाया है जो उभर सकता है और बढ़ सकता है ताकि औरत के गर्भाशय तक पहुँच कर अपना नुत्फ़ा (Sperm) उसमें डाल सके। औरत को एक गहरा बर्तन सा दिया है जो नर व मादा दोनों के पानी को अपने अंदर संभाल कर रखता है और उसी में बच्चा भी पलता है। फिर जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता जाता है यह बर्तन भी फैलता जाता है ताकि बच्चा उसमें आराम से रह सके। क्या यह उस हकीम[1] अल्लाह का बनाया हुआ सिस्टम नहीं है ?

बदन के अलग-अलग हिस्से

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अब ज़रा आदमी के बदन पर ध्यान दो और बदन के हर हिस्से के पीछे छुपी हुई बातों को समझने की कोशिश करो। हाथ काम करने के लिए, पैर चलने के लिए, आँखें रास्ता ढूँढने और देखने के लिए, मुँह खाने के लिए, मेदा खाना पचाने के लिए, जिगर बदन की सफ़ाई के लिए, पाख़ाने की जगह बदन की गन्दगी बाहर निकालने के लिए और प्राइवेट पार्ट्स आदमियों की नस्ल को आगे बढ़ाने के लिए हैं। अगर तुम

---

[1] हकीम उसे कहते हैं जिसके कामों में कोई भी ग़ल्ती या कमी न हो। अल्लाह को हकीम इसीलिए कहते हैं क्योंकि उसके कामों में किसी भी तरह की कोई कमी या ग़ल्ती नहीं होती है। यह शब्द क़ुरआन में 97 बार आया है जिसमें से 5 बार क़ुरआन के बारे में आया है और 91 बार अल्लाह के हकीम होने के बारे में आया है। हकीम का कोई भी काम जिहालत या नासमझी की वजह से नहीं होता है। वह जो कुछ भी करता है अपने इल्म से करता है और हर तरह के फ़ाएदे-नुक़सान को देखकर काम करता है। इसलिए अगर कोई काम हिकमत के साथ किया जाए तो उस काम में कोई भी बुराई नहीं हो सकती। इस दुनिया को हकीम अल्लाह ने अपनी हिकमत से बनाया है इसलिए इस दुनिया में कहीं भी कोई कमी दिखाई नहीं पड़ती। जो चीज़ जैसी बनी है बस वैसी ही ठीक है। इससे अच्छी हो ही नहीं सकती थी।

ध्यान दोगे तो देखोगे कि इन में से हर एक को अल्लाह ने किसी न किसी भलाई के लिए ही बनाया है।

नेचर को ही सब कुछ मानने वालों (Naturist) की बात ग़लत है

मुफ़ज़्ज़ल कहते हैंः जब बात यहाँ तक पहुँची तो मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से कहा कि मौला! कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनका यह मानना है कि यह सब कुछ नेचर की देन है। इमाम ने फ़रमाया कि ज़रा उनसे पूछना कि जिस नेचर की तुम बात करते हो क्या उसमें इल्म व क़ुदरत पाई जाती है?

अगर वह 'हाँ' में जवाब दें तो फिर ख़ालिक़ (रचयता) का इन्कार क्यों करते हैं? बनाने वाले की बनाई हुई चीज़ें तुम्हारे सामने मौजूद ही हैं।

अगर वह 'ना' में जवाब दें और कहें कि नेचर के अंदर कोई इल्म या क़ुदरत नहीं है तो इसका मतलब और क्या होगा कि इतनी ख़ूबसूरत और सिस्टमेटिक दुनिया को एक ऐसे नेचर ने बना दिया है जिसमें किसी भी तरह का कोई इल्म, अक़्ल या समझ नहीं पाई जाती। फिर यह काम किसी ऐसी हस्ती का होगा जो हकीम है और जिसे यह लोग नेचर कहते हैं वह अल्लाह का एक क़ानून है जो उसकी बनाई हर चीज़ पर बड़ी अच्छी तरह से लागू है और नतीजे में हर चीज़ उसके हुक्म के हिसाब से चल रही है।

पाचन सिस्टम

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! इस पर भी ध्यान दो कि बदन के अंदर खाना कैसे पहुँचता है और इसमें कैसी-कैसी बातें छुपी हुई हैं।

खाना पहले मेदे में जाता है और मेदा ही उसे पकाता है यानी पचाता है। उसके बाद उसका निचोड़ बड़ी महीन-महीन रगों में होता हुआ जिगर तक पहुँचता है। चूँकि यह रगें जाली की तरह होती हैं इसलिए यह खाने को छानती हैं और ऐसी हर चीज़ को जिगर तक पहुँचने से रोकती हैं जो जिगर को चोट पहुँचा सकती हो क्योंकि जिगर बड़ा नाज़ुक व नर्म होता है जो किसी भी कड़ी या सख़्त चीज़ को नहीं झेल सकता।

जब जिगर तक यह निचोड़ पहुँच जाता है तो वह उसे अल्लाह के हुक्म से ख़ून में बदल देता है। फिर यह ख़ून रगों के रास्ते पूरे बदन में फैल जाता है, बिल्कुल उसी तरह जैसे ज़मीन में नहरें व नदियाँ बनी हुई जिनसे पानी ज़मीन में हर जगह पहुँच जाता है। इसके बाद खाने की बची हुई बेकार चीज़ें भी अपनी-अपनी जगह पहुँच जाती हैं जैसे सफ़रा (पित्त) पित्ते में, सौदा तिल्ली में और रूतूबतें (पानी जैसी चीज़ें) मसाने (मूत्राशय) में। ज़रा सोचो तो कि अल्लाह ने आदमी के बदन को कितने हिसाब-किताब से बनाया है कि हर चीज़ ठीक उसी जगह रखी हुई है जहाँ उसे होना चाहिए। इन थैलियों को कुछ ऐसा बनाया गया है कि बेकार व नुक़सान देने वाली चीज़ें अपने आप इनके अंदर चली जाती हैं ताकि गंदगी बदन के दूसरे हिस्सों में न फैले और बदन बीमारियों से बचा रहे।

बेशक! पाक है वह हस्ती जिसने बदन को इतना सटीक बनाया है और सारी तारीफ़ें भी उसी के लिए हैं जिसका वह हक़दार भी है और जिसके वह लायक़ भी है।

बदन का बढ़ना

मुफ़ज़्ज़ल कहते हैंः मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से कहा कि अब मुझे यह भी बताइए कि आदमी का बदन शुरू से लेकर आख़िर तक किस तरह बढ़ता है और किस-किस स्टेज से गुज़रता है।

इमाम ने फ़रमायाः पहली स्टेज जनीन (Fetus) की है जो माँ के गर्भाशय में पलता है जहाँ न कोई आँख उसे देख पाती है और न कोई हाथ उसे छू सकता है। यही वह पहली जगह है जहाँ अल्लाह उसे पालता-पोसता है। यहाँ तक कि अल्लाह उसे इस तरह बच्चेदानी से बाहर निकालता है कि उसका बदन पूरी तरह से तैयार हो चुका होता है। आदमी के इस पूरे हो चुके बदन को जिन-जिन चीज़ों की ज़रूरत होती है वह सब इस में मौजूद होती हैं जैसे हड्डियाँ, गोश्त, चर्बी, गूदा, रगें और पुट्ठे। जब यह बच्चा इस दुनिया में आता है तो उसके बदन के सारे हिस्से एक ख़ास ताल-मेल के साथ फलते-फूलते हैं। बदन के इन हिस्सों में जो ताल-मेल पैदा होते वक़्त होता है वही बाद में भी रहता है। न यह घटता और न बढ़ता है। यह सब ऐसे ही चलता रहता है, यहाँ तक कि अगर उसकी उम्र उसका साथ देती है तो वह जवानी की स्टेज तक पहुँच जाता है और तब भी उसके बदन का यह ताल-मेल यूँ ही बाक़ी रहता है।

अब तुम ही बताओ! क्या यह सब अल्लाह ही हिकमत और उसके बनाए सिस्टम के बिना हो सकता था?

इन्सान और जानवरों में फ़र्क़

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अल्लाह ने इन्सान की बुज़ुर्गी की वजह से उसे दूसरे जानवरों से ऊपर रखा है और उसे सब से ऊँचा दर्जा दिया है।

आदमी को ऐसा बनाया है कि वह खड़ा भी हो सकता है और बैठ भी सकता है। जब बैठता है तो ठीक से बैठता है ताकि अपने हाथों और बदन के दूसरे हिस्सों से अपने आसपास की चीज़ों को आसानी से छू सके और अपने काम कर सके। अगर वह जानवरों की तरह झुका हुआ या औंधा बनाया गया होता तो भला कोई काम कर पाता?

आँखें सर में क्यों रखी गई हैं?

अब ऐ मुफ़ज़्ज़ल! उन इन्द्रियों पर ध्यान दो जो ख़ासकर आदमी को ही दी गई हैं जिनकी वजह से आदमी को ऐसी ऊँचाई मिल गई है जो किसी दूसरी चीज़ को नहीं मिल सकी है। ज़रा देखो! किस तरह आँखें इन्सान के सर में बनाई गई हैं। यह आँखें आदमी के बदन में एक ऊँचाई पर ठीक उसी तरह रखी गई हैं जैसे चिराग़ को हमेशा किसी ऊँची जगह पर ही रखा जाता है। इसका फ़ाएदा यह है कि उसकी आँखें हर चीज़ को आसानी से और पूरी तरह से देख सकती हैं। आँखें बदन के निचले हिस्सों जैसे हाथ या पैर में नहीं बनाई गईं। अगर ऐसा होता तो आँखों को चोट लग सकती थी और हर पल हिलने- डुलने या आसपास की चीज़ों से टकराने से उन्हें कोई नुक़सान पहुँच सकता था आँखें पेट, कमर या बदन के बीच में भी नहीं रखी गई हैं ताकि चीज़ों को देखने और पहचानने में कोई दिक़्क़त न हो।

इन्द्रियां पांच क्यों हैं?

आँखों के लिए पूरे बदन में सर से अच्छी कोई और जगह नहीं थी। इसीलिए इन्द्रियों (Five Senses) के लिए भी सर ही सब से अच्छी जगह थी। आदमी का सर उसकी इन्द्रियों के लिए घर जैसा है।

इन्सान को पाँच इन्द्रियाँ दी गई हैं ताकि वह पाँच तरह की चीज़ों को महसूस कर सके और महसूस हो सकने वाली कोई चीज़ उससे छूट न जाए। उसे आँखें दी गई हैं ताकि वह रंगों और शक्लों को देख सके। अगर शक्लें और रंग तो होते मगर आँखें न होतीं तो फिर रंगों का क्या फ़ाएदा होता? आदमी को कान दिए गए हैं ताकि वह आवाज़ों को सुन सके। अगर आवाज़ें होतीं और कान न होते तो फिर आवाज़ें ही बेकार हो जातीं। इसी तरह दूसरी इन्द्रियाँ भी हैं।

अब इसके उलट बात भी सही है। अगर आँखें तो होतीं लेकिन शक्लें व रंग न होते तो आँखों का क्या फ़ाएदा होता? या अगर कान तो होते मगर आवाज़ें न होतीं तो फिर कान का होना बेकार हो जाता।

ज़रा देखो कि इन में से हर इंन्द्रि किसी न किसी चीज़ को समझने और पहचानने के लिए बनाई गई है। हर इन्द्रि के लिए एक ऐसी चीज़ मौजूद है जिसको वह महसूस कर सके और उधर महसूस हो सकने वाली हर चीज़ के लिए एक इन्द्रि बना दी गई है जो उसे महसूस कर लेती है। इतना ही नहीं बल्कि महसूस करने वाली और महसूस होने वाली दोनों चीज़ों के बीच में कुछ ऐसी चीज़ें भी रखी गई हैं कि सिर्फ़ उन्हीं के बल पर चीज़ें महसूस हो पाती हैं जैसे रौशनी व हवा। अगर रंगों व शक्लों को उजागर करने वाली रौशनी न होती तो आँखें कुछ देख ही कहाँ पातीं? यह रौशनी ही तो है जो आँखों और रंगों या शक्लों के बीच के तारों को जोड़ती है। इसी तरह अगर आवाज़ की मौजों को कान तक पहुँचाने वाली हवा न होती तो कान भी कुछ न सुन पाते।

जो बातें मैंने ऊपर कही हैं जैसे इन्द्रियों का होना, महसूस होने वाली चीज़ों का होना और उनके बीच का रिश्ता... क्या यह सब चीज़ें किसी ऐसे आदमी से छुपी रह सकती हैं जिसकी निगाह और सोच सही हो। असली बात यह है कि यह सारी चीज़ें अल्लाह के सिवा और कोई बना ही नहीं सकता था।

अगर आँखें न होतीं

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! ज़रा किसी अंधे आदमी के बारे में सोचो कि उसे अपने कामों में कैसी मुसीबतें उठाना पड़ती हैं। अंधा आदमी तो यह भी नहीं देख पाता कि उसके पैर कहाँ पड़ रहे हैं, न अपने सामने देख पाता है और न अपने पीछे। न ही रंगों को देख पाता है और न ही अच्छी-बुरी चीज़ को समझ पाता है।

अगर उसके सामने कोई गढ़ा आ जाए तो वह उससे बच भी नहीं पाता। अगर उस पर दुश्मन हमला कर दे तो वह अपना बचाव नहीं कर सकता। न वह लिख-पढ़ सकता है और न कोई कारोबार कर सकता है और न ही कोई काम। बस यूँ समझ लो कि अगर उसके पास समझ-बूझ भी न होती तो वह ज़मीन पर लुढ़कते हुए किसी पत्थर की तरह होता।

अगर कान न होते

इसी तरह जो आदमी सुन नहीं पाता उसे भी अपने काम करने में बहुत सी कठिनाईयाँ होती हैं। अगर आदमी बहरा हुआ करता तो बातों की मिठास का मज़ा ही न ले पाता। न ही वह तरह-तरह की प्यारी-प्यारी बोलियां व आवाज़ें सुन पाता। ख़ुद दूसरे लोग भी उसे अपनी बात न समझा पाते। वह बिल्कुल किसी मुर्दा या किसी ग़ायब आदमी की तरह होता जिसे दूसरों के बारे में कुछ पता ही नहीं होता, जबकि वह सब कुछ देख भी रहा होता है और ज़िन्दा भी होता है।

अगर अक़्ल व समझ न होती

अगर आदमी के पास अक़्ल व समझ न होती तो वह बिल्कुल जानवरों की तरह हो जाता बल्कि कभी-कभी तो वह जानवरों की बहुत सारी बातों को भी न जान पाता और न समझ पाता।

क्या तुम नहीं देखते हो कि आदमी को अक़्ल व समझ, बदन के अलग-अलग हिस्से और दूसरी बहुत सारी चीज़ें देकर इस दुनिया में भेजा गया है कि अगर यह चीज़ें न होतीं या इन में कोई कमी होती तो आदमी को अपने काम करने में बहुत कठिनाईयाँ होतीं। आदमी को यह सारी चीज़ें देकर इस दुनिया में

भेजा गया है यानी उसे ज़रूरत की हर चीज़ दे दी गई है। क्या यह सब अपने आप हो गया है? क्या यह सब किसी हकीम व जानकार हस्ती का कारनामा नहीं है?

मुफ़ज़्ज़ल कहते हैं: मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से पूछा कि फिर ऐसा क्यों है कि कुछ लोगों के बदन में कुछ कमियाँ भी देखने को मिलती हैं जिसकी वजह से उन्हें वह सारी मुसीबतें उठाना पड़ती हैं जिनके बारे में अभी आप बता रहे थे।

इमाम ने फ़रमाया: ऐसा सज़ा देने के लिए होता है और इसलिए भी होता है ताकि दूसरे उसे देखकर सीख सकें। जैसे कि बादशाह भी अपनी प्रजा के साथ ऐसा ही करते हैं ताकि मुजरिम तो जुर्म करना छोड़ ही दे, दूसरे भी उसे देखकर अपने कान पकड़ लें। बादशाह का ऐसा करना लोगों को भी अच्छा लगता है और वह इस काम के लिए उसकी तारीफ़ भी करते हैं।

साथ ही जिन लोगों को अपने बदन में ऐसी कमियाँ झेलना पड़ती हैं अगर वह सब्र (धीरज) से काम लें, अल्लाह का शुक्र करें और तौबा करें तो मरने के बाद उन्हें बहुत अच्छा और बड़ा बदला दिया जाएगा। इतना बड़ा बदला कि अगर उन्हें मरने के बाद दोबारा इस दुनिया में आने की छूट मिल जाए तो वह यही चाहेंगे कि फिर से उन्हीं मुसीबतों में घिर जाएं और उसके बदले में उन्हें क़यामत में बदला दे दिया जाए।[1]

जोड़े बनाने का राज़

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अब ज़रा उन चीज़ों के बारे में ध्यान दो जो जोड़ा-जोड़ा बनाई गई हैं और उन में अल्लाह की हिकमत देखो।

---

[1] इस्लाम के मूल क़ानूनों में से एक ''क़यामत'' भी है जिसका मतलब यह है कि इस दुनिया में जितने भी लोग आए हैं उन सब को मरने के बाद इस दुनिया से अल्लाह के पास वापस जाना है जहाँ हर आदमी का हिसाब-किताब होगा और अच्छे या बुरे कामों को देखते हुए उसे स्वर्ग या नर्क में भेजा जाएगा। जिन कामों को करने से अल्लाह ने रोका है उन्हें गुनाह कहते हैं और जो लोग गुनाह करते हैं उनका ठिकाना नर्क है लेकिन अगर कोई गुनाह करने के बाद सच्चे दिल से तौबा कर ले यानी अल्लाह से माफ़ी मांग ले तो अल्लाह उसे माफ़ कर देता है।

आदमी को सर तो एक ही दिया गया है क्योंकि दो सर देने में कोई भलाई नहीं थी। जब इन्सान की ज़रूरत की हर चीज़ एक ही सर में रख दी गई है तो दूसरा सर बेकार होता जिसकी कोई ज़रूरत न होती और यह चीज़ उसके बदन का ताल-मेल बिगाड़ देती।

अगर आदमी के दो सर होते तो वह असल में दो धड़ों में बंट जाता। अगर एक सर बात कर रहा होता तो दूसरा बेकार होता। अगर दोनों सर बात कर रहे होते तो भी एक सर किसी काम का न होता। अगर कोई एक सर एक बात कहता और दूसरा सर दूसरी बात तो सुनने वाले की समझ में ही न आता कि किस की बात सुने और किस की तरफ़ ध्यान दे। इस से हटकर दूसरी दिक़्क़तें भी आतीं।

आदमी को दो हाथ दिए गए हैं क्योंकि अगर बस एक हाथ होता तो वह बहुत सारे काम न कर पाता और उसके रोज़ाना के कामों में बड़ी कठिनाई आती। क्या तुम ने ध्यान नहीं दिया है कि अगर किसी बढ़ई या राजगीर का एक हाथ बेकार हो जाए तो वह किसी काम का नहीं रहता और अगर मान भी लिया जाए कि वह अपने एक हाथ से ही काम कर सकता है तब भी उसके काम में वह मज़बूती और हुनर नहीं आ सकता जो दो हाथों से आता है।

बोलने की ताक़त

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! आदमी की आवाज़ों, बातों और उसके कानों पर ज़रा और गहराई से ध्यान दो। आदमी का गला एक पाइप की तरह आवाज़ों को बाहर निकालता है। ज़बान, होंट और दाँत भी शब्दों को बनाने और आवाज़ें निकालने के काम आते हैं। क्या तुम ने नहीं देखा है कि जिस आदमी के दाँत गिर जाते है वह ''सीन'' और जिसका होंठ कट जाता है वह ''काफ़'' और जिसकी ज़बान मोटी होती है वह ''रा'' ठीक से नहीं बोल पाता।

इन्सान के बदन के अंदर मौजूद आवाज़ें निकालने वाली यह मशीन सब से ज़्यादा शहनाई से मिलती है। हन्जरा (कंठनाली या गला) बांसुरी की तरह और फेफड़े लौहार की धौंकनी की तरह होते हैं ताकि हवा अंदर जा सके। फेफड़ों को दबाने वाले पुट्ठे बीन बजाने वाले की उंगलियों के जैसे होते हैं ताकि हवा अंदर दौड़ सके। जब ऐसा होता है तभी होंठ व दाँतों के सहारे हुरूफ़ (अक्षर) और अल्फ़ाज़ (शब्द) बनते हैं। होंठ व दाँत उन उंगलियों की तरह काम करते हैं जो बांसुरी के छेदों को बारी-बारी से खोलती-बंद करती हैं जिससे तरह-तरह की आवाज़ें बनती हैं। यूँ तो हम ने इन्सान के मुँह से आवाज़ें निकालने वाले इस सिस्टम को इस यन्त्र जैसा बताया है लेकिन सच तो यह है कि ख़ुद यह यन्त्र ही आदमी के मुँह से आवाज़ें निकालने वाले इस सिस्टम जैसा है।

दूसरे फ़ाएदे

इमाम ने फ़रमाया कि मैंने तुम्हें यह तो बता दिया कि बात कैसे की जाती है, आवाज़ें कैसे निकलती हैं और शब्द कैसे बनते हैं लेकिन इस सब से हटकर कुछ और फ़ाएदे ऐसे भी हैं जिन्हें तुम्हें ज़रूर जानना चाहिए। जैसे हन्जरा (हलक़ का पाइप) इसलिए होता है ताकि हवा बराबर आती-जाती रहे और दिल को ठंडा रख सके। अगर यह काम थोड़ी सी देर के लिए भी थम जाए तो आदमी मर भी सकता है।

ज़बान

ज़बान का फ़ाएदा यह है कि इस से तरह-तरह के ज़ायक़ों की पहचान होती है। कौन सी चीज़ मीठी है, कौन सी कड़वी और कौन सी खट्टी। कौन सा पानी मीठा है और कौन सा

नमकीन, कौन सा अच्छे ज़ायक़े का है और किसका ज़ायक़ा ख़राब है। यह सब हमें ज़बान से ही पता चलता है। साथ ही साथ ज़बान खाने-पीने की चीज़ों को हमारे गले से नीचे उतारने में भी मदद करती है।

दाँत

दाँतों का काम यह है कि यह खाने को चबाने का काम करते हैं ताकि खाना मुलायम हो जाए और आसानी से नीचे उतर जाए। दाँत होंठों के लिए तकिए का काम भी करते हैं और उन्हें मुँह के अंदर जाने से रोकते हैं। तुम ने ऐसे बहुत से लोगों को देखा होगा जिनके दाँत गिर चुके हों जिसकी वजह से उनके होंठ ढीले पड़ जाते हैं और हिलने-डुलने लगते हैं।

होंठ

आदमी अपने होंठों की मदद से ही पीने वाली चीज़ों को पीता है। होंठों का फ़ाएदा यह है कि पीने वाली कोई चीज़ एक दम से मुँह में नहीं जाती बल्कि धीरे-धीरे और ज़रूरत के हिसाब से पेट के अंदर जाती है ताकि पीने वाले के गले में फंदा न लग जाए या अंदर जाकर कोई तकलीफ़ न पहुँचाए। यह होंठ मुँह के लिए दरवाज़े के दो पल्लों जैसे हैं। आदमी जब भी चाहता है इन्हें खोल लेता है और जब चाहता है बंद कर लेता है।

अब तक जो कुछ तुम्हें बताया है उससे यह बात साफ़ हो जाती है कि आदमी के बदन के हर हिस्से में बहुत सारे फ़ाएदे छुपे हुए हैं। साथ ही यह भी कि बदन का एक-एक हिस्सा कई-कई काम करता है बिल्कुल उसी तरह जैसे बढ़ई की बसूली जो लकड़ी छीलने के काम भी आती है और दूसरे काम भी करती है।

दिमाग़

अगर रूकावटें हट जातीं और तुम दिमाग़ को देख पाते तो कहते कि दिमाग़ बहुत सारी झिल्लियों में लिपटा हुआ है ताकि हिलने-डुलने से बचा रहे और उसे कोई नुक़सान न पहुँचे। इन झिल्लियों के ऊपर टोपी की तरह खोपड़ी भी है जो दिमाग़ को झटकों, धक्कों और चोट या ठेस लगने से बचाती है।

सर के बाल

इन्सान के सर को ढेर सारे बालों से ढक दिया गया है जो उसके लिए फ़र वाले कोट का काम करते हैं। यही बाल उसे तेज़ सर्दी-गर्मी से भी बचाते हैं। बेशक! जिसने दिमाग़ बनाया है और उसे पूरे बदन का कमांडर बनाया है उसने पूरे बदन में सब से ख़ास होने, सब से नाज़ुक होने और सब से बड़ी ज़िम्मेदारी उठाने की वजह से दिमाग़ को संभाल कर भी रखा है ताकि यह ख़तरों से बचा रह सके।

कौन है जिसने दिमाग़ को इतने मज़बूत क़िले में इतना संभाल कर रखा है?

आँखें

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! ज़रा आँखों के पपोटों (पलकों के ऊपरी हिस्से) को देखो कि कैसे यह एक पर्दे की तरह आँखों को छुपा लेते हैं। उनके किनारे-किनारे पलकें उन डोरों की तरह हैं जिन्हें पकड़ कर पर्दे को उठाया और गिराया जाता है। साथ ही आँखों को एक गड्ढे जैसी जगह में रखा गया है। फिर पपोटों और पलकों के बालों के सहारे आँखों को बड़ी अच्छी तरह से संभाल कर रखा गया है।

दिल

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! भला किसने हमारे इस दिल को सीने के अंदर रखा है और फिर उसे एक मज़बूत पर्दे से ढक भी दिया है? इतना ही नहीं बल्कि पसलियाँ, गोश्त और पुट्ठे भी बनाए हैं जो दिल को हर तरह के ख़तरे से बचाकर रखते हैं।

गले के अंदर के दो छेद

वह कौन है जिसने गले के अंदर दो छेद बनाए हैं। एक से आवाज़ बाहर निकलती है और यह गले का वही हिस्सा है जो सीधे फेफड़ों से जुड़ा होता है और दूसरे छेद से खाना गले से नीचे उतर कर पेट के अंदर जाता है और इसे खाने की नली कहते हैं।

वह कौन है जिसने आवाज़ वाले रास्ते पर ऐसा ढक्कन लगा दिया है जो खाने को फेफड़ों तक जाने से रोक देता है? अगर यही खाना फेफड़ों तक पहुँच जाया करता तो आदमी मर जाता।

कौन है वह जिसने फेफड़ों को दिल का पंखा बनाकर रखा है जो बराबर अपना काम करता रहता है जिससे दिल में गर्मी नहीं होती और आदमी मरने से बच जाता है।

बदन की बेकार चीज़ों के लिए बाहर निकलने का रास्ता

अल्लाह के सिवा और कौन था जो बदन से बेकार चीज़ों के बाहर निकलने के लिए पाख़ाने व पेशाब की नालियाँ बना पाता कि जब चाहे इन्सान इन्हें खोल ले और जब चाहे बंद कर ले ताकि यह गन्दगी हर वक़्त न बहती रहे। अगर यह गंदगी हर वक़्त बहती रहती तो आदमी का जीना ही दूभर हो जाता।

भला आदमी कहाँ तक अल्लाह की दी हुई इन नेमतों को गिन पाएगा? बेशक! वह सारी बातें जो लोग नहीं जानते वह उस से कहीं ज़्यादा हैं जो वह जानते हैं या गिन पाते हैं।

पाचन सिस्टम

भला अल्लाह के सिवा कौन मेदे को इतना मज़बूत बना सकता था? यह तो भारी से भारी खाने को भी हज़्म कर लेता है? कौन जिगर को इतना नर्म व मुलायम बना सकता था कि खाने-पीने की चीज़ों को पहले छाने, साफ़ करे और फिर हज़्म करे? जिगर का काम तो मेदे से भी ज़्यादा बारीक है।

क्या तुम्हें इन चीज़ों में ज़रा सी भी कमी दिखाई पड़ती है? बिल्कुल नहीं। यह सब उसी जानकार अल्लाह का बनाया हुआ है जो हर चीज़ को बनाने से पहले ही सब कुछ जानता था। कोई भी चीज़ अल्लाह की ताक़त से बाहर नहीं है। वह हर चीज़ को जानता है और हर चीज़ को पूरी तरह से पहचानता है।

हड्डियों का गूदा, रगों में ख़ून, नाख़ून, कान व रान

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! देखो तो कि इन हड्डियों की नालियों में मुलायम-मुलायम गूदे को कैसे भर दिया गया है? ऐसा बस इसलिए है ताकि यह नालियाँ गूदे को संभाल कर रख सकें और उसे बर्बाद होने से बचा लें।

यह रगों में बहता हुआ ख़ून किस लिए है जैसे किसी बर्तन में पानी भर दिया गया हो? यह बस इसलिए है ताकि रगें ख़ून को रोके रहें और बहने न दें।

उंगलियों पर नाख़ून क्यों लगाए गए हैं? इसीलिए तो हैं ताकि उंगलियाँ चोट लगने से बची रहें और काम करने में मदद करें।

कान का भीतरी हिस्सा गुफ़ाओं की तरह इतना टेढ़ा-मेढ़ा क्यों बनाया गया है? क्या ऐसा इसलिए नहीं है ताकि जब आवाज़ें कान के पर्दे तक पहुँचें तो टूट कर उनका ज़ोर कम हो चुका हो जिससे कान के पर्दे को नुक़सान न पहुँचे?

आदमी की जांघों और बैठने की जगह पर इतना गोश्त क्यों मंढ़ दिया गया है? ऐसा इसलिए है ताकि कमज़ोर व बीमार आदमियों को सख़्त और ऊबड़-खाबड़ ज़मीन पर बैठते हुए तकलीफ़ न हो?

इन्सान का मर्द-औरत होना

आख़िर किसने इन्सान को औरत-मर्द बनाया है? ऐसा उसी ने किया है जिसने आदमी को नस्ल बढ़ाने वाला बनाया है।

आख़िर किसने उसे नस्ल पैदा करने वाला बनाया है? ऐसा उसी ने किया है जिसने उसके अंदर यह चाहत रखी है।

आख़िर किसने उसके अंदर यह चाहत रखी है और उसे यह सारे औज़ार भी दिए हैं? उसी ने जिसने आदमी को काम करने वाला बनाकर पैदा किया है।

आख़िर किसने उसे काम करने वाला बनाया है? उसी ने बनाया है जिसने उसके अंदर इन कामों की ज़रूरत रखी है।

आख़िर किसने उसे ज़रूरत वाला बनाया है? उसी ने जिसने उसकी ज़रूरतों को पूरा करने वाली सारी चीज़ें भी बनाई हैं।

आख़िर किसने उसकी ज़रूरतों को पूरा करने वाली चीज़ें बनाई हैं? उसी ने जो उसकी ज़रूरतों को पूरा करने वाला है।

वह कौन है जिसने समझ देकर उसे सारी दुनिया में सब से अलग और सब से ऊँचा कर दिया है? ऐसा उसी ने तो किया है जिसने उसके लिए सवाब व अज़ाब (पुण्य व प्रकोप) रखा है।

आख़िर किसने उसे रास्ता दिखाया है? उसी ने जिसने उसे रास्ता ढूँढना सिखाया है।

आख़िर किसने उसे रास्ता ढूँढना सिखाया है? उसी ने जिसने आदमी को सब कुछ समझाकर और सिखाकर इस दुनिया में भेजा है।

आख़िर वह कौन है जिसने आदमी को वह रास्ते भी दिखा दिए जिन्हें वह ढूंढ ही नहीं सकता था? वह वही है जिसका कोई शुक्र अदा कर ही नहीं सकता।

जो कुछ मैंने कहा है उस पर ध्यान से सोचो और ख़ूब सोचो। क्या तुम्हें इस दुनिया के इतने बड़े कारख़ाने में कहीं कोई कमी दिखाई पड़ती है? कहीं किसी चीज़ का ताल-मेल बिगड़ा हुआ दिखाई देता है? कहीं इस सिस्टम में कोई रूकावट नज़र आती है?

बेशक! अल्लाह उन सारी बातों से बहुत परे है जो यह लोग उसके बारे में कहते हैं।[1]

दिल की बनावट

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अब मैं तुम्हें दिल के बारे में बताता हूँ। फेफड़ों के छेदों के साथ-साथ दिल में भी छेद होते हैं ताकि दिल गर्म न हो जाए। अगर इन दोनों तरह के छेदों का ताल-मेल बिगड़ जाए या अगर यह आमने-सामने से हट जाएं तो दिल तक हवा नहीं पहुँच पाएगी और आदमी साँस नहीं ले पाएगा। क्या कोई समझदार आदमी यह बात मान सकता है कि यह सब अपने आप हो गया है। क्या उसकी अक़्ल इस बेकार सी बात को मान सकेगी?

अगर तुम किसी दरवाज़े का ऐसा पल्ला देखो जिसमें ज़न्जीर लगी हुई हो तो क्या तुम यह कहोगे कि यह बेकार है? बिल्कुल नहीं बल्कि तुम कहोगे कि जिसने दरवाज़े का एक पल्ला बनाया है उसी ने दूसरा भी बनाया होगा और उसमें कुण्डा भी लगा

---

[1] सूरए अन्आम/100

होगा ताकि दोनों पल्ले मिलकर बंद हो जाएं ताकि इस दरवाज़े से जो भी काम लेना हो वह लिया जा सके।

इसी तरह किसी जानदार के सिर्फ़ नर को देखकर हमारी समझ कहती है कि उसके लिए ज़रूर कोई न कोई मादा भी बनाई गई होगी ताकि वह उसके साथ मिलकर अपनी नस्ल को आगे बढ़ा सके।

बुरा हो उन लोगों का जो अपने आप को पढ़ा-लिखा तो कहते हैं मगर उनके दिल की आँखें अंधी हैं जो इस दुनिया में पाए जाने वाले इस ज़बरदस्त सिस्टम व तालमेल को नहीं समझ पाते और आसानी से कह बैठते हैं कि इस दुनिया को किसी ने नहीं बनाया है।

मर्द का प्राइवेट पार्ट

अगर मर्द का प्राइवेट-पार्ट (लिंग) ढीला और लटका हुआ होता तो फिर वह कैसे औरत की बच्चेदानी तक पहुँच पाता और अपने नुत्फ़े (Sperm) को उसमें उंडेल पाता? और अगर हमेशा तना हुआ रहता तो फिर आदमी अपने बिस्तर में कैसे सो पाता? या कैसे लोगों के बीच आ पाता? यह दिखने में तो भद्दा लगता ही, इसका दूसरा नुक़सान यह होता कि मर्द और औरत दोनों हर पल शहवत (Sexual Desires) में डूबे रहते।

इसलिए अल्लाह ने ऐसा काम किया है कि यह चीज़ आम हालात में आँखों के सामने न आए ताकि मर्द आने वाली मुसीबतों से बच जाए। इसीलिए ऐसा है कि जब ज़रूरत होती है तभी इस में तनाव पैदा होता है ताकि आदमियों की नस्ल ख़त्म न होने पाए और आगे बढ़ती रहे।

बदन से गंदगी का बाहर निकलना

अब ऐ मुफ़ज़्ज़ल! उन नेमतों को भी समझने की कोशिश करो जो अल्लाह ने खाने-पीने और बेकार चीज़ों के बदन से बाहर निकलने में रखी हैं।

क्या तुम नहीं देखते हो कि जब कोई घर बनाया जाता है तो उसमें ट्वायलेट दूर किसी कोने में बनाया जाता है? अल्लाह ने भी यही किया है कि बदन से पाख़ाना बाहर निकालने वाले छेद को सब से छुपी हुई जगह पर बनाया है। यह छेद कमर में नहीं बनाया और न बदन के सामने वाले हिस्से में बनाया बल्कि एक ऐसी जगह पर बनाया जो छुपी हुई है। यह एक ऐसी जगह है जो जांघों और कूल्हों के गोश्त से पूरी तरह से छुपी व ढकी हुई है। जब भी आदमी को अपने बदन की गन्दगी व कूड़ा-करकट बाहर निकालना होता है तो वह एक ख़ास तरह से बैठ जाता है जिससे वह छेद खुल जाता है और सारी गंदगी आसानी से बाहर निकल जाती है।

अल्लाह सब से परे है जिसकी नेमतें इतनी हैं कि उन्हें गिना ही नहीं जा सकता।

दाँतों की बनावट

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अब थोड़ा सा दाँतों पर भी ध्यान दो। कुछ दाँत तो तेज़ धार वाले हैं जो खाने को काटने और चीरने के लिए होते हैं। कुछ दाँत फैले हुए हैं जो खाने को छोटा-छोटा करने और पीसने का काम करते हैं। अल्लाह ने आदमी को दोनों तरह के दाँत दिए हैं क्योंकि उसे इन दोनों की ही ज़रूरत थी।

बालों और नाख़ूनों की बनावट

इस बात पर भी ध्यान दो कि अल्लाह ने बाल और नाख़ून क्यों बनाए हैं।

चूँकि बालों व नाख़ूनों को बढ़ना था, लम्बा होना था और फिर कटना भी था, इसलिए अल्लाह ने इन्हें बेजान बनाया है ताकि जब यह कटें तो आदमी को दर्द न हो। अगर बाल और नाख़ून काटते वक़्त आदमी को दर्द होता तो उसे दो कामों में से एक काम करना पड़ताः या तो दोनों को बढ़ने ही देता या फिर जब भी काटता तो उसे बार-बार दर्द सहना पड़ता जिसकी वजह से उसे बड़ी तकलीफ़ होती।

मुफ़ज़्ज़ल कहते हैंः इसके बाद मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से कहा कि अल्लाह बाल और नाख़ून को ऐसा भी तो बना सकता था कि कभी लम्बे ही न होते ताकि काटना ही न पड़ता?

इमाम ने फ़रमायाः अल्लाह ने इन दोनों के अंदर ऐसी-ऐसी भलाईयाँ रख दी हैं कि आदमी उन्हें जानता ही नहीं है और अगर जानता होता तो फ़ौरन शुक्र करने लगता। जान लो कि बालों के निकलने और उंगलियों के पौरों पर नाख़ूनों के बढ़ने से बदन की बहुत सारी बीमारियाँ अपने आप बाहर निकल जाती हैं। इसलिए लोगों से हर हफ़्ते नूरा (बालों को साफ़ करने वाला पॉवडर) लगाने, बाल कटवाने और नाख़ूनों को काटने के लिए कहा गया है। ऐसा करने से बाल और नाख़ून जल्दी बढ़ जाते हैं और बीमारियाँ भी जल्दी बाहर निकल जाती हैं। अगर आदमी ऐसा न करे तो इन दोनों के बढ़ने की स्पीड धीमी पड़ जाती है जिसका नतीजा यह होता है कि बीमारियाँ बदन में ही रह जाती हैं और साथ ही दूसरी बहुत सारी बीमारियाँ भी पनपने लगती हैं।

यहाँ ख़ास बात यह भी है कि बदन में जिन जगहों पर बाल होने से आदमी को नुक़सान या दिक़्क़त हो सकती थी वहाँ-वहाँ बाल नहीं उगते। अगर आँखों में भी बाल होते तो क्या आदमी अंधा न हो जाता? या अगर उसके मुँह में बाल निकल आते तो

क्या खाना-पीना दूभर और बेज़ायक़ा न हो जाता? अगर हथेली पर बाल निकल आते तो चीज़ों को छूकर उन्हें महसूस करना आसान न होता और फिर आदमी दूसरे बहुत सारे काम भी न कर पाता। या अगर मर्द-औरत के प्राइवेट पार्टस पर बाल उग आते तो फिर सेक्स का मज़ा ही न आता।

ध्यान से देखो कि जहाँ-जहाँ बालों का उगना ठीक नहीं था वहाँ-वहाँ बाल नहीं उगते और ऐसा बस आदमियों के साथ ही नहीं है बल्कि चौपायों, दरिंदों और दूसरे ऐसे जानवरों के साथ भी ऐसा ही है जो अपनी नस्ल आगे बढ़ाने वाले हैं। इसलिए चाहे उनका पूरा बदन बालों से ढका हुआ हो लेकिन इन सारी जगहों पर कभी बाल नहीं उगते और ऐसा इसी वजह से है जो अभी बताई है।

अल्लाह ने हर चीज़ को कितनी अच्छी तरह से बनाया है जिसमें न कोई कमी है और न कोई बुराई। हर चीज़ के पीछे कोई न कोई राज़ ज़रूर छुपा हुआ है।

नाफ़ के नीचे और बग़ल में बालों के फ़ाएदे

अल्लाह का इन्कार करने वाले और उसके साथियों और दूसरे लोगों ने अल्लाह के ऊपर सवाल उठाते हुए यही तो कहा था कि आदमी के बदन में उसकी नाफ़ के नीचे और बग़ल में बालों के उगने की क्या ज़रूरत थी? जबकि इन लोगों को पता होना चाहिए कि यह बाल उस पसीने की वजह से उगते हैं जो इन जगहों से निकलता है, बिल्कुल उसी तरह जैसे पेड़-पौधे उसी जगह उगते हैं जहाँ ज़मीन में नमी होती है। क्या तुम ने ध्यान नहीं दिया कि बदन की फ़ाल्तू व बेकार चीज़ों के निकलने के लिए यही जगहें सब से सही थीं? इसका एक दूसरा फ़ाएदा यह भी है कि आदमी ख़ुद भी अपने बदन का ध्यान रखता है और अपने बदन की सफ़ाई करता रहता है जिससे उसका बदन सेहतमंद रहता है। साथ ही बदन के फ़ाल्तू बाल काटने से उसका

ग़ुस्सा, मस्ती, तेज़ी और झल्लाहट भी कम हो जाती है और वह बुरे काम करने और बेकारी से भी बच जाता है।

मुंह में थूक क्यों आता है?

मुँह में पैदा होने वाले थूक और उसके फ़ाएदों पर भी ध्यान दो। अल्लाह ने कुछ ऐसा सिस्टम बनाया है कि आदमी के मुँह में थूक हर वक़्त आता रहता है ताकि उसका मुँह और गला हर वक़्त तर रहे और सूखने न पाए। अगर यह दोनों जगहें सूख जाएं तो आदमी मर जाएगा क्योंकि अगर आदमी के मुँह में पानी ही न होता और उसका मुँह व गला सूख जाता तो वह सूखी चीज़ों को चबाकर नर्म करके अपने हलक़ से नीचे कैसे उतार पाता। बस यूँ समझ लो कि मुँह के अंदर की यह तरी खाने की चीज़ों के लिए सवारी के जैसी है जो खाने को मेदे के अंदर ले जाती है। यही थूक सफ़रा तक भी पहुँच जाता है जो आदमी के फ़ाएदे की चीज़ है क्योंकि अगर सफ़रा सूख जाए तो आदमी मर जाएगा।

पेट के ऊपर कपड़ों की तरह बटन क्यों नहीं होते?

कुछ जाहिल बेवजह अपने आपको पढ़ा-लिखा समझते हैं और अपनी नासमझी की वजह से कहते फिरते हैं कि अगर आदमी का पेट किसी जैकेट या ओढ़नी की तरह होता तो कितना अच्छा होता क्योंकि जब भी डॉक्टर को पेट चेक करना होता वह पेट के बटन खोलकर अंदर का हाल जान लेता। अपना हाथ अंदर डालता और पेट का इलाज कर लेता मगर क्या करें कि पेट तो पूरी तरह से बंद है। अब अगर डॉक्टर इलाज भी करेगा तो वह बस बाहर से दिखने वाली चीज़ों जैसे पेशाब को देखकर, बदन को बाहर से चेक करके या पसीने की बू से या इसी तरह की

किसी और चीज़ से ही इलाज कर सकता है जिसमें वह ग़लतियाँ भी कर जाता है और सही दवाई की जगह ग़लत दवाई भी दे देता है। जिससे कभी-कभी आदमी मर भी जाता है।

यह जाहिल व नासमझ लोग यह बात जानते ही नहीं हैं कि जैसा यह लोग कहते हैं अगर वैसा ही हो जाता तो सब से पहले तो आदमी के दिल से मौत का डर निकल जाता और कभी भी बीमार न पड़ने और हमेशा सेहतमंद रहने की वजह से उसके अंदर जो घमंड पैदा होता उसकी वजह से वह हमेशा मौज-मस्ती करता रहता और हर वक़्त बस खाता ही रहता। जिसका नुक़सान यह होता कि हर पल पेट से कुछ न कुछ बाहर निकलता रहता जिससे सोना-जागना दूभर हो जाता और वह हर पल गंदगी में डूबा रहता।

साथ ही यह गंदगियाँ उसके कपड़ों और दूसरी चीज़ों को भी गंदा करती रहतीं और उसका जीना दूभर हो जाता।

मेदे, जिगर और दिल के लिए अल्लाह ने एक ख़ास टम्प्रेचर रखा है। अब अगर पेट इतना खुला हुआ होता कि डाक्टर अंदर तक देख ले और हाथ भी अंदर चला जाए तो बाहर की ठंड अंदर पहुँच जाया करती रहती जो पेट के अंदर के टम्प्रेचर से मिलकर वहाँ के ताल-मेल को बिगाड़ देती जिससे आदमी के अंदर की मशीनरी पूरी तरह बेकार हो जाती और फिर आदमी मर जाता।

ध्यान रखो! जो भी और जैसा भी अल्लाह ने बना दिया है वही सब से अच्छा है। इस से हटकर यह लोग जो कुछ भी कहते हैं वह सब बेकार की बातें हैं।

खाने, सोने और सेक्स से जुड़ी बातें

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! खाने, सोने और सेक्स से जुड़ी बातों पर भी ध्यान दो! इन में से हर एक के लिए आदमी के अंदर एक भीतरी फ़ैक्टर रख दिया गया है जो अंदर से आदमी को इन

कामों पर उभारता रहता है। खाना खाने की चाहत को उभारने वाला फ़ैक्टर भूख है जिससे आदमी का बदन मज़बूत और टिकाऊ हो जाता है।

इसी तरह जागना और न सोना, नींद का फ़ैक्टर है वही नींद जिससे बदन को आराम और ताक़त मिलती है।

शहवत (Sexual Desire) इन्सान के अंदर सेक्स को उभारने और नस्ल को आगे बढ़ाने वाला फ़ैक्टर है।

अगर आदमी को भूख न लगती और उसके बदन के अंदर से भूख की चाह न होती बल्कि बाहर के किसी और फ़ैक्टर की वजह से उसे भूख लगा करती तो वह अपनी सुस्ती व काहिली की वजह से खाना खाना भी छोड़ दिया करता जिसका नुक़सान यह होता कि आख़िर में कमज़ोर होकर मर जाया करता। जैसे अगर आदमी बीमार हो जाए तो दवाई खाना ज़रूरी हो जाता है लेकिन वह अपनी सुस्ती और दवाई न खाने की वजह से किसी भयानक बीमारी या तकलीफ़ का शिकार होकर आख़िर में मर भी जाता है।

इसी तरह अगर आदमी को नेचुरल तौर पर नींद न आया करती और वह बस अपनी ज़रूरत, आराम व ताक़त के लिए सोया करता तो यह भी हो सकता था कि वह सुस्ती दिखा दिया करता और न सोने की वजह से उसका बदन कमज़ोर पड़ जाता और आख़िर में वह मर भी जाता।

इसी तरह अगर आदमी के अंदर शहवत (Sexual Desire) भी न होती और वह बस अपनी चाहत या अपनी नस्ल को आगे बढ़ाने के लिए औरत से मिलता तो इस बात की बड़ी उम्मीद थी कि वह सिरे से यह काम ही न करता जिसका नुक़सान यह होता कि इन्सानों की नस्ल कम होती जाती या बिल्कुल ही ख़त्म हो जाती क्योंकि ऐसे बहुत सारे लोग हैं जिन्हें बच्चों की कोई चाह नहीं होती और वह इस काम को पसंद नहीं करते।

ज़रा देखो तो इन में से हर काम के लिए बदन के अंदर कितने बड़े-बड़े फ़ाएदे रखे गए हैं और नेचुरल तौर पर बदन के

अंदर ही इन तीनों ज़रूरतों को उभारने वाले फ़ैक्टर भी रख दिए गए हैं।

यह भी जान लो कि आदमी के बदन में चार तरह की मशीनें भी लगा दी गई हैं:

(1) पहली *जाज़िबा* (खींचने वाली) जो खाने-पीने की चीज़ों को अंदर ले जाती है और मेदे तक पहुँचाती है।

(2) दूसरी *मासिका* (रोके रखने वाली) जो खाने-पीने की चीज़ों को मेदे में रोके रखती है ताकि वह चीज़ें बदन के काम आ सकें।

(3) तीसरी हाज़िमा (पचाने वाली) जो खाने को पेट के अंदर पचाने का काम करती है और खाने का निचोड़ निकाल कर फ़ाल्तू चीज़ों को अलग करके उस निचोड़ को पूरे बदन में पहुँचाती है।

(4) चौथी दाफ़िआ (दूर करने वाली) जो खाने की फ़ाल्तू और भारी चीज़ों को हाज़्मे की ज़रूरतें पूरी करने के बाद नीचे से बाहर निकाल देती है।

इन चारों ताक़तों और इनके कामों को पूरे ध्यान से देखो कि अल्लाह ने कितने सटीक सिस्टम के साथ इन्हें बनाया है जो हमारे बदन के लिए कितने बड़े-बड़े काम कर रही हैं!

अगर अपनी तरफ़ खींचने वाली ताक़त (जाज़िबा) न होती तो फिर आदमी खाने-पीने की चीज़ों की तरफ़ कैसे बढ़ पाता जबकि यह खाना ही तो है जो उसे ताक़त देता है।

अगर रोकने वाली ताक़त (मासिका) न होती तो फिर खाना पेट के अंदर कैसे टिकता कि मेदा उसे पचा सके।

अगर हज़्म करने वाली ताक़त न होती तो फिर खाना पचता कैसे कि काम की चीज़ें अलग होकर सारे बदन में घुल सकें और यह तो बदन की बहुत बड़ी ज़रूरत थी।

अगर दूर करने वाली ताक़त (दाफ़िआ) न होती तो फिर भारी और न पचने वाली चीज़ें बदन से बाहर कैसे निकलतीं?

क्या तुम नहीं देखते हो कि अल्लाह ने अपने करम, अपनी बारीक कारीगरी और अपने ज़बरदस्त सिस्टम से इन चारों

मशीनों को कैसे अपने-अपने कामों पर लगा दिया है ताकि हर पल बदन को ताक़त पहुँचाती रहें।

अब मैं इस बारे में तुम्हें एक मिसाल देता हूँः

हमारा बदन किसी बादशाह के महल की तरह है। बादशाह के लिए इस घर में नौकर-चाकर, ग़ुलाम, वज़ीर और हर तरह के काम करने वाले लोग भी रहते हैं। इन लोगों में से किसी का काम यह है कि वह ज़रूरत की चीज़ों का बन्दोबस्त करे (जाज़िबा), दूसरे का काम यह है कि वह आने वाले सामान को महल में संभाल कर रखे (मासिका), तीसरे का काम यह है कि जो चीज़ें महल में आई हैं उन्हें तैयार करके हर एक तक पहुँचाए (हाज़िमा) और चौथे का काम यह है कि वह महल की साफ़-सफ़ाई के लिए बेकार चीज़ों को बाहर निकालकर फेंक दे (दाफ़िआ)।

इन में से हर चीज़ को बनाने वाला अल्लाह है जो सारी दुनियाओं का मालिक है। हमारा बदन भी बिल्कुल उस बादशाह के महल की तरह है। हमारे बदन के हिस्से उस महल में काम करने वाले नौकर-चाकरों, ग़ुलामों और वज़ीर के जैसे हैं और यह चार ताक़तें वही सरदार हैं जिनके बारे में अभी हम बात कर चुके हैं। शायद इस बात को तुम ख़ुद भी समझ रहे होगे कि इन चारों ताक़तों के काम उन कामों से कहीं बढ़कर हैं जितने अभी मैंने बताए हैं।

जो कुछ मैंने कहा है वह उस जैसा बिल्कुल नहीं है जो हकीमों और डॉक्टरों ने अपनी किताबों में लिखा है। इन लोगों ने जो बातें कही हैं वह मेडिकल साइंस और बदन की सेहत से जुड़ी हुई हैं जबकि हम ने उन्हीं बातों को कुछ इस तरह से बताया है कि लोग दीन के बताए सही रास्ते से भटकने से बच जाएं और सच को पहचानने के रास्ते में आने वाली रूकावट दूर हो जाए।

इस बारे में मैंने तुम्हें अल्लाह की इस बारीक कारीगरी और उसके इस शानदार सिस्टम पर अच्छी-ख़ासी बातें बता दी हैं।

बदन की भीतरी ताक़तें

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अब ज़रा भीतरी ताक़तों यानी अक़्ल, सोच, ख़याल, याद्दाश्त (मेमोरी) और इस तरह की दूसरी ताक़तों पर भी ध्यान दो।

क्या तुम जानते हो कि इन सारी ताक़तों में से अगर सिर्फ़ याद रखने की ताक़त ही हमारे पास न होती या कम होती तो आदमी का क्या हाल बनता? अगर फ़ाएदा-नुक़सान, अच्छाई-बुराई, सुनी और देखी हुई चीज़ें आदमी को याद न रहतीं या आदमी यही भूल जाया करता कि किसने उसके साथ अच्छाई की है और किसने बुराई तो वह किसी भी बात से कभी भी कुछ न सीख पाता और उसके सारे तजुर्बे धरे के धरे रह जाते और ज़िन्दगी बेकार होकर रह जाती।

अगर उसे कुछ याद न रहता तो जिस रास्ते से वह कई बार गुज़रता उसे भी न पहचान पाता। अगर अपनी उम्र पढ़ने-लिखने या सीखने में लगा देता तब भी कुछ न सीख पाता। फिर न तो किसी दीन-धर्म को ही मान पाता और न ही अपने तजुर्बों से कोई फ़ाएदा उठा पाता। न ही पिछली बातों से कुछ सीख पाता। सच तो यह है कि फिर आदमी इन्सान कहलाने के लायक़ ही न बचता।

भूलने के फ़ाएदे

ज़रा देखो तो इन सारी ताक़तों में से एक-एक के अंदर ही कितनी-कितनी बातें छुपी हुई हैं!

जान लो कि भूलने की ताक़त तो याद रखने की ताक़त (Memory) से भी कहीं बड़ी ताक़त है। अगर यह भूलने की ताक़त न होती तो आदमी अपनी मुसीबतों या दुखों को कभी भी न भूल पाता। फिर आदमी को दुखों के बाद तसल्ली कैसे मिलती? उसके दुख कभी ख़त्म ही न होते। जब इन्सान अपने

किसी दुख को भूल ही न पाता तो फिर वह दुनिया की किसी भी नेमत से सुख न उठा पाता और उसका दिल हर पल दुखों में डूबा रहता। फिर उसे यह उम्मीद भी न होती कि जो बादशाह उसका दुश्मन है वह उसकी ग़लती को कभी अन्देखा भी करेगा या जो उस से जलता है कभी उसकी जलन भी कम होगी।

क्या तुम नहीं देखते कि यह दो ताक़तें जो एक-दूसरे की बिल्कुल उलट हैं कैसे अपने-अपने ख़ास कामों के साथ हमारे बदन के अंदर रख दी गई हैं ?

अब जब ऐसा है और अल्लाह की यह दो नेमतें जो एक-दूसरे की बिल्कुल उलट हैं और हर पल बदन के अंदर काम कर रही हैं और दोनों ही आदमी के लिए बहुत ज़रूरी हैं तो फिर क्यों कुछ नासमझ इन दोनों चीज़ों के बारे में कहते हैं कि इन दोनों के बनाने वाले दो अलग-अलग हैं। यह नासमझ लोग इस सच्चाई को समझते क्यों नहीं हैं ?

सारे जानदारों में हया (शर्म) बस इन्सान में होती है

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अब इस बात पर भी ध्यान दो कि अल्लाह ने सारे जानदारों में जो चीज़ बस इन्सानों को ही दी है वह क्या है। मैं हया (शर्म) के बारे में बात कर रहा हूँ।

अगर हया (शर्म) न होती तो इन्सान कभी भी किसी को अपना मेहमान न बनाता, न ही अपने वादों को पूरा करता और न ही लोगों के काम आता। इतना ही नहीं बल्कि न अच्छाईयों के पास जाता और न बुराईयों से बचता।

बहुत सारे ज़रूरी काम आदमी बस इसी हया की वजह से करता है। कुछ लोग ऐसे भी हैं कि अगर उनके अंदर हया न होती और उन्हें शर्म न आती होती तो कभी भी अपने माँ-बाप के साथ अच्छाई न करते, न ही अपने रिश्तेदारों के साथ सिल-ए-रहम (अच्छा बर्ताव) करते, न ही किसी की अमानत को

सही-सलामत वापस करते। फिर तो किसी भी गुनाह से न बचते।

क्या तुम देखते नहीं हो कि जिन-जिन चीज़ों की आदमी को ज़रूरत थी और जो उसकी भलाई में थीं वह सब की सब उसके अंदर रख दी गई हैं।

सिर्फ़ इन्सान बात कर सकता है

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अल्लाह ने आदमी को बोलने की ताक़त भी दी है। यही वह ताक़त है जिसके बल पर वह अपने दिल की बातें दूसरों से कह पाता है, अपनी सोच दूसरों के सामने रख पाता है और दूसरे लोगों की बातों को भी समझ पाता है।

अगर आदमी के पास बोलने की ताक़त न होती तो वह भी दूसरे जानवरों की तरह होकर रह जाता जो न तो दूसरों से अपने दिल की बात कह सकते हैं और न दूसरे के दिल में चल रही बातों को समझ पाते हैं।

लिखना भी बस इन्सान को ही आता है। इन्सान से हटकर कोई लिखना नहीं जानता। इसी लिखने की ताक़त की वजह से पिछले वाले लोगों के हालात आज वालों तक और आज वालों के हालात आने वाले लोगों तक पहुँच पाते हैं।

लिख पाने की वजह से ही तरह-तरह के इल्म, जानकारियाँ और तौर-तरीक़े किताबों की शक्ल में बाक़ी रह पाते हैं।

लिख पाने की वजह से ही हिसाब-किताब और आपसी लेन-देन का मामला हल हो पाता है।

अगर आदमी को लिखना न आता होता तो ज़मानों (समय) के बीच का रिश्ता टूट जाता। न तो कोई पिछली बातों को जान पाता और न ही पिछले हालात को समझ पाता।

फिर अगर कोई कहीं सफ़र पर जाता और रास्ते में ग़ायब हो जाता तो उसके वतन वालों को उसकी ख़बर ही न लग पाती।

इल्म मिट जाता।

कल्चर और रस्में बच ही न पातीं।

लोगों की रोज़ाना की ज़िन्दगी में बड़ी-बड़ी रूकावटें पैदा हो जातीं।

फिर न तो लोग अपने दीन को ही बचा पाते और न शरीअत (अल्लाह के बनाए क़ानून) पर चल पाते और न हदीसों के बारे में कुछ जान पाते क्योंकि फिर कोई इन सब चीज़ों को लिखने वाला ही न होता।

बोलना भी अल्लाह ने ही सिखाया है

हो सकता है कि तुम यह सोच रहे हो कि बोलने की ताक़त इन्सान के अंदर नेचुरल तौर पर नहीं रखी गई है बल्कि आदमी तो अपनी मेहनत व समझदारी से अपना रास्ता ख़ुद ढूँढ लेता है और बोलना भी इसी तरह की चीज़ है जो उसने धीरे-धीरे सीख ली है क्योंकि लोगों ने ही तो यह बोलियाँ और शब्द बनाए हैं जो वह बोला करते हैं। इसीलिए हर समाज में रहने वाले अपने-अपने हिसाब से अपनी बोली बना लेते हैं और उसी के सहारे आपस में बातें करते हैं। तभी तो कोई अरबी बोलता है तो कोई सुरयानी, कोई इब्री बोलता है तो कोई रोमी...। यह बोलियाँ दुनिया के हर समाज में बोली जाती हैं और हर समाज अपनी बोली को ख़ुद ही बनाता है।

इस सवाल का जवाब यह है:

ठीक है कि आदमी अपनी समझदारी से बोलना और लिखना सीख लेता है लेकिन समझने की बात यह है कि वह किस ताक़त के बल पर इन चीज़ों को सीख पाता है? क्या ऐसा नहीं है कि ख़ुद अल्लाह ने ही उसके अंदर लिखने और बोलने के औज़ार रख दिए हैं? बेशक! आदमी के पास बात करने के लिए ज़बान और सोचने-समझने के लिए दिमाग़ न होता तो वह कभी भी बात न कर पाता। उसे कभी भी बोलना न आता। अगर उसके

पास लिखने के लिए ठीक-ठाक हाथ और उंगलियाँ न होतीं तो फिर भला वह कैसे लिख पाता? अगर इस बात को ठीक से समझना चाहते हो तो फिर जानवरों को देखो जो न तो बोलना जानते हैं और न लिखना।

असल में यह अल्लाह ही की दी हुई नेमत है और यह उसी का करम है जो उसने अपने बन्दों पर किया है।

तरह-तरह के इल्म सीखना

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! यह भी देखो कि अल्लाह ने कौन-कौन सा इल्म (ज्ञान) इन्सान को सिखाया है और कौन-कौन सा नहीं सिखाया है? दीन और दुनिया का इल्म उसे ख़ूब दिया है। दीनी इल्म की जहाँ तक बात है तो उसने साफ़ निशानियों और खुले सुबूतों के साथ ख़ुद आदमी के अंदर ही यह इल्म रखकर उसे इस दुनिया में भेजा है जिससे आदमी अपने पालने वाले को आराम से पहचान सकता है। साथ ही लोगों के बीच इंसाफ़, अच्छाईयाँ, माँ-बाप के साथ भलाई, किसी की अमानत की वापसी, दूसरे दीनी भाईयों की मदद जैसे काम करने की समझ भी दे दी है।

इसी तरह दुनिया का इल्म भी उसे दिया है जैसे खेती करना, पेड़-पौधे लगाना, ज़मीनों को बसाना, भेड़-बकरियाँ और दूसरे जानवर पालना, ज़मीन के अंदर से पानी निकालना, तरह-तरह की बीमारियों के इलाज के लिए दवाईयाँ खोजना, ज़मीन के अंदर खदानों से खनिज पदार्थ निकालना जिन से ज़ेवर भी बनते हैं, कश्तियाँ चलाना, दरियाओं व समुन्द्रों के अंदर गहराई तक चले जाना और जंगली जानवरों, परिंदों व मछलियों का शिकार करना, तरह-तरह के हुनर, कारोबार के तरीक़े और इस जैसी दूसरी बहुत सारी चीज़ें...। बेशक! अगर हम दुनिया के इस तरह के दूसरे और बहुत सारे फ़ाएदे वाले कामों को गिनना चाहें तो गिन ही नहीं सकते और अगर इस बारे में खुल कर बात करना चाहें तो बात बहुत लम्बी हो जाएगी।

अल्लाह ने इन्सान को बस वही इल्म दिया है जो उसके दीन और दुनिया की भलाई में था। उसे ऐसे इल्म से दूर रखा है जो उसकी ताक़त ही में नहीं थे या जो उसकी शान के हिसाब से नहीं थे जैसे ग़ैब का इल्म, आने वाले कल की बातों की जानकारी, पिछली हो चुकी बातों की जानकारी, आसमानों के ऊपर या ज़मीन के नीचे की जानकारी, समुन्द्रों की गहराईयों के अंदर की जानकारी, दुनिया की दूसरी जगहों की जानकारी, लोगों के दिलों का हाल, माँओं के पेट में पल रहे बच्चों की जानकारी और इस जैसी दूसरी जानकारियाँ...। ऐसा हर इल्म आदमी से छुपा लिया गया है।

कुछ लोग इस तरह के इल्म को जानने का दावा तो ज़रूर करते हैं लेकिन उनका हर दावा उस वक़्त अपने आप हवा हो जाता है जब उनकी कही बातें और भविष्यवाणियाँ ख़ुद-बख़ुद ग़लत साबित हो जाती हैं।

इस तरह आदमी को हर वह इल्म सिखा दिया गया है जो उसके दीन और उसकी दुनिया की भलाई में था। इस से हटकर दूसरी हर चीज़ का इल्म उससे दूर रखा गया है ताकि वह अपने आप को ठीक से पहचान ले क्योंकि यह दोनों बातें यानी कुछ चीज़ों का जानना और कुछ चीज़ों का न जानना, दोनों ही उसकी भलाई में हैं।

आदमी से उसकी उम्र क्यों छुपाई गई है?

अब ऐ मुफ़ज़्ज़ल! ज़रा यह भी सोचो कि इन्सान से उसकी उम्र क्यों छुपाई गई है?

ऐसा इसलिए है क्योंकि अगर उसे पता चल जाता कि उसकी उम्र कम है तो उसे जीने में कोई मज़ा ही न आता क्योंकि वह अपनी छोटी उम्र के बारे में सोच-सोचकर ही घुलता रहता। ऐसा इन्सान बिल्कुल उस आदमी की तरह होता जिसकी दौलत धीरे-धीरे बर्बाद होती जा रही हो या बर्बादी के दहाने पर हो

और ग़रीबी व दौलत की कमी का एहसास उसे खाए जा रहा हो। यह बात भी समझ लो कि आदमी को अपनी उम्र के कम होने का दुख दौलत के बर्बाद होने या ख़ज़ाने के ख़त्म हो जाने के दुख से कहीं बढ़कर होता है क्योंकि अगर दौलत या ख़ज़ाना ख़त्म हो जाए तो उसका कोई न कोई इलाज ढूँढा जा सकता है जिससे आदमी को थोड़ा-बहुत सुकून भी मिल सकता है लेकिन जिस आदमी को पता हो कि उसकी उम्र कितनी है, चाहे उसकी उम्र लम्बी ही क्यों न हो तब भी उसे आने वाले कल के बारे में कोई उम्मीद नहीं होगी।

उधर अगर आदमी को अपनी लम्बी उम्र का भरोसा होता तो वह दुनिया भर की नेमतों में डूब जाता। वह हमेशा यह सोचता रहता कि अपनी उम्र के ख़त्म होने से पहले ही तौबा कर लेगा और इसलिए ख़ूब गुनाह करता। जबकि अल्लाह ऐसी किसी भी सोच से राज़ी नहीं है। उसे ऐसी कोई भी बात पसन्द नहीं है और इसीलिए वह ऐसे किसी भी आदमी की तौबा को क़ुबूल नहीं करेगा।

ज़रा सोचो कि अगर तुम्हारा कोई नौकर तुम्हें साल भर तो ख़ूब सताए और ग़ुस्सा दिलाए और आख़िर में एक दिन या एक महीने के लिए तुम्हें ख़ुश कर दे तो क्या तुम ऐसे नौकर से ख़ुश रहोगे? तुम ऐसे नौकर से बिल्कुल ख़ुश नहीं होगे। तुम उससे तभी ख़ुश होगे जब वह हर वक़्त और हर काम में तुम्हारी बात माने और तुम्हारा हुक्म माने।

अब अगर तुम कहो कि ऐसा भी तो होता है कि एक आदमी अपनी पूरी ज़िन्दगी गुनाहों में बिता देता है, आख़िर में तौबा कर लेता है और उसकी तौबा क़ुबूल भी हो जाती है तो इस बात का जवाब यह है कि ऐसा बस तभी होता है जब वह अपने दिल के हाथों मजबूर होकर गुनाह कर बैठा हो, न कि उसने सोच ही यह बना ली हो कि ख़ूब गुनाह करो, जब मरने वाले होंगे तब तौबा कर लेंगे। अल्लाह ऐसे लोगों की तौबा बिल्कुल क़ुबूल नहीं करता है जो यह सोचकर गुनाह करते रहते हैं कि आख़िर में तौबा कर लेंगे। असल में ऐसा आदमी अल्लाह को धोखा दे रहा होता है।

आमतौर पर इस तरह के लोग मरते वक़्त अपने इस वादे को पूरा भी नहीं कर पाते क्योंकि दुनिया की अय्याशियों व रंग-रलियों से मुँह मोड़ना और तौबा करने की सख़्ती को झेलना आसान काम नहीं है। ख़ासकर बुढ़ापे में बदन के कमज़ोर पड़ने के बाद यह काम बहुत ही कठिन हो जाता है। फिर यह भी कौन जानता है कि तौबा को कल पर टालते-टालते वह आख़िर में तौबा कर भी पाएगा या नहीं? क्या पता बिना तौबा किए ही उसे मौत आ जाए। इसकी मिसाल ऐसे ही है जैसे कोई किसी से उधार ले और जब वापस करने की बात आए तो आजकल-आजकल करता रहे और उसका सारा पैसा ही ख़त्म हो जाए कि वह फिर अपना उधार भी न चुका पाए।

इसलिए सबसे अच्छा रास्ता यही है कि आदमी को पता ही न हो कि उसकी उम्र कितनी है ताकि हर पल उसे अपनी मौत का धड़का लगा रहे जिससे गुनाहों से भी दूर रहे और अच्छे काम भी करता रहे।

हो सकता है कि तुम कहो कि अभी भी तो ऐसा ही है कि किसी को भी अपनी मौत के बारे में कुछ भी नहीं पता कि कब आएगी लेकिन इसके बाद भी लोग गुनाहों और बुरे कामों में गले-गले डूबे हुए हैं?

इसका जवाब यह है कि इस में भी अल्लाह की तरफ़ से कोई कमी नहीं है बल्कि इसकी वजह भी वही है जिस पर अभी हम बात कर चुके हैं। अब अगर इसके बाद भी आदमी गुनाह पर गुनाह करता जाता है और रंग-रलियों व बुरे कामों में डूबा रहता है तो ऐसा बस इसलिए है क्योंकि गुनाह पर गुनाह किए जाने से उसका दिल पत्थर का हो जाता है। जैसे कोई डॉक्टर अगर किसी बीमार को कोई दवाई लिखकर दे जो बीमार को ठीक कर दे लेकिन वह बीमार दवाई ही न खाए और डॉक्टर के कहे पर न चले तो दुनिया की कोई भी दवाई उसको ठीक नहीं कर सकती और यह बुरा काम कहीं से कहीं तक डॉक्टर के नुक़सान में नहीं है और न ही इसमें डॉक्टर की कोई कमी है बल्कि यह तो ख़ुद

उसी मरीज़ के घाटे में हैं क्योंकि उसने डॉक्टर की बात ही नहीं मानी।

दूसरी बात यह है कि अगर आदमी को अपने ज़िन्दा रहने का भरोसा होगा तो वह पहले से बढ़कर बुरे काम और गुनाह करेगा बल्कि फिर तो गुनाहों में ही डूब जाएगा। इसलिए ज़िन्दा रहने के भरोसे से कहीं बढ़कर इस बात में भलाई है कि उसे हर पल अपनी मौत का धड़का लगा रहे। अच्छा! हम ने माना कि कुछ लोग मौत को भूल जाते हैं और मौत से कोई सीख नहीं लेते मगर कुछ ऐसे लोग भी तो हैं जिन्हें हर पल अपनी मौत का ध्यान रहता है और इसी वजह से वह गुनाहों से दूर रहते हैं और अच्छे-अच्छे काम करते हैं। यह लोग तो वह हैं जो अपने ख़ज़ानों, महंगे-महंगे जानवरों और अपने माल-दौलत को फ़क़ीरों व ग़रीबों में बांट देते हैं। इसलिए यह बात अल्लाह के इंसाफ़ से टकराती थी कि अपना सब कुछ दूसरों को दे देने वालों को भी वह पहले वाले लोगों की वजह से अच्छा बदला न दे।

ख़्वाबों के सच्चे और झूठे होने की वजह

अब ऐ मुफ़ज़्ज़ल! ज़रा सच्चे और झूठे ख़्वाबों के बारे में भी सोचो। अगर सारे ख़्वाब सच्चे हुआ करते तो सब लोग अल्लाह के भेजे हुए नबी व रसूल हुआ करते (क्योंकि फिर सभी लोगों को पर्दे के पीछे की और आने वाले कल की बातें पता होतीं)। अगर सारे ख़्वाब ग़लत और झूठे हुआ करते तो फिर यह एक बेकार सी चीज़ होती जिसका कोई फ़ाएदा न होता। इसीलिए कुछ ख़्वाब सच्चे होते हैं ताकि लोग उन से फ़ाएदा उठा सकें और उनके सहारे अच्छे रास्ते पर आकर बुराई से बच सकें। कुछ ख़्वाब झूठे भी होते हैं ताकि लोग आँख बंद करके अपने सारे ख़्वाबों को सच्चा न मानने लगें।

हर चीज़ इन्सान के लिए बनाई गई है

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अब उन चीज़ों के बारे में भी सोचो जो इस दुनिया में इन्सान की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए बनाई गई हैं जैसे मिट्टी घर बनाने के लिए, लौहा इंडस्ट्री के लिए, लकड़ी कश्तियाँ और दूसरी चीज़ें बनाने के लिए, पत्थर चक्की और दूसरी चीज़ें बनाने के लिए, ताँबा बर्तनों के लिए, सोना-चाँदी लेन-देन और दौलत इकट्ठी करने के लिए, अनाज खाने के लिए, फल मज़े के लिए, गोश्त खाने के लिए, ख़ुश्बू सूँघने के लिए, दवाईयाँ इलाज के लिए, जानवर सामान ढोने के लिए, ईंधन जलाने के लिए, राख मकान के गारे के लिए और रेत ज़मीन पर फ़र्श बनाने के लिए।

आदमी के अंदर तो इतनी ताक़त भी नहीं है कि वह इन सारी चीज़ों को गिन भी सके।

जब कोई आदमी किसी घर में जाता है और वहाँ ज़रूरत का हर सामान रखा हुआ देखता है तो क्या वह यह समझता है कि यह सब अपने आप और बिना किसी करने वाले के हो गया है? फिर कोई यह कैसे कह सकता है कि यह लम्बी-चौड़ी दुनिया और इस में पाई जाने वाली चीज़ें अपने आप बन गई हैं?

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! उन चीज़ों से सीख लो जो इन्सानों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए इतने अच्छे सिस्टम के साथ बनाई गई हैं। इन्सान के लिए अनाज पैदा किया गया है ताकि वह अपनी भूख मिटा सके लेकिन उसे पीसने, गूँधने और रोटी बनाने का काम ख़ुद इन्सान को ही करना है। रूई बनाई गई है ताकि वह अपने लिए कपड़े तैयार कर सके मगर उसे धुनकने, उससे धागा बनाने और बुनने का काम इन्सान को ही करना पड़ता है। उसके लिए पेड़ बनाए गए हैं लेकिन यह पेड़ तभी उसके काम आएंगे जब वह इन्हें ज़मीन में लगाए, पानी दे, इनकी सिंचाई करे और देख-भाल करे। जड़ी-बूटियाँ उसके इलाज और दवाईयों के लिए बनाई गई हैं लेकिन शर्त यह है कि वह उन्हें ज़मीन के अंदर से ढूँढने और दूसरी चीज़ों के साथ मिलाने-जुलाने का काम करे

ताकि वह इन्हें खाकर अपना इलाज कर सके। इसी तरह दूसरी बहुत सारी चीज़ें भी हैं।

देखो! इन्सान की सारी ज़रूरतें किस तरह से पूरी कर दी गई हैं लेकिन इन सारी चीज़ों से फ़ाएदा उठाने के लिए इन्सान को मेहनत और कोशिश करना पड़ती है क्योंकि अगर यह चीज़ें उसे बिना हाथ-पैर हिलाए ही मिल जाया करतीं तो वह बड़ा घमंडी हो जाता और बस अपनी मनमानी किया करता जिसका एक नुक़सान यह भी हो सकता था कि वह कोई ऐसा काम भी कर बैठता जो उसकी जान ही ले लेता। अगर आदमी की ज़रूरत की हर चीज़ पूरी तरह से पहले से तैयार हुआ करती तो उसे इन चीज़ों में कोई मज़ा भी न आता। तुम देखते ही हो कि अगर कोई आदमी किसी के यहाँ कुछ दिनों के लिए मेहमान बन जाए और वहाँ उसकी ख़ूब ख़ातिर की जाए, ख़ूब खिलाया- पिलाया जाए और उसकी हर ज़रूरत का ध्यान रखा जाए तो वह जल्दी ही अपनी बेकारी की वजह से ऊब जाता है और फ़ौरन वहाँ से भागना चाहता है ताकि किसी काम में अपने आप को लगा ले। अब अगर आदमी को अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए अपनी ज़िन्दगी में कुछ भी न करना पड़ता तो वह अपनी ज़िन्दगी से कितना ऊब जाता। इसलिए उसकी भलाई इसी में थी कि अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए वह भी अपने हाथ-पैर मारे ताकि बेकार रहने की वजह से वह इस दुनिया से ऊब न जाए। साथ ही ऐसे कामों से भी दूर रहे जो उसके बस में नहीं है या जिन कामों में उसकी कोई भलाई नहीं है।

रोटी और पानी ही में ज़िन्दगी है

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! यह भी जान लो कि लोगों की ज़िन्दगी रोटी और पानी पर टिकी है। इन दोनों चीज़ों के अंदर छुपी हुई बातों पर भी ध्यान दो। रोटी से ज़्यादा आदमी को पानी की ज़रूरत होती है क्योंकि आदमी जितना अपनी भूख को झेल सकता है

उतना अपनी प्यास को नहीं झेल सकता। ऐसा इसलिए है क्योंकि आदमी के बदन को रोटी से बढ़कर पानी चाहिए। आदमी को अपनी प्यास बुझाने के लिए, नहाने और कपड़े व बर्तन धोने के लिए, अपने जानवरों को पानी पिलाने के लिए और अपने खेतों को पानी देने के लिए पानी की बहुत ज़्यादा ज़रूरत होती है। आदमी को पानी बहुत सारा चाहिए था इसलिए उसे पानी हर जगह आसानी से मिल जाता है ताकि न पानी को ख़रीदना पड़े और न उसे पाने के लिए मेहनत करना पड़े या कोई तकलीफ़ उठाना पड़े लेकिन रोटी का मामला ऐसा नहीं है बल्कि रोटी उसे मेहनत करके, मुसीबतें झेलकर और कोशिशें करके ही मिल पाती है ताकि आदमी हलाल रोज़ी कमाने में लगा रहे और बेकारी की वजह से बुरे कामों व बुराईयों के चक्कर में न पड़े।

क्या तुम नहीं देखते हो कि जिस बच्चे में अभी पूरी समझ नहीं होती है उसे उस्ताद के पास भेज दिया जाता है ताकि वह बहुत ज़्यादा खेल-कूद या ऐसे कामों से दूर रहे जो उसके लिए या उसके घर वालों के लिए दिक़्क़तें खड़ी करने वाले हों? इन्सान भी ऐसे ही है। अगर उसे कोई काम न हो तो वह बेकारी व अय्याशी की वजह से अपने और अपने घर वालों के लिए घातक बन जाता है। इस बात को समझने के लिए उन लोगों को देखो जो दौलत, आराम और तरह-तरह की नेमतों में डूबकर ज़िन्दगी बिताते हैं। ध्यान से देखो कि ऐसी ज़िन्दगी बिताने से इन लोगों का क्या हाल होता है।

लोगों के चेहरे अलग-अलग क्यों होते हैं?

इस बात से भी कुछ सीखो कि लोगों के चेहरे एक-जैसे नहीं होते लेकिन जानवर, परिंदे और दूसरे जानदार एक जैसे होते हैं। अगर तुम हिरनों के किसी झुण्ड को देखो तो कहोगे कि सारे हिरन बिल्कुल एक ही जैसे हैं और उन्हें अलग-अलग करके पहचानना बड़ा कठिन काम है लेकिन इन्सानों के चेहरे अलग-

अलग होते हैं। इतने अलग-अलग कि बड़ी मुश्किल से ही कहीं दो लोग एक-जैसे मिल पाते हैं। इसकी वजह यह है कि इन्सानों के बीच ऐसे मामले भी पाए जाते हैं जिनकी वजह से उनका एक-दूसरे से अलग-अलग होना बहुत ज़रूरी था लेकिन जानवरों में ऐसी कोई बात नहीं होती कि उन्हें अलग-अलग करके पहचानने की ज़रूरत हो। यह चीज़ जानवरों और परिंदों के लिए नुक़सान भरी नहीं थी लेकिन इन्सानों को इससे नुक़सान था। अगर दो इन्सान दिखने-दिखाने और शक्ल व सूरत में बिल्कुल एक जैसे हों तो उनके साथ कोई मामला या कोई काम करना बड़ा कठिन हो जाता है। यहाँ तक कि यह भी हो सकता है कि एक की मेहनत का फल दूसरे को मिल जाए या इसके उलट एक की करनी की सज़ा दूसरे को मिल जाए। ऐसा तब भी होता है जब दो चीज़ें एक जैसी हो जाएं, इन्सानों की तो बात ही छोड़ो।

कौन है जिसने इन सारी बारीक-बारीक बातों का ध्यान रखते हुए अपने बन्दों पर करम किया है जबकि यह सारी बातें तो किसी के दिमाग़ में आ भी नहीं पाती हैं। ऐसा बस वही कर सकता है जिसका करम हर चीज़ पर छाया हुआ है।

अगर कोई तुम से कहे कि यह जो दीवार पर किसी आदमी की पिक्चर बनी हुई है यह अपने आप बन गई है तो क्या तुम इस बात को मान लोगे? कभी नहीं! तुम इस बात को मान ही नहीं सकते बल्कि तुम यह बात सुनकर हँसोगे। कितनी अजीब सी बात है कि दीवार पर बनी एक बेजान पिक्चर के बारे में तो नहीं मान सकते कि उसे किसी ने नहीं बनाया है, फिर इस समझदार और बात करते-बोलते हुए आदमी के बारे में कैसे कह सकते हो कि यह अपने आप बन गया है?

जानवरों के बदन का बढ़ना और फिर ठहर जाना

ज़रा सोचो कि जानवर हर दम खाते रहते हैं लेकिन उनका बदन एक वक़्त के बाद बढ़ना बंद कर देता है। उनका बदन हर

पल बढ़ता नहीं रहता बल्कि उनके बदन के बढ़ने की एक लिमिट होती है जिसके बाद उनका बदन बढ़ना बंद कर देता है। इसकी वजह यह है कि उनके बदन के लिए ज़रूरी है कि छोटा या बड़ा होने के साथ-साथ उनका बदन एक ख़ास ढंग का होना चाहिए। इसलिए बदन बढ़ना शुरू होता है और एक वक़्त के बाद फिर नहीं बढ़ता जबकि वह अपनी आख़िर साँस तक खाते-पीते रहते हैं। अगर उनका बदन यूँ ही बढ़ता रहता तो एक वक़्त वह भी आता कि उनका बदन बहुत बड़ा हो जाता जिसके बाद उसे संभालना भी दूभर हो जाता।

आदमी थक क्यों जाता है?

जानदारों में बस आदमी ही क्यों रास्ता चलने और काम करने से थक जाता है? आदमी ही क्यों कठिन और नाज़ुक कामों से भागता है? ऐसा इसीलिए तो है ताकि वह अपनी ज़रूरतों को पूरा करना सीख ले जैसे अपने लिए कपड़े तैयार करना, घर बनाना, कफ़न वग़ैर देना। अगर आदमी को कोई दिक़्क़त या कठिनाई ही न होती तो फिर वह बुराईयों और गुनाहों से कैसे बच पाता। फिर तो वह अल्लाह के सामने भी अपनी अकड़ दिखाता और दूसरे लोगों के साथ भी कोई हमदर्दी न करता। क्या तुम नहीं देखते कि जब भी आदमी किसी बीमारी या मुसीबत में घिर जाता है तो फ़ौरन अपना सर झुकाकर अल्लाह की तरफ़ लौट आता है, उससे अपने लिए सेहत व सलामती की दुआ मांगता है और फिर सदक़ा निकालने के लिए अपना हाथ भी खोल देता है। अगर चोट लगने या मार खाने से उसे तकलीफ़ न होती तो फिर बादशाह बुरे लोगों को सज़ा कैसे दिया करते? कैसे उन्हें टार्चर करते और सीधे रास्ते पर लाते? नौकर-चाकर और ग़ुलाम क्यों अपने मालिकों की बात मानते?

क्या यह सारी बातें और सुबूत अल्लाह को न मानने वाले लोगों के लिए काफ़ी नहीं हैं? क्या यह लोग बीमारियों और तकलीफ़ों के अंदर छुपी गहरी बातों को भी झुठला सकते हैं?

नर और मादा क्यों बनाए गए हैं?

अगर जानदारों में बस मादा या बस नर ही हुआ करते तो क्या नस्लें ख़त्म न हो जातीं? इसी लिए अल्लाह ने यह सिस्टम बनाया है कि कुछ नर हों और कुछ मादा ताकि इसी तरह नस्लें आगे बढ़ती रहें।

मर्दों के चेहरे पर दाढ़ी क्यों निकलती है?

क्या तुम ने कभी सोचा है कि जब लड़का-लड़की बालिग़ (व्यसक) हो जाते हैं तो उन दोनों की नाफ़ के नीचे तो बाल निकल आते हैं लेकिन चेहरे पर बस लड़कों के ही बाल (दाढ़ी) निकलते हैं जबकि लड़कियों के चेहरे पहले की तरह यूँ ही साफ़ रहते हैं?

ऐसा इसलिए है क्योंकि अल्लाह ने मर्द को घर चलाने और औरत की देख-भाल करने वाला बनाया है। औरत से उसकी बात मानने के लिए कहा है और उसे उसका जोड़ा भी बनाया है। इसीलिए उसने मर्द को दाढ़ी दी है ताकि उसकी इज़्ज़त, धाक और डर बना रहे लेकिन औरत को दाढ़ी नहीं दी ताकि उसकी ख़ूबसूरती, नज़ाकत और हुस्न बाक़ी रहे। इस में इन दोनों की ही भलाई थी क्योंकि इसी शक्ल में दोनों को एक-दूसरे से ख़ुशी मिल सकती थी और हमबिस्तर होने (समागम करने) का मज़ा भी मिल सकता था।

जानकार और हकीम अल्लाह ने हर चीज़ को ऐसा बनाया है कि कहीं भी किसी भी चीज़ में कोई कमी नहीं दिखाई पड़ती।

तौहीद

पर दूसरा लेक्चर

(जानवरों, परिंदों और कीड़े-मकौड़ों के बारे में)

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैंः सारी तारीफ़ें उस सच्चे ख़ुदा के लिए हैं जो एक वक़्त के बाद दूसरा वक़्त, एक सदी के बाद दूसरी सदी और एक हालात के बाद दूसरे हालात बदलता रहता है ताकि उसके इंसाफ़ की वजह से बुरे लोगों को उनकी बुराई की सज़ा और अच्छे लोगों को उनके अच्छे कामों का बदला मिल सके। उसके सारे नाम पाक हैं और उसकी नेमतें चारों ओर फैली हुई हैं। वह किसी पर भी ज़ुल्म नहीं करता बल्कि यह तो लोग हैं जो ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं जैसा की उसने ख़ुद भी फ़रमाया है, ''जो ज़रा सी भी अच्छाई करेगा वह उसे देख लेगा और जो ज़रा सी भी बुराई करेगा वह भी उसे देख लेगा।[1]

इस सच्चाई को क़ुरआन की बहुत सी आयतों में बताया गया है, उसी किताब में जिसमें हर चीज़ के बारे में बता दिया गया है, उसी किताब में जिसमें कोई ग़लत बात नहीं मिल सकती। यह वह किताब है जो अल्लाह ने भेजी है।

---

[1] सूरए ज़ल्ज़ला/7

अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मोहम्मद[स०] ने भी फ़रमाया है, "इस दुनिया में जो कुछ तुम ने किया है वही सब क़यामत में तुम्हारी तरफ़ पलटाया जाएगा।"

इसके बाद इमाम कुछ देर सर झुकाए नीचे देखते रहे और फिर सर उठाकर बोलेः

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अल्लाह को न मानने वाले सब लोग बड़े अचम्भे में हैं और परेशान हैं। यह लोग अपनी अकड़ और नशे में चूर शैतानों का हुक्म मानने में लगे हुए हैं। इनके पास आँखें तो हैं मगर सच यह है कि यह लोग अंधे हैं। बातें तो करते हैं मगर सच्चाई यह है कि यह लोग गूँगे हैं। दूसरों की बातें सुनते भी हैं मगर फिर भी यह बहरे हैं और कुछ भी नहीं सुनते। यह नीच हैं और थोड़ी चीज़ पर ही राज़ी व ख़ुश हो जाते हैं। यह लोग समझते हैं कि बस यही सीधे रास्ते पर हैं। जबकि यह समझदारों के रास्ते से बहुत दूर हैं। यह तो बुरे और नीच लोगों के रास्ते पर चलने वाले हैं। यह लोग समझते हैं जैसे इन्हें मौत कभी आएगी ही नहीं और इन्हें इनके किए की सज़ा कभी मिलेगी ही नहीं।

अफ़सोस होता है इन लोगों पर! इनका हाल कितना बुरा होगा और इनके ऊपर कितना कड़ा अज़ाब (प्रकोप) होगा!

उस दिन कोई मदद करने वाला किसी की मदद नहीं करेगा, अगर कोई काम आएगा तो बस अल्लाह। उससे हटकर क़यामत में कोई काम आने वाला नहीं है।

फिर फ़रमाया कि अब मैं अपनी बात जानवरों से शुरू कर रहा हूँ ताकि तुम्हें कुछ उनके बारे में भी बता सकूँ।

जानवरों के बदन

जानवरों के बदन और उनके बदन की शक्लों को देखो। उनका बदन पत्थर की तरह नहीं होता क्योंकि अगर ऐसा होता तो उन्हें कुछ करते और हिलते-डुलते हुए बड़ी दिक़्क़त हुआ

करती। इसके उलट बिल्कुल मुलायम या नर्म भी नहीं है कि अपने पैरों पर खड़े ही न हो पाएं बल्कि उनका बदन ऊपर से तो नर्म गोश्त से बना होता है मगर उनके बदन के अंदर मज़बूत हड्डियाँ भी होती हैं। फिर उन हड्डियों को मोटी-बारीक रगों और चर्बी से जोड़ दिया गया है और वह भी बिल्कुल एक-दूसरे से चिपका कर। इतना ही नहीं बल्कि बाहर से मज़बूत खाल भी चढ़ा दी गई है ताकि वह पूरे बदन को संभाल कर रख सके।

जानवरों का बदन उन मूर्तियों की तरह होता है जो लकड़ियों पर सुतलियों से कपड़ा बांधकर बनाई जाती हैं। फिर उस पर गोंद मल दिया जाता है। मज़बूत लकड़ियाँ तो जानवरों के बदन की हड्डियों की तरह, मुलायम कपड़ा गोश्त की तरह और सुतलियाँ रगों की तरह हैं और ऊपर चढ़ाया गया सोने का पानी खाल की जगह है। अगर कोई जानवर ख़ुद से ही बन जाया करता तो इस मूर्ति को भी बिना किसी बनाने वाले के अपने आप ही बन जाना चाहिए था लेकिन अगर कोई यह नहीं मान सकता कि यह बेजान मूर्ति बिना किसी बनाने वाले के बन सकती है तो फिर यह ग़लत बात कैसे मान सकता है कि सूझ-बूझ और समझ रखने वाले जानवर अपने आप बन गए हैं।

जानवर कैसे पैदा हुए हैं?

जानवरों के बदन भी आदमी के बदन की तरह गोश्त, हड्डियों और रगों से मिलकर बने होते हैं। इन्हें भी इन्सान की तरह ही आँख और कान दिए गए हैं ताकि यह सब इन्सान के काम आ सकें। अगर यह जानवर अंधे-बहरे हुआ करते तो आदमी इन से कोई काम ही न ले पाता और न ही इन से अपनी कोई ज़रूरत पूरी करवा पाता लेकिन जानवरों को दिमाग़ और समझदारी नहीं दी गई है ताकि जब आदमी इन से कोई कठिन काम कराए तो यह हाथ झाड़कर भाग न खड़े हों और काम करने से मना न कर दें।

अब अगर कोई कहे कि नौकर-चाकर भी तो अपने मालिकों के सामने सर झुका कर कठिन से कठिन काम करते हैं और उनकी हर बात आँख बंद करके मानते हैं जबकि उनके पास समझ भी होती है और दिमाग़ भी तो इस बात का जवाब यह है कि दुनिया में ऐसे लोग बहुत कम हैं। आमतौर पर लोग जानवरों की तरह भारी-भारी बोझ उठाने या चक्की चलाने जैसे काम करने पर तैयार नहीं होते हैं।

साथ ही अगर आदमी भी जानवरों की तरह यह सारे काम करने लगें तो अपने बहुत सारे दूसरे काम नहीं कर पाएंगे क्योंकि एक ऊँट या किसी भी दूसरे जानवर के बराबर काम करने के लिए बहुत सारे लोगों को लगना पड़ेगा। यह काम जहाँ कठिन और थका देने वाला है वहीं इसका दूसरा नुक़सान यह भी है कि अगर आदमी यह सारे काम करेगा तो फिर बहुत से हुनर वाले काम नहीं कर पाएगा और अल्लाह की इस नेमत से दूर हो जाएगा।

तीन तरह के जानदार

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! तीन तरह के जानदारों यानी इन्सानों, जानवरों और परिंदों को ध्यान से देखो। इन में से हर एक इस तरह से बनाया गया है कि उसकी यही बनावट उसके लिए सब से अच्छी थी। आदमी को अक़्ल व समझ चाहिए थी क्योंकि उसे राजगीरी, कारोबार, सुनारी, किताबत (Caligraphy) और इस जैसे दूसरे बहुत सारे काम करना थे। इन्सान को बड़े-बड़े हाथ और मज़बूत व सुडोल उंगलियाँ भी दी गई हैं ताकि वह चीज़ों को पकड़ कर उठा सके और हुनर वाले काम कर सके।

गोश्त खाने वाले जानवर

अल्लाह ने सिस्टम कुछ ऐसा बनाया है कि गोश्त खाने वाले जानवरों का पेट दूसरे जानवरों का शिकार करके भरे। इसलिए इन जानवरों को हाथ देने के साथ-साथ तेज़, मज़बूत और सुडोल नाख़ून व पंजे भी दिए हैं ताकि वह अपने लिए आसानी से शिकार कर सकें लेकिन इन जानवरों के यह हाथ और पंजे इन्सानों के किसी काम के नहीं थे इसलिए उन्हें नहीं दिए।

इसी तरह घास खाने वाले जानवरों को न तो कोई हुनर वाला काम करना था और न ही शिकार। इसलिए अल्लाह ने उन में से कुछ को खुर या टापें दी हैं ताकि जंगलों में आसानी से चर सकें और ऊबड़-खाबड़ ज़मीनों से उन्हें कोई तकलीफ़ न हो। इन जानवरों में से कुछ को ऐसे खुर दिए हैं जिनके अंदर आदमी के पैरों की तरह एक गड्ढा सा होता है जो ज़मीन पर अच्छी तरह से बैठ जाता है जिससे सवारी उठाते या बोझ ढोते वक़्त उन्हें दिक़्क़त नहीं होती।

इस बात पर भी ध्यान दो कि गोश्त खाने वाले जानवरों के दाँत तेज़, हाथ व पंजे मज़बूत और मुँह बड़ा सा होता है।

अल्लाह की मर्ज़ी यह थी कि इन जानवरों की ख़ुराक गोश्त हो और इसीलिए इन्हें ऐसा बनाया है कि इनका बदन इस काम के लिए बिल्कुल ठीक है। अल्लाह ने इन जानवरों को शिकार के औज़ार और हथियार देकर भेजा है ताकि इन्हें शिकार करने में आसानी हो। शिकार करने वाले परिंदों और दरिंदों को भी चोंच और शिकार में काम आने वाले पंजे देकर भेजा है ताकि उन्हें शिकार करने में आसानी हो। इसके मुक़ाबले में घास खाने वाले जानवरों को ऐसे पंजे नहीं दिए क्योंकि न तो उन्हें शिकार करना था और न ही गोश्त खाना था। अगर फाड़ खाने वाले दरिंदों के खुर भी होते तो इससे उन्हें शिकार करने में बड़ी दिक़्क़त होती और उनका जीना दूभर हो जाता।

क्या तुम नहीं देखते कि इन दोनों तरह के जानवरों में से हर एक को वही चीज़ दी गई है जो उसके लिए ठीक भी थी और ज़रूरी भी।

जानवरों के बच्चे पैदा होते ही खड़े कैसे हो जाते हैं?

अब जानवरों पर नज़र डालो कि यह पैदा होते ही अपने पैरों पर कैसे खड़े हो जाते हैं और फ़ौरन ही अपनी माँ को ढूँढकर उसके पास चले जाते हैं। जानवरों के बच्चे आदमियों के बच्चों की तरह नहीं होते कि जिन्हें पालने-पोसने, संभालने, उठाने-बिठाने और देख-रेख की ज़रूरत होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जानवरों के बच्चों की माएं इन्सानों की माओं के जैसी नहीं होती जैसे बहलाना, गोद में लेना, संभालना, लाड-प्यार करना और पालना-पोसना वग़ैरा जानवरों की माओं को नहीं आता। जानवरों के पास यह सारे काम करने के लिए आदमी के जैसे हाथ और उंगलियाँ भी नहीं होती। इसी वजह से उनके बच्चों को इतनी ताक़त देकर इस दुनिया में भेजा गया है कि जैसे ही पैदा हों वैसे ही अपनी माँ के सहारे के बिना अपने पैरों पर खड़े हो जाएं।

इसी तरह तुम ने यह भी देखा होगा कि बहुत सारे परिंदे जैसे मुर्ग़ी, तीतर, बटेर और बत्तख़ वग़ैरा जैसे ही अंडे से बाहर निकलते हैं वैसे ही दाना चुगने लगते हैं लेकिन उन परिंदों के बच्चे जो कमज़ोर पैदा होते हैं जैसे पालतू कबूतर, जंगली कबूतर या दूसरे लाल रंग के परिंदों के बच्चे, उनकी माँओं के अंदर मेहरबान अल्लाह ने इतनी मोहब्बत भर दी है कि वह दानों को चुगकर अपने पोटे में इकट्ठा कर लेती हैं और धीरे-धीरे अपने बच्चों के मुँह में भरती रहती हैं और ऐसा तब तक करती रहती हैं जब तक कि उनके बच्चे बड़े न हो जाएं। इसी लिए तो मुर्ग़ी के मुक़ाबले में कबूतर के बच्चे कम होते हैं ताकि माँ आराम से अपने बच्चों की देख-भाल कर सके और वह मरने न पाएं।

इस तरह हिकमत वाले और हर चीज़ के बारे में जानने वाले अल्लाह ने इन दोनों तरह के परिंदों को ऐसा बनाया है कि यह दोनों ही आराम से रह सकते हैं।

जानवरों के पैरों की बनावट

अब ज़रा जानवरों के पैरों की बनावट को भी देखो कि कैसे जोड़ा-जोड़ा बनाया गया है ताकि वह आसानी से चल सकें। अगर एक ही पैर होता तो वह रास्ता कैसे चलते क्योंकि रास्ता चलते हुए हर कोई तभी अपना एक पैर आगे बढ़ने के लिए उठा सकता है जब वह अपने दूसरे पैरों पर टिका हो। जिन जानदारों के दो पैर होते हैं जैसे आदमी तो वह एक पैर ज़मीन से उठाता है और दूसरा पैर सहारे के लिए ज़मीन पर टिकाए रहता है। जिन जानवरों के चार पैर होते हैं वह अपने दो पैर उठा लेते हैं और दो पैरों से ज़मीन पर सहारा लिए रहते हैं लेकिन यह जानवर जब अपने दो पैर उठाते हैं तो उन दोनों पैरों में से एक पैर एक साइड का होता है और दूसरा पैर दूसरी साइड का, एक पीछे का और एक आगे का। ऐसा नहीं होता कि वह अपने आगे के दोनों पैर उठा ले और पिछले दोनों पैरों से सहारा लिए रहें क्योंकि अगर जानवर ऐसा करेगा तो ज़मीन पर टिक ही नहीं पाएगा जैसे अगर किसी कुर्सी या तख़्त के दो पायों को उठा लिया जाए तो वह ज़मीन पर सीधा टिक ही नहीं सकता। इस तरह जानवर आगे के दोनों हाथों में से सीधा हाथ और पिछले दोनों पैरों में से उल्टा पैर उठा लेता है। फिर उल्टा हाथ और सीधा पैर और इसी तरह आगे बढ़ता रहता है जिससे ज़मीन के ऊपर उसका बैलेंस भी बना रहता है और वह ज़मीन पर गिरने से भी बच जाता है।

जानवर इन्सान का हुक्म क्यों मानते हैं?

तुम ने ख़च्चर को देखा होगा कि वह कैसे कोल्हू चलाने में लगा रहता है और सामान उठाने में आँख बंद करके आदमी का कहा मानता है जबकि घोड़ा ऐसे कठिन काम नहीं करता और अपनी ज़िन्दगी मज़े से बिताता है। इसी तरह ऊँट भी है कि उसमें इतनी ताक़त होती है कि कई मज़बूत और जानदार आदमी भी मिलकर उसके बराबर काम नहीं कर सकते लेकिन यही ऊँट एक छोटे से बच्चे की तरह आदमी का कहा मानता है। बैल के अंदर भी बहुत ताक़त होती है लेकिन वह भी अपने मालिक के सामने अपना सर झुकाए रहता है तभी तो उसका मालिक उसकी गर्दन पर हल रखकर खेत जोता करता है। अरबी घोड़ा अपने मालिक को बचाने के लिए तलवार और भाले तक की चोट खा लेता है। इसी तरह भेड़ों के झुण्ड हैं जिन्हें आदमी बड़ी आसानी से चराता फिरता है। अगर झुण्ड की भेड़ें इधर-उधर भाग जाया करतीं तो आदमी उन्हें भला कैसे संभाल पाता? इस तरह सारे जानवरों को ऐसा ही बनाया गया है कि वह आदमी के काम आ सकें। यह जानवर सिर्फ़ इसीलिए तो आदमी का कहा मानते हैं क्योंकि उनके पास अक़्ल व समझ नहीं होती? अगर यह भी समझदार होते तो यह न आदमी की बात मानते और न ही उसकी ज़रूरतें पूरी करते? ऊँट अपने मालिक को अपनी रस्सी न खींचने देता, बैल अपने मालिक का कहा न मानता और भेड़ें चरवाहे की बात मानने के बजाए इधर-उधर भाग जाया करतीं। इसी तरह दूसरे सारे जानवर भी करते और कोई भी आदमी की बात न मानता।

जंगली जानवरों में अक़्ल क्यों नहीं होती?

इसी तरह अगर जंगली जानवरों के पास भी अक़्ल व समझ होती तो वह जब चाहते इन्सानों के ख़िलाफ़ एका कर लेते और

उसी पल सब लोगों को चीर-फाड़ डालते। ज़रा सोचो कि अगर सारे शेर, चीते, तेंदुए और भेड़िए मिलकर आदमियों के सामने आ जाते तो फिर लोगों को उन से कौन बचा पाता?

जबकि ऐसा नहीं है और उन्हें ऐसा काम करने की ताक़त ही नहीं दी गई है। इसी वजह से आदमी उनसे नहीं डरते बल्कि यह दरिंदे ही आदमियों से डरकर दूर भागते हैं। यहाँ तक कि यह भूख मिटाने और घूमने-फिरने के लिए भी आमतौर पर रात में निकलते हैं। इन जानवरों के अंदर इतनी ज़बरदस्त ताक़त होती है फिर भी यह इन्सानों से इतना डरते हैं लेकिन अगर इनके पास भी अक़्ल व समझ होती तो यह आदमियों पर हमला बोल दिया करते और अपने घरों के अंदर भी लोगों का रहना दूभर हो जाता।

अल्लाह ने कुत्ते को वफ़ादार क्यों बनाया है

इन जानवरों में कुत्ते को अल्लाह ने अपने मालिक से मोहब्बत करने वाला बनाया है। यह अपने मालिक को ख़तरे से भी बचाता है और उसका ध्यान भी रखता है। यह अंधेरी रात में दीवारों या छतों के ऊपर बैठ जाता है और वहीं बैठकर अपने मालिक की जान, माल और उसके जानवरों का ध्यान रखता है। कुत्ता अपने मालिक से इतनी मोहब्बत करता है कि अपने मालिक की भूख-प्यास में भी उसका साथ देता है। ज़रा सोचो कि कुत्ते के अंदर इतनी वफ़ादारी और मोहब्बत क्यों रखी गई है? ऐसा बस इसी लिए तो है ताकि कुत्ता अपने मालिक का ध्यान रखे और उसे ख़तरों से बचाए। यही वजह है कि उसे नुकीले दाँत, फाड़ देने वाले पंजे और दहला देने वाली आवाज़ दी गई है ताकि अगर कोई चोर किसी कुत्ते की हुकूमत में आ जाए तो उसे वहाँ से भागते भी न बन पड़े।

जानवरों के चेहरे, मुँह और दुम की बनावट

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! थोड़ा जानवरों के चेहरे की बनावट पर भी ध्यान दो। आँखें सामने रखी गई हैं ताकि वह सामने की हर चीज़ को आसानी से देख सकें और किसी चीज़ से न टकराएं या किसी गढ़े में न गिर पड़ें। मुँह को चेहरे के निचले वाले हिस्से में रखा गया है। अगर जानवरों का मुँह भी आदमी की तरह ठोड़ी के ऊपर हुआ करता तो वह ज़मीन से उठाकर कोई भी चीज़ न खा पाते। क्या तुम नहीं देखते हो कि आदमी अपने मुँह से उठाकर कोई चीज़ नहीं खाता बल्कि वह तो अपने हाथों से अपने मुँह में रखता है? यह इस बात की निशानी है कि सारे जानदारों में आदमी को जो इज़्ज़त और ऊँचाई दी गई है वह किसी को भी नहीं दी गई। जानवरों के पास घास या चारा खाने के लिए मुनासिब हाथ नहीं होते, इसी लिए उनका मुँह चेहरे के निचले वाले हिस्से में बनाया गया है ताकि वह आसानी से घास अपने मुँह में ले जा सकें और चर सकें। साथ ही थूथन भी लम्बे-लम्बे दिए गए हैं ताकि दूर या पास हर जगह की हरियाली को आराम से खा सकें।

जानवरों के दुम क्यों होती है?

जानवरों की दुम में भी अल्लाह ने बहुत सारे फ़ाएदे रखे हैं:

(1) दुम का पहला फ़ाएदा तो यह है कि यह जानवरों के प्राइवेट-पार्टस को छुपाती है।

(2) उनकी पीठ और पेट के बीच में गंदगी इकट्ठा हो जाती है जिस पर मक्खियाँ और और मच्छर बैठते हैं। जानवरों की दुम उनके ऊपर से मक्खियों और मच्छरों को उड़ाने के लिए एक मशीन का काम करती है।

(3) जानवर का बदन अगले और पिछले पैरों पर टिका होता है और उनके बदन का बोझ अगले दोनों हाथों पर पड़ता है जिससे उन्हें थकन होने लगती है। वह जब थकने लगते हैं तो अपनी दुम इधर-उधर हिलाने से उन्हें आराम मिलता है।

जानवरों की दुम के और भी बहुत सारे फ़ाएदे हैं जिन्हें आदमी समझ भी नहीं सकता लेकिन यह फ़ाएदे ज़रूरत पड़ने पर एक-एक करके सामने आते-रहते हैं जैसे जब कोई जानवर कीचड़ में फंस जाता है और उसे बाहर निकालने का कोई रास्ता नहीं दिखता तो उसकी दुम को पकड़ कर ही उसे बाहर निकाला जाता है। जानवरों की दुम में आदमियों के लिए भी बहुत सारे फ़ाएदे छुपे हुए हैं जिनसे वह अपनी बहुत सी ज़रूरतें पूरी करते हैं।

जानवर अपने चारों पैरों पर खड़े होते हैं इसलिए उनकी पीठ सुडोल और बराबर होती है और सवार होने के लिए भी बिल्कुल ठीक होती है। उनके प्राइवेट पार्ट्स को ऐसी जगह पर रखा गया है कि नर आसानी से अपनी मादा से मिल सके और अगर यह भी औरतों के प्रोइवेट-पार्ट्स की तरह होते तो नर जानवर यह काम कर ही न पाता। जानवर आदमियों व औरतों की तरह एक-दूसरे के ऊपर से नहीं मिल सकते।

हाथी और उसकी सूँड की बनावट

अब ज़रा हाथी की सूँड पर ध्यान दो कि उसके अंदर कैसी-कैसी गहरी बातें छुपी हुई हैं। हाथियों की सूँड घास और पानी को उठाकर पेट में ले जाने के काम आती है। अगर हाथी के पास सूँड न होती तो वह ज़मीन से उठाकर कुछ भी न खा पाता क्योंकि हाथी के पास दूसरे जानवरों की तरह लम्बी सी गर्दन नहीं होती कि वह अपनी गर्दन आगे बढ़ाकर कुछ भी खा-पी ले। अब क्योंकि उसके पास गर्दन नहीं है इसलिए उसे

लम्बी सी सूँड दी गई है और वही उसकी गर्दन का काम करती है और उसकी ज़रूरतों को पूरा करती है। मोहब्बत करने वाले और मेहरबान ख़ालिक़ (रचयता) के सिवा कौन है जो यह काम कर सकता है कि अगर किसी के पास बदन का कोई हिस्सा न हो तो वह उसकी जगह कोई दूसरा हिस्सा दे दे और यह हिस्सा वही काम करे जो वह वाला हिस्सा करता? जो नासमझ यह कहते हैं कि दुनिया अपने आप बन गई है उनकी यह सोच हमारी इस बात से भला कैसे मेल खा सकती है?

अगर कोई कहे कि दूसरे जानवरों की तरह हाथी को भी गर्दन क्यों नहीं दी गई तो इसका जवाब यह है कि हाथी का सर और उसके कान बहुत बड़े और बहुत भारी होते हैं। अगर हाथी को उसके कान और उसके सर के हिसाब से एक बड़ी सी गर्दन भी दे दी गई होती तो उसकी गर्दन टूट जाती। इसी लिए हाथी का सर उसके बदन से चिकपा हुआ होता है ताकि उसे इस दिक़्क़त का सामना न करना पड़े। ऐसी गर्दन के बजाए उसे सूँड दी गई है ताकि वह अपना खाना उठाकर आराम से खा ले। अल्लाह ने उसे ऐसा ही बनाया है कि वह बिना गर्दन के भी अपना सारा काम कर लेता है और उसे अपने कामों में किसी भी तरह की कोई दिक़्क़त नहीं होती।

अब ज़रा हथिनी के प्राइवेट-पार्ट पर भी ध्यान दो जो उसके पेट के नीचे बनाया गया है। उसके बदन का यह हिस्सा बस उसी वक़्त बाहर आता है जब उसकी शहवत (Sexual Desire) उभरती है ताकि नर हाथी आसानी से उसके साथ मिल सके। यह भी देखो कि हथिनी के बदन का यह हिस्सा दूसरे जानवरों से बिल्कुल अलग है, फिर भी हाथी और हथिनी को प्राइवेट पार्टस ऐसे दिए गए हैं कि हाथियों की नस्ल बढ़ती भी रहती है और बची भी रहती है।

ज़िराफ़ की बनावट

ध्यान देने की बात यह है कि ज़िराफ़ के बदन के कुछ हिस्से दूसरे जानवरों से बिल्कुल अलग हैं और कुछ दूसरों के जैसे ही हैं। उसका सर घोड़े के सर जैसा, उसकी गर्दन ऊँट की गर्दन के जैसी, उसके खुर गाय के खुरों के जैसे और उसकी खाल तेंदुए की तरह होती है।

कुछ नासमझ लोग और अल्लाह को न मानने वाले कहा करते हैंः

कई अलग-अलग तरह के जानवरों के आपस में मिलने की वजह से ज़िराफ़ ऐसा बना है। इन लोगों का कहना है कि जब जंगल में रहने वाले कई तरह के जानवर पानी पीने के लिए नदी की तरफ़ जाते हैं तो वहीं पानी में इकट्ठा हो जाते हैं और फिर घास खाने वाली किसी मादा के साथ मिलते हैं तो इससे ज़िराफ़ पैदा होता है। यह बात ऐसी है जो कहने वाले की नासमझी और अल्लाह को न पहचान पाने की निशानी है क्योंकि एक तरह का जानवर कभी भी दूसरी तरह के जानवर के साथ नहीं मिलता। घोड़ा ऊँटनी के साथ या ऊँट गाय के साथ कभी नहीं मिलता बल्कि यह काम तभी होता है जब एक ही नस्ल के या एक-दूसरे से मिलते-जुलते दो नर-मादा आपस में मिलते हैं जैसे घोड़ा गधी के साथ मिलता है तो उनसे ख़च्चर पैदा होता है या अगर भेड़िया लकड़बग्घे के साथ मिलता है तो उनसे 'सिम्अ्' नाम का जानवर पैदा होता है। फिर इन दोनों से मिलकर जो बच्चा पैदा होता है वह ज़िराफ़ की तरह नहीं होता कि उसके बदन का एक हिस्सा घोड़े के जैसा, एक ऊँट के जैसा या एक गाय के जैसा हो यानी उसके बदन के हिस्से दूसरे जानवरों की तरह हों जैसे उन सब से मिलकर बना हो। अगर तुम ख़च्चर को देखो तो तुम्हें पता चलेगा कि उसका सर, कान, टापें, पूँछ और खुर शक्ल में घोड़े व गधे के बीच के होते हैं। यहाँ तक कि ख़च्चर की आवाज़ भी इन दोनों की आवाज़ के जैसी होती है बल्कि इन दोनों जानवरों की आवाज़ से मिलकर बनी होती है। यह ख़ुद इस बात

का सुबूत है कि उन नासमझों की सोच के बिल्कुल उलट ज़िराफ़ कुछ जानवरों के आपस में मिलने की वजह से नहीं बनता है बल्कि यह तो अल्लाह की क़ुदरत का एक करिश्मा है और कोई उसके जैसा कुछ बना भी नहीं सकता। अल्लाह ही सारे जानवरों को बनाने वाला है और वह जिस जानवर का जो भी हिस्सा चाहे किसी दूसरे जानवर के अंदर बना सकता है। वह जो हिस्सा चाहे बढ़ा सकता है और जो हिस्सा चाहे कम कर सकता है। यह सब इस बात का सुबूत है कि वह हर चीज़ की क़ुदरत व ताक़त रखने वाला है और कुछ भी उसकी क़ुदरत से बाहर नहीं है।

ज़िराफ़ की गर्दन इसलिए लम्बी बनाई गई है क्योंकि इस जानवर के रहने और पलने-बढ़ने की जगह वह जंगल होते हैं जो ऊँचे-ऊँचे पेड़ों से भरे होते हैं। इसलिए इसे एक ऐसी लम्बी गर्दन चाहिए थी जिससे यह पेड़ों की टहनियाँ व पत्तियाँ और फल आसानी से खा सके।

बन्दर और आदमी में फ़र्क़

ज़रा बन्दर की बनावट पर भी ध्यान दो और देखो कि उसका सर, शक्ल, कंधे, सीना और बदन के दूसरे बाहरी हिस्से आदमी से काफ़ी मिलते-जुलते हैं। बन्दर के पास समझ व चालाकी भी होती है और इसी वजह से वह अपने मालिक के इशारों को आसानी से समझ लेता है और आदमियों की बहुत सी बातों की नक़ल भी कर लेता है। यह जानवर अपनी बनावट में आदमी के बदन से बहुत मिलता है ताकि आदमी यह बात भी समझ ले कि ख़ुद वह भी इतना सब कुछ होने के बावजूद जानवरों जैसा ही है और अगर आदमी में अक़्ल, समझ और सोचने व बोलने की ताक़त न होती तो वह भी बिल्कुल एक जानवर ही होता।

दूसरी बात यह कि बन्दर के बदन में कुछ ऐसी चीज़ें भी हैं जो आदमी के पास नहीं हैं जैसे थूथ्नी, लम्बी पूँछ और उसके

बदन के वह बाल जो उसे पूरी तरह से ढक लेते हैं लेकिन ध्यान रहे कि अगर बन्दर को भी आदमी की तरह ही दिमाग़, समझ और बोलने की ताक़त दे दी गई होती तो फिर बन्दरों को आदमियों में गिनने से कोई नहीं रोक सकता था। इसलिए जो चीज़ बन्दरों को आदमी से अलग करती है वह बस उन में अक़्ल व समझ की कमी और न बोल पाना है।

जानवरों के बदन पर बाल क्यों होते हैं?

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! देखो अल्लाह ने अपने करम से जानवरों के बदन को बालों, रोयों और ऊन वग़ैरा से कैसे ढक दिया है ताकि ठंड के साथ-साथ दूसरी बहुत सारी मुसीबतों व दिक़्क़तों से भी बचे रह सकें।

दूसरे यह कि उन्हें बीच से फटे हुए खुर भी दिए हैं ताकि उन्हें ऊबड़-खाबड़ ज़मीन पर चलने में दिक़्क़त न हो क्योंकि इन जानवरों के पास ऐसे हाथ या उंगलियाँ नहीं होतीं कि यह अपने लिए कपड़े या जूते-चप्पल बना सकें। इसी वजह से इन जानवरों की बनावट में इन सारी बातों का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है और इन्हें ऐसा बदन दिया गया है कि कुछ भी बदलने की ज़रूरत नहीं पड़ती और जब तक यह ज़िन्दा रहते हैं इनकी हर ज़रूरत अपने आप पूरी होती रहती है।

लेकिन आदमी को सोचने-समझने की ताक़त और काम करने के लिए हाथ दिए गए हैं इसलिए वह अपने हाथों से अपने लिए कपड़े बुनता है और पहनता है। साथ ही ज़रूरत के हिसाब के वह अपने कपड़े बदलता भी रहता है।

इन्सान के लिए इस काम में कई भलाईयाँ हैं:

(1) कपड़े कातने, बुनने और तैयार करने की वजह से उसका वक़्त इन कामों में लग जाता है और इस तरह वह बहुत सारे ग़लत कामों व बुराईयों और बेकार बैठने से बच जाता है।

(2) मौसम के हिसाब से कभी अपने कपड़े उतारने और कभी पहनने में उसे बड़ा मज़ा आता है और साथ में आराम भी मिलता है।
(3) तरह-तरह के अच्छे व ख़ूबसूरत कपड़े पहनने और उन्हें अदलने-बदलने में भी उसे बड़ा मज़ा आता है।
(4) उसकी कारीगरी की वजह से मौज़े व जूते-चप्पल जैसी चीज़ें बनती हैं जिससे उसका पैर बचा रहता है।
(5) कपड़ों, जूते-चप्पलों और मौज़ों के कारोबार से बहुत सारे लोगों को रोज़गार भी मिलता है। इस काम में लगे होने की वजह से बहुत से लोग अपनी रोज़ी-रोटी और अपने घर का ख़र्च भी चलाते हैं।

बहरहाल हम कह सकते हैं कि जानवरों के बाल, रोयें और ऊन उनके लिए कपड़ों का काम करती है और उनके खुर उनके जूतों का काम करते हैं।

मरते वक़्त जानवर अपना बदन छुपा लेते हैं?

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! जानवरों के अंदर छुपे हुए इस ज़बरदस्त नेचर को भी देखो कि जब उनके मरने का वक़्त आता है तो आदमियों की तरह दूसरे जानवर उन्हें दफ़्न नहीं करते बल्कि मरने वाला जानवर ख़ुद ही किसी अलग-थलग सी जगह पर जाकर अपने आप को छुपा लेता है। अगर ऐसा नहीं है तो बताओ कि इतने सारे जानवरों, दरिंदों और परिंदों के मुर्दा बदन दिखाई क्यों नहीं देते? यह सब इतने कम तो बिल्कुल नहीं हैं कि मरने के बाद कहीं दिखाई ही न पड़ें बल्कि अगर कोई यह कहे कि आदमियों से कहीं ज़्यादा तो जानवर हैं तो उसने बिल्कुल सही बात कही है।

जंगलों व पहाड़ों में हिरनों, जंगली गायों, जंगली भेंसों और जंगली बकरियों के झुण्ड के झुण्ड होते हैं। इसी तरह फाड़ खाने वाले दरिंदों जैसे शेर, चीते, भेड़िये, लगड़बग्घे वग़ैरा भी हर जगह फैले पड़े हैं। साथ ही ज़मीन के ऊपर और ज़मीन के अंदर

पाए जाने वाले कीड़े-मकोड़े से हटकर तरह-तरह के परिंदे जैसे कौए, कबूतर, चकोर, बत्तख़, सारस और शिकारी चिड़ियें और गोश्त खाने वाले परिंदे (जैसे चील और बाज़ वग़ैरा) भी होते हैं जो बराबर मरते भी रहते हैं लेकिन शिकारियों के जाल में फंसने और फाड़ खाने वाले दरिंदों की ख़ुराक बनने वाले जानवरों के अलावा इन में से किसी की भी लाश नहीं दिखाई देती।

जब इन जानवरों को लगने लगता है कि अब इनके मरने का वक़्त आ गया है तो यह अपने आप को किसी गढ़े या किसी छुपी हुई जगह में पहुँचा देते हैं और वहीं मर जाते हैं। अगर ऐसा न होता तो सारे जंगल और मैदान इन जानवरों की बद्बू से सड़ जाते और हर तरफ़ महामारी फैल जाती।

इस दुनिया में आने के बाद अपनी ज़िन्दगी के शुरू में ही आदमी ने एक-दूसरे को दफ़्नाने का तरीक़ा एक कौए से ही सीखा था जब वह एक दूसरे मरे हुए कौए को मिट्टी में दबा रहा था। अपने मरे हुओं को मिट्टी में दफ़्नाना पहले से ही इन्सानों के नेचर में रख दिया गया था ताकि आदमी गन्दगी व बीमारियों से बच सके।

पहाड़ी बकरी, लोमड़ी और डॉलफ़िन में बहुत सूझ-बूझ होती है

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! जानवरों के अंदर भी समझ पाई जाती है। इस बात पर भी ध्यान दो कि अल्लाह ने अपने करम से जानवरों के अंदर होशियारी और चालाकी भी रखी है ताकि यह नासमझ जानवर इस नेमत से दूर न रह जाएं।

जैसे पहाड़ी बकरे की एक नस्ल साँप का शिकार करके अपना पेट भरती है लेकिन जब वह साँप को खाता है तो उसे बड़ी भयानक प्यास लगती है। लेकिन वह इस बात को समझता है कि अगर उसने पानी पी लिया तो ज़हर उसके सारे बदन में फैल जाएगा। प्यास की तेज़ी की वजह से वह पानी के किनारे

तो जाता है मगर बस पानी को देखता रहता है, प्यास से तड़पता रहता है और चीख़ता रहता है मगर वह पानी को मुँह तक नहीं लगाता क्योंकि उसे पता होता है कि जैसे ही पानी पिएगा वैसे ही मर जाएगा।

ज़रा देखो तो अल्लाह ने उसे कैसा बनाया है कि वह पानी पीने के नुक़सान के डर से अपनी तड़पाने वाली प्यास को झेलता रहता है मगर पानी नहीं पीता? आदमी के पास अक़्ल व समझ भी होती है लेकिन अगर वह ऐसे हालात में फंस जाए तो शायद वह इतनी प्यास न झेल पाए।

इसी तरह लोमड़ी है कि जब उसे बहुत भूख लगी होती है तो वह चित लेट जाती है और अपने पेट को फुलाकर ऐसे बन जाती है जैसे मर गई हो ताकि आसपास के परिंदे उसे मुर्दा समझ लें। जैसे ही कोई परिंदा आकर उसके ऊपर बैठता है वैसे ही वह झपटकर उस पर हमला कर देती है और अपने पंजों में फंसाकर खा जाती है। जिसने इस बहाने से लोमड़ी को अपना पेट भरना सिखाया है उसके सिवा कौन है जो नासमझ लोमड़ी को यह चालाकी सिखाने वाला है।

लोमड़ी में दूसरे जानवरों की तरह ताक़त या हमला करने की हिम्मत नहीं होती है इसी लिए उसे समझ व चालाकी दी गई है ताकि अपनी चालाकी के बल पर वह जी सके।

डॉलफ़िन भी परिंदों का शिकार करती है। जब वह पानी में होती है तो शिकार करने के लिए यह चालाकी दिखाती है कि एक मछली को पकड़ती है और उसे मारकर पानी के ऊपर रखे रहती है और ख़ुद उसके नीचे छुप जाती है। पानी को हिलाती रहती है ताकि बाहर से कोई उसे देख न सके। जैसे ही कोई परिंदा उस मरी हुई मछली पर आकर बैठता है वैसे ही यह उस पर हमला बोल देती है।

अजगर और बादल

मुफ़ज़्ज़ल कहते हैं कि इसके बाद मैंने कहा कि ऐ मौला! मुझे अजगर और बादल के बारे में भी कुछ बताइए।

इमाम ने फ़रमाया कि बादलों को जैसे अजगर के पीछे लगा दिया गया है कि जहाँ उसे पाए उचक ले, ठीक उसी तरह जैसे चुम्बक लौहे को अपनी तरफ़ खींच लेता है। इसी लिए जैसे ही बारिश और बादलों का मौसम आता है यह साँप बादलों के डर से अपना सर मिट्टी से बाहर ही नहीं निकालता। यह बस उसी वक़्त बाहर निकलता है जब मौसम बहुत गर्म होता है और आसमान में दूर-दूर तक बादलों का अता-पता नहीं होता।

इस पर मैंने सवाल किया कि यह बादल अजगर के पीछे क्यों पड़े रहते हैं? इमाम ने जवाब दिया कि इसका फ़ाएदा यह है कि लोग अजगर से होने वाले नुक़सान से बचे रहते हैं।

चीटियों और मकड़ियों की बनावट

मुफ़ज़्ज़ल कहते हैं कि मैंने कहा, ''ऐ मौला! आपने जानवरों के बारे में बता तो दिया और इस तरह से समझा दिया कि जिसको कुछ सीखना है वह आपकी बताई बातों से बहुत कुछ सीख सकता है। अब ज़रा मुझे छोटी-बड़ी दोनों तरह की चीटियों और परिंदों के बारे में भी बताइए।''

इमाम ने फ़रमाया कि चीटियों के छोटे से मुँह को देखो और फिर बताओ कि क्या उसके मुँह में कोई कमी दिखाई देती है? उसे जो कुछ चाहिए था वह सब दे दिया गया है। अल्लाह के सिवा भला कौन यह काम कर सकता था जिसके लिए बड़ी से बड़ी या छोटी से छोटी चीज़ बनाना, दोनों काम बराबर हैं।

चीटियों को देखो कि उनकी फ़ौज की फ़ौज अपनी रोज़ी-रोटी इकट्ठा करने के लिए कैसे एकजुट हो जाती है! जब चीटियों का कोई ग्रुप किसी दाने को अपने मुँह में दबाए किसी

ऊँची सी जगह की तरफ़ ले जा रहा होता है तो आदमी का दिमाग़ फ़ौरन सोचने लगता है कि हम लोग भी तो इसी तरह अपनी रोज़ी-रोटी की तैयारी करते हैं। बल्कि इस मामले में चीटियाँ आदमियों से कहीं बड़ी हिम्मत दिखाती हैं और कोशिश करती हैं। क्या तुम ने नहीं देखा है कि चीटियाँ दानों को उठाने और अपने बिलों में ले जाने के लिए बिल्कुल आदमियों की तरह एक-दूसरे की मदद करती हैं? चीटियाँ पहले दाने के दो टुकड़े कर लेती हैं ताकि दाना उनके बिल में पहुँचने के बाद हरा न हो जाए और उनकी सारी मेहनत बर्बाद न हो जाए। अगर कभी उनके दानों तक पानी पहुँच भी जाता है तो फ़ौरन उन्हें सुखाने के लिए बाहर ले आती हैं। यह भी ध्यान रहे कि चीटियाँ हमेशा ऊँची जगहों पर ही अपना घर बनाती हैं कि कहीं ऐसा न हो कि उनके घरों में पानी घुस जाए और वह डूबकर मर जाएं।

यह सब बिना किसी अक़्ल या समझ के उस पैदाइशी नेचर की वजह से होता है जो अल्लाह ने चीटियों के दिल में डाल दिया है जिसके बल पर वह चीटियों को रास्ता दिखाता रहता है।

शेर मकड़ी

बड़ी मकड़ी को देखो जिसे आमतौर पर शेर मकड़ी भी कहा जाता है। यह अपना पेट भरने के लिए कितनी चालाकी से काम लेती है?

जैसे ही इस मकड़ी को लगता है कि उसके पास कोई मक्खी आकर बैठ गई है तो वह पहले तो उसे ढील देकर चुपचाप बिना हिले-डुले पड़ी रहती है जिससे मक्खी को भरोसा हो जाता है कि वह मरी हुई है। मक्खी बस यहीं पर ग़लती कर बैठती है। उस की इसी ग़लती का फ़ाएदा उठाकर मकड़ी बड़ी तेज़ी से और सोच-समझकर उस पर झपट पड़ती है और ऐसे जकड़ लेती है कि फिर मक्खी उसके चगुँल से निकल ही नहीं पाती। उसे ऐसे ही जकड़े रहती है और जब उसे भरोसा हो जाता है कि वह अब

बेजान हो गई है तब उसे चीर-फाड़कर चट करना शुरू कर देती है। यही उसकी ख़ुराक है और इसी से वह ज़िन्दा रहती है।

घरेलू मकड़ी

इसी तरह घरेलू मकड़ी भी है। वह अपने आसपास एक जाला बुन लेती है और अपने इसी जाले में वह मक्खियों को फंसाती है। वह इस जाले में छुपकर बैठ जाती है और जैसे ही कोई मक्खी आकर उसके जाल में फंसती है वह उसे थोड़ी-थोड़ी देर पर डंक मारती रहती है और फिर उसे अपना शिकार बना लेती है। यही उसका खाना है और यही खा-खाकर वह ज़िन्दा रहती है।

शेर मकड़ी शेरों व कुत्तों की तरह शिकार करती है और घरेलू मकड़ी जाल व कांटे से शिकार फंसाने का एक छोटा सा नमूना दिखाती है।

मकड़ी नाम के इस छोटे से कीड़े को देखो कि अगर आदमी इसके जैसा काम करना चाहे तो वह औज़ार और हथियार के बिना यह काम कर ही नहीं सकता।

अगर किसी छोटी सी चीज़ जैसे चींटी से भी कोई बात सीखी जा सकती हो तो उससे भी सीखना चाहिए और उस जानदार को छोटा समझकर अन्देखा नहीं करना चाहिए क्योंकि कभी कभी कोई बहुत बड़ी बात भी तभी समझ में आती है जब उसकी मिसाल किसी छोटी सी चीज़ से दी जाती है और ऐसा करने से उस बड़ी चीज़ के बड़ा होने में कोई कमी नहीं होती। जैसे अगर सोने को तौलने के लिए लौहे की तराज़ू काम में लाई जाए तो इससे सोने की क़ीमत में कोई कमी नहीं होती है।

परिंदों की बनावट

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! परिंदों पर भी ध्यान दो! अल्लाह चाहता था कि परिंदे आसमान में उड़ा करें इसलिए उसने उन्हें बड़ा हल्का बदन देकर भेजा है। उनमें चार हाथ-पैरों के बजाए बस दो पैर, पाँच उंगलियों के बजाए चार उंगलियाँ और पेशाब-पाख़ाने के लिए दो रास्तों के बजाए एक ही रास्ता बनाया गया है।

जिस तरह कश्ती का अगला हिस्सा पतला होता है ताकि पानी को चीर सके और कश्ती आगे बढ़ सके उसी तरह परिंदों का सीना और अगला हिस्सा भी कश्ती की तरह पतला और नुकीला जैसा होता है ताकि हवा को चीरता रहे और परिंदा आसानी से उड़ता रहे। इसी तरह उड़ने में आसानी के लिए परिंदों को लम्बे- लम्बे पर और दुम भी दी गई है। परिंदों का सारा बदन परों से ढका होता है ताकि हवा उन परों के अंदर से होती हुई निकलती रहे और वह आसानी से आसमान की ऊँचाईयों में उड़ते- फिरें।

अल्लाह चाहता था कि परिंदों का पेट दाने और गोश्त से भरे और वह अपना खाना बिना चबाए ही निगल लें। इसलिए परिंदों को आदमियों की तरह होंठ व दाँत नहीं दिए गए हैं बल्कि उन्हें एक तेज़ और मज़बूत चोंच दी गई है ताकि अपनी चोंच से खाना उठाएं और बिना चबाए ही खा जाएं। ऐसा इसलिए है ताकि कठोर दानों को चुनने व तोड़ने से उनकी चोंच न फटे और इसी तरह गोश्त खाने के लिए खींचा-तानी में ज़ख़्मी न हो जाए।

परिंदों के पास दाँत तो होते नहीं हैं जिसकी वजह से वह दानों को पूरा-पूरा निगल लेते हैं। अगर परिंदे गोश्त खाते हैं तो उसे भी बिना चबाए ही खा जाते हैं। इसीलिए उनके बदन के अंदर गर्मी ज़्यादा रखी गई है और उसी गर्मी से उनकी ख़ुराक इतनी गल जाती है कि उन्हें चबाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। आदमी के अंदर यह ताक़त नहीं होती है और इसीलिए अगर वह इन दानों को परिंदों की तरह पूरा-पूरा निगल जाए तो दाने

अपनी असली शक्ल में पेट के रास्ते बाहर निकल आते हैं मगर यही पूरे-पूरे दाने जब परिंदों के पेट में जाते हैं तो इस तरह घुल जाते हैं कि बाहर निकलते वक़्त उनका अता-पता भी नहीं होता।

अल्लाह ने परिंदों के लिए यह भी तय किया है कि वह अंडे दें और अंडों से ही उनके बच्चे निकलें। अगर वह भी दूसरे जानदारों की तरह बच्चे जनते तो उनका पेट भारी हो जाता और उड़ते हुए उन्हें बड़ी दिक़्क़त होती। इस तरह परिंदों की हर चीज़ कुछ ऐसी बनाई गई है वह उनके लिए बिल्कुल ठीक है।

फिर यह भी देखो कि परिंदों का काफ़ी वक़्त उड़ने में बीतता है लेकिन जब उन्हें अपने अंडों पर बैठना होता है तो कुछ परिंदे एक हफ़्ते, कुछ दो हफ़्ते और कुछ तीन-तीन हफ़्ते तक अपने अंडों पर बैठे रहते हैं और उसके बाद ही अंडों से बच्चे बाहर निकलते हैं। जैसे ही बच्चे अंडों से बाहर निकलते हैं तो यह फ़ौरन ही अपने बच्चों के मुँह में फूँक मारते हैं ताकि पोटा (खाने की थैली) खुल जाए और उसमें दाना-पानी जा सके। इसके बाद परिंदे अपने बच्चों के लिए दाने लाते हैं और उन्हें खिला-खिलाकर बड़ा करते हैं।

किसने परिंदों को यह बात सिखाई है कि वह दाने चुगकर अपने पोटे में रख लें और वहीं से अपने बच्चों की चोंच में उंडेलता रहे? परिंदे ख़ुद को इतनी मुसीबत और कठिनाई में क्यों डालते हैं जबकि उनके पास तो सूझ-बूझ और अक़्ल भी नहीं होती? परिंदों को तो आदमी की तरह अपने बच्चों से किसी तरह की कोई उम्मीद भी नहीं होती कि उनके बच्चे आगे चलकर उनकी मदद करेंगे या उनकी इज़्ज़त बढ़ाएंगे या उनका नाम ऊँचा करेंगे।

अल्लाह ने अपने करम से यह तय किया है कि परिंदे अपनी समझ या अक़्ल की वजह से नहीं बल्कि अपने नेचर की वजह से अपने बच्चों से मोहब्बत करते हैं और यह नेचर अल्लाह ने ही उनके अंदर रखा है तभी तो वह अपने बच्चों का पेट भराते हैं ताकि उनकी नस्ल आगे बढ़ती रहे।

अब ज़रा देखो कि जब मुर्ग़ी के अंडे देने का वक़्त आता है तो वह अंडे देने और उन्हें सेने के लिए कितनी बेचैन हो जाती है जबकि उसके पास अंडे देने और उन्हें सेने के लिए कोई अच्छा सा घर या घोंसला भी नहीं होता है। इस बीच मुर्ग़ा भी जोश में आ जाता है। वह कुड़क होती है तो फिर भूखी रहती है और कुछ नहीं खाती ताकि उसके अंडे एक जगह इकट्ठे कर दिए जाएँ और वह उनके ऊपर बैठ जाए और बच्चे निकल आएं। तुम ही बताओ कि क्या यह सब मुर्ग़ियों की नस्ल को आगे बढ़ाने के लिए नहीं है? सवाल यह है कि जब मुर्ग़ी के पास समझ ही नहीं होती तो फिर वह अपनी नस्ल को आगे बढ़ाने के लिए इतनी कोशिश क्यों करती है? मुर्ग़ी को ऐसा किसने बनाया है? जानकार अल्लाह ने ही तो बनाया है और उसी ने तो उसके अंदर यह नेचर रखा है।

मुर्ग़ी के अंडे को भी ध्यान से देखो। इसके अंदर पीले रंग का गाढ़ा पानी और सफ़ेद रंग का हल्का पानी एक साथ रख दिया गया है। कुछ पानी इसलिए बनाया गया है ताकि उससे मुर्ग़ी का बच्चा तैयार हो सके और बाक़ी पानी इसलिए है ताकि उसका पेट भरता रहे और आख़िर में वक़्त आने पर अंडे से बाहर आ जाए। इन सारे कामों में जो गहरी-गहरी बातें छुपी हुई हैं उन्हें ध्यान से देखो! मुर्ग़ी का बच्चा उसी अंडे की दीवारों और उस कड़े छिलके के अंदर पलता-बढ़ता है जिसके अंदर कुछ भी नहीं जा सकता। इसलिए अंडे के अंदर ही मुर्ग़ी के बच्चों का खाना रख दिया गया है और जब तक वह अंडों से बाहर नहीं निकल आते तब तक वहीं उनका पेट भरता रहता है। मुर्ग़ी का अंडा उसके बच्चे के लिए एक जेल की तरह होता है जिसमें वह क़ैद होता है। इस जेल की दीवारें बड़ी मज़बूत बनाई गई हैं। इस जेल में बाहर से खाने की कोई भी चीज़ नहीं जा सकती और इसी लिए जब तक मुर्ग़ी का बच्चा इस जेल में रहता है तब तक उसके पेट भरने का सामान इस जेल के अंदर ही रख दिया गया है।

परिंदों के सीने में दाने की थैली

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! परिंदों के पोटे (दानों की थैली) पर ध्यान दो। पोटे से संगदाने तक पहुँचने का रास्ता बहुत छोटा होता है जिसकी वजह से खाना बहुत धीरे-धीरे और बहुत थोड़ा-थोड़ा उसके अंदर जाता है। अगर परिंदे पहले दाने के संगदाने में पहुँचने के बाद दूसरा दाना चुगा करते तो उन्हें बड़ी देर लगती और ज़रूरत भर खाना भी उन्हें न मिल पाता।

(इसी लिए वह यह इन्तेज़ार नहीं करता कि पहला दाना संगदाने में पहुँच जाए तो दूसरा दाना चुगे बल्कि जल्दी-जल्दी चुगकर अपने पोटे में भरते रहते हैं।)

परिंदों को शिकारियों और जंगली जानवरों का डर हर पल लगा रहता है इसलिए वह जल्दी-जल्दी दाने चुगकर अपने पोटे में भर लेते हैं। बस यूँ समझो कि परिंदों का पोटा उनके सामने वाले हिस्से में लटकी हुई एक थैली की तरह होता है ताकि जो भी खाने की चीज़ दिखाई पड़े फ़ौरन उसे उस में भर लें और फिर वह अपने हिसाब से धीरे-धीरे संगदाने में जाती रहे।[1]

पोटे का एक दूसरा फ़ाएदा भी है और वह यह कि कुछ परिंदे ऐसे भी हैं जो चुगे हुए दाने अपनी चोंच से अपने बच्चों के मुँह में रखकर उनका पेट भरते हैं। यह तो सामने की बात है कि संगदाने के मुक़ाबले में पोटे से दानों को वापस लाना कहीं आसान काम है।

---

[1] परिंदों में खाने की दो पोटलियाँ होती हैं। एक सीने के पास (पोटा) और दूसरी पेट के बीचोंबीच (संगदाना)। परिंदे जब दाने चुगते हैं तो वह दाने सीधे उनके पोटे में जाते हैं और उसके बाद धीरे-धीरे संगदाने में उतरते जाते हैं जहाँ से वह हज़्म होकर पूरे बदन को ताक़त पहुँचाते हैं।

परिंदों का रंग-बिरंगा होना

इसके बाद मुफ़ज़्ज़ल ने कहा कि अल्लाह को न मानने वाले कुछ लोग कहते हैं कि परिंदों के अलग-अलग रंग और शक्लें इसलिए होती हैं क्योंकि परिंदे किसी भी दूसरी नस्ल वाले परिंदे के साथ मिल जाते हैं और तभी तो रंग-बिरंगे बच्चे पैदा होते हैं।

इमाम ने फ़रमाया कि ऐ मुफ़ज़्ज़ल! यह जो तुम मोर और तीतर में इतने सारे प्यारे-प्यारे रंग देखते हो यह तो बिल्कुल किसी आर्टिस्ट का कारनामा लगता है, भला कौन कह सकता है कि यह करिश्मा अपने आप हो गया है? अगर यह अपने आप हो गया है और इसके पीछे किसी जानकार का हाथ नहीं है तो फिर ऐसा क्यों है कि इन परिंदों की शक्लें हमेशा एक जैसी और एक जैसा रंग-रूप होता है?

यह बात तो बिल्कुल साफ़ है कि अगर यह सब अपने आप हो गया होता तो इन परिंदों के रंगों व शक्लों में इतना तालमेल और इतनी ख़ूबसूरती कहीं से कहीं तक न होती बल्कि इसके उलट हर चीज़ भद्दी और बड़ी बिखरी-बिखरी सी होती।

परिंदों के पर

परिंदों के परों पर भी ध्यान दो! यह पर परिंदों के लिए कपड़ों का काम करते हैं जो बड़े ही बारीक व नाज़ुक तारों से बने होते हैं बिल्कुल ऐसे जैसे धागों को एक-दूसरे में बुन दिया गया हो। अगर इन परों को खींचकर एक-दूसरे से अलग करने की कोशिश की जाए तो यह अलग नहीं होते। जब परिंदे उड़ते हैं तो फिर यही पर धीरे-धीरे अपने आप खुलते जाते हैं और इनके बीच से हवा गुज़रती रहती है जिससे परिंदे आसानी से उड़ते फिरते हैं और हवा से उनका बदन भी भारी नहीं होता। परों के बीच में अल्लाह ने मोटी और मज़बूत हड्डी भी रखी है

ताकि यह हड्डी अपनी मज़बूती के सहारे परों को जोड़े रखे। यह हड्डी बड़ी मज़बूत मगर अंदर से बिल्कुल खोखली होती है ताकि भारी न हो और परिंदों को उड़ने में दिक़्क़त न हो।

कुछ परिंदों की टांगें लम्बी क्यों होती हैं?

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! क्या तुम ने लम्बी टांगों वाले परिंदों को देखा है और कभी सोचा है कि उनकी टांगें लम्बी क्यों होती हैं? यह परिंदे आमतौर पर कम गहरे पानी में खड़े रहते हैं। इनका बदन दो लम्बी-लम्बी टांगों पर टिका होता है जैसे कोई कैमरा हो जो ऊपर से पानी के अंदर अपनी नज़रें गाड़े हुए हो। जैसे ही यह परिंदा अपने शिकार को देखता है वैसे ही धीरे-धीरे अपने पैर उठाते हुए उसके पास पहुँचकर अचानक उस पर झपट पड़ता है।

अगर इस परिंदे की टांगें छोटी-छोटी होतीं और यह अपने शिकार पर हमले करने के लिए उसकी तरफ़ बढ़ता तो इसका पेट पानी से टकरा जाता जिससे पानी में हलचल मचती और शिकार भाग जाता। इसकी यह दो टांगे इसीलिए बनाई गई हैं ताकि इनके सहारे यह अपना पेट भर सके और ज़िन्दा रहे।

अब ज़रा परिंदों के बदन में पाए जाने वाले तालमेल पर भी ध्यान दो। जिस परिंदे की टांगे लम्बी होती हैं उसकी गर्दन भी लम्बी होती है ताकि आसानी से ज़मीन से अपना खाना उठा सके। अगर किसी परिंदे की टांगें तो लम्बी-लम्बी होतीं और गर्दन छोटी सी होती तो फिर वह ज़मीन से कुछ उठा ही न पाता। इसकी लम्बी चोंच की वजह से भी इसकी गर्दन आसानी से अपने शिकार तक पहुँच जाती है और इसका काम आसान हो जाता है।

क्या तुम नहीं देखते हो कि इस दुनिया में दिखाई पड़ने वाली हर चीज़ बड़ी नपी-तुली है और हर चीज़ का एक-एक अंग बड़ी सूझ-बूझ से बनाया गया है।

गौरय्या और उसके जैसे दूसरे जानदार

थोड़ा गौरय्या पर भी ध्यान दो कि वह अपनी रोज़ी की तलाश में दिन भर कैसे इधर-उधर उड़ती फिरती है। ऐसा नहीं है कि उसकी रोज़ी कहीं तैयार रखी रहती है और उसे आसानी से मिल जाती है बल्कि अपनी रोज़ी पाने के लिए वह दिन भर इधर- उधर मारी-मारी फिरती है और आख़िर में अपना पेट भर ही लेती है। अल्लाह ने हर चीज़ को ऐसा ही बनाया है। पाक है अल्लाह जिसने रोज़ी-रोटी को इस तरह से दुनिया में फैला दिया है।

अल्लाह ने दुनिया को ऐसा नहीं बनाया है कि कोई अपनी रोज़ी ढूँढ ही न सके और अपना पेट न भर सके क्योंकि उसने हर जानदार को रोज़ी-रोटी की ज़रूरत के साथ ही इस दुनिया में भेजा है। अल्लाह ने ऐसा भी नहीं किया है कि बिना हाथ-पैर हिलाए आसानी से रोज़ी मिल जाए क्योंकि जानदारों की भलाई इसी में थी। अगर उन्हें हमेशा अपनी रोज़ी-रोटी तैयार मिल जाया करती तो जानदार इतना खाया करते कि खाते-खाते मर जाते और आदमी के साथ तो यह दिक़्क़त भी आती कि वह बेकारी की वजह से उल्टे-सीधे कामों और गुनाहों में पड़ा रहता क्योंकि उसको अपनी रोज़ी-रोटी के लिए कुछ करना ही न पड़ता।

चमगादड़ और उल्लू क्या खाते हैं?

इसके बाद इमाम ने सवाल किया कि क्या तुम्हें पता है कि उल्लू क्या खाते हैं?

मुफ़ज़्ज़ल ने जवाब दिया कि नहीं, मेरे मौला! मैं नहीं जानता। आप ही बताइए।

इमाम ने फ़रमाया कि इनका खाना वह छोटे-छोटे जानदार हैं जो हवा में उड़ते-फिरते हैं जैसे मच्छर, पतिंगे, मक्खियाँ, टिड्डियाँ

और शहद की मक्खी वग़ैरा और यह सब आसमान में चारों ओर उड़ते फिरते हैं। अगर तुम इस बात को सही से समझना चाहते हो तो रात में अपनी छत पर या अपने आँगन में कोई चिराग़ रखकर देखना कि कैसे सैंकड़ों पतिंगे उसके ऊपर मंडराने लगते हैं। अगर यह सब हर जगह फैले हुए नहीं हैं तो अचाकन कहाँ से आकर इकट्ठा हो जाते हैं? अगर कोई कहने लगे कि यह जंगलों या रेगिस्तानों से आ जाते हैं तो इसके जवाब में हम कहेंगे कि इतनी जल्दी यानी सेकेंडों में इतनी लम्बी दूरी कैसे तय की जा सकती है? और फिर इतनी दूर से वह घर के अंदर जलते हुए चिराग़ को भला कैसे देख सकते हैं? इसका मतलब यह हुआ कि यह सब आसमान में ही उड़ते-फिरते रहते हैं। उल्लू और उसके जैसे दूसरे परिंदे या जानदार जो रात में बाहर निकलते हैं वह इन्हीं सब को खाकर अपने पेट भरते हैं।

ध्यान देने की बात यह है कि सिर्फ़ रात में बाहर निकलने वाले परिंदों की भूख आसमान में उड़ते हुए इन कीड़े-मकोड़ों से ही मिटती है। इन कीड़े-मकोड़ों की बनावट पर भी ध्यान दो। बहुत से लोग तो यह भी सोचते हैं कि इन कीड़े-मकोड़ों को बेकार बनाया गया है और इनसे किसी को भी कोई फ़ाएदा नहीं पहुँचता है।

चमगादड़ की बनावट

चमगादड़ परिंदों और जानवरों के बीच का जानदार है जिसकी बनावट बड़ी ही अजीब और देखने लायक़ है लेकिन इसकी बनावट परिंदों से ज़्यादा जानवरों से मिलती-जुलती है क्योंकि इसके दो लम्बे कान, दाँत और रोएं भी होते हैं। यही नहीं बल्कि यह बच्चे भी जनती है और उन्हें दूध भी पिलाती है। साथ ही पेशाब भी करती है। यह अपने चारों हाथ-पैर पर चलती है और यह सारी वह बातें हैं जो परिंदों से बिल्कुल नहीं मिलतीं।

चमगादड़ उन परिंदों में से है जो रात में उड़ते हैं और हवा में उड़ते हुए कीड़े-मकोड़े खाते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि चमगादड़ कुछ खाता ही नहीं है और बस हवा से ही अपना पेट भरता है मगर यह बात दो वजहों से ग़लत हैः

1- पहली बात तो यह है कि वह पेशाब भी करता है और बीट भी। अब यह कैसे हो सकता है कि कोई जानदार हवा खाए और पेशाब के साथ-साथ बीट भी करे।

2- चमगादड़ के दाँत होते हैं। अगर उसे कुछ खाने की ज़रूरत ही नहीं थी तो फिर दाँत दिए ही क्यों गए हैं और यह बात हम सब जानते हैं कि इस दुनिया में पाई जाने वाली किसी भी चीज़ में कुछ भी बेकार नहीं बनाया गया है।

यह परिंदा आदमी के लिए बड़ा फ़ाएदेमंद है। यहाँ तक कि इसकी बीट से दवाईयाँ भी बनती हैं और सब से बड़ी बात यह है कि इसकी बनावट कुछ इतनी अजीब है कि इसे देखकर आदमी की ज़बान पर सीधे अल्लाह का नाम आ जाता है। साथ ही चमगादड़ हमें यह भी बताता है कि अल्लाह जिसे चाहता है और जैसा चाहता है वैसा बना देता है क्योंकि वह हर चीज़ का जानने वाला है।

बया नाम की चिड़िया की सूझ-बूझ

आओ उस चिड़िया के बारे में बात करते हैं जिसे ''इब्ने तुमर्राह'' कहते हैं (हमारे यहाँ इस चिड़िया को बया कहते हैं जो गौरय्या से भी छोटी होती है)। एक बार की बात है कि इस चिड़िया ने एक पेड़ पर अपना घोंसला बना रखा था। तभी एक बड़ा सा साँप उसके घोंसले को भांप गया और मुँह खोले हुए उसके घोंसले की तरफ़ बढ़ने लगा। यह देखकर चिड़िया परेशान हो गई कि अब क्या करे? अचानक उसकी नज़र एक काँटेदार घास पर पड़ गई। उसने वह घास उठाकर उस साँप के मुँह पर डाल दी। वह काँटेदार घास साँप के मुँह में ऐसी फंसी कि वह

थोड़ी देर तक तो ज़मीन पर तड़पता रहा और फिर वहीं मर गया।

ज़रा सोचो कि अगर मैंने तुम्हें इस चिड़िया की यह अजीब बात न बताई होती तो क्या तुम्हारे या किसी और के दिमाग़ में यह बात आ सकती थी कि कोई काँटेदार घास भी इतना बड़ा फ़ाएदा पहुँचा सकती है या यह कि कोई छोटा या बड़ा परिंदा इतनी शानदार तरकीब भी लगा सकता है? इसलिए हर चीज़ से आदमी को सीख लेना चाहिए। इन सारी चीज़ों में न जाने कैसे-कैसे फ़ाएदे छुपे पड़े हैं जो तभी सामने आते हैं जब कोई ख़ास बात होती है या जब कहीं कुछ हो जाता है।

शहद की मक्खी को क्यों बनाया गया है?

अब ज़रा और आगे बढ़कर शहद की मक्खियों और उनके एक साथ मिलकर काम करने पर ध्यान दो कि यह कैसे इतनी समझदारी व सूझ-बूझ से अपना छः कोनों वाला घर बनाती है।

अगर तुम ध्यान से देखोगे तो पाओगे कि इन मक्खियों के काम में बड़ी बारीकी और हिकमत लगी हुई है। अगर तुम शहद की मक्खी के काम को ध्यान से देखोगे तो कहोगे कि वाह! कितना शानदार कारनामा है। फिर जब इस काम से मिलने वाले नतीजे (यानी शहद की मक्खी के घर) को देखोगे तो कहोगे कि ज़रूर यह किसी बहुत ही सूझ-बूझ वाले का काम है लेकिन जब इन मक्खियों को देखोगे तो कहोगे कि इन्हें तो ख़ुद अपनी ही ख़बर नहीं है, दूसरों की क्या होगी।

यह सब इस बात का सुबूत है कि शहद की मक्खियों की ज़िन्दगी में दिखने वाला यह तालमेल और इतना मज़बूत सिस्टम ख़ुद इन मक्खियों के बल पर नहीं है बल्कि यह सब उसी का बनाया हुआ है जिसने शहद की मक्खी को भी बनाया है और ऐसा बनाया है कि इतने ताल-मेल से रहना और लोगों को फ़ाएदा पहुँचाना ही उसका नेचर बन गया है।

टिड्डियां: कमज़ोर मगर बड़ी ताक़तवर होती हैं

ज़रा टिड्डी की कमज़ोरी और ताक़त पर ध्यान दो। इसकी बनावट को देखो कि दिखने में यह सब से कमज़ोर है लेकिन अगर टिड्डियों की फ़ौज एक साथ किसी जगह हमला बोल दे तो फिर किसी में ताक़त नहीं होती कि उन्हें भगा सके। यहाँ तक कि अगर दुनिया का बड़े से बड़ा बादशाह भी अपनी पूरी फ़ौज के साथ उन्हें भगाने के लिए निकल खड़ा हो तो वह भी कुछ नहीं कर सकता। क्या यह अल्लाह की ज़बरदस्त कुदरत व ताक़त की निशानी नहीं है कि उसने सब से कमज़ोर जानदार को दुनिया के सब से मज़बूत जानदार की तरफ़ भेजा है और यह मज़बूत आदमी इन छोटे-छोटे से कीड़े-मकोड़ों का बाल भी बेका नहीं कर पाता।

टिड्डियों की फ़ौज

इन टिड्डियों को देखो कि यह किसी सैलाब (बाढ़) की तरह एक-साथ उड़ती हैं और फिर पहाड़ों, रेगिस्तानों, मैदानों और शहरों व गाँवों को अपनी चपेट में ले लेती हैं। यह जब कहीं जाती हैं तो इतनी ज़्यादा होती हैं कि सूरज की रौशनी भी ज़मीन पर नहीं पहुँच पाती और चारों ओर अंधेरा छा जाता है। अगर आदमी टिड्डियों के जैसी फ़ौज बनाना चाहता तो उसे न जाने कितने साल लग जाते? इसलिए अब तुम आसानी से अल्लाह की इस कुदरत व ताक़त की मिसाल दे सकते हो क्योंकि उसके जैसी ताक़त किसी के पास नहीं है।

मछलियों की बनावट

अब मछली की बनावट पर भी ध्यान दो कि उसे जिस काम के लिए बनाया गया है उस काम के लिए वह बिल्कुल ठीक है। मछली को हाथ-पैर नहीं दिए गए हैं क्योंकि उसे चलने की ज़रूरत ही नहीं थी और उसे तो पानी में रहना था। मछली के फेफड़े भी नहीं होते क्योंकि वह पानी के अंदर साँस ले ही नहीं सकती। हाथ-पैरों के बजाए उसे दो मज़बूत पर दिए हैं जिनकी मदद से वह पानी को उसी तरह काटती है जैसे नाव चलाने वाले दोनों चप्पू चलाते हुए अपनी नाव को पानी में आगे बढ़ाते हैं। उसके बदन पर छिलकों की एक चादर सी भी मंढ़ दी गई है और यह छिलके एक-दूसरे के अंदर घुसकर उसी तरह मछली को हर ख़तरे से बचाते हैं जिस तरह लौहे के कवच की कड़ियाँ एक-दूसरे के अंदर घुसकर आदमी को बचाती हैं।

मछलियों की आँखें कमज़ोर होती हैं और पानी की वजह से उन्हें देखने में दिक़्क़त होती है इसलिए उसकी इस कमी को इस तरह से पूरा किया गया है कि उसे सूँघने की ताक़त बहुत तेज़ दी गई है। मछली बहुत दूर से ही अपना खाना सूँघकर उस तक पहुँच जाती है और सूँघते-सूँघते ही अपने शिकार पर हमला बोल देती है। अगर मछली के अंदर सूँघने की ताक़त न होती तो फिर वह अपना पेट कैसे भर पाती क्योंकि उसे पता ही न चल पाता कि उसका दाना-पानी कहाँ है। मछली में उसके मुँह और कानों के बीच छेद होते हैं जिससे उसका मुँह और कान आपस में मिल जाते हैं। वह अपने मुँह में पानी भरकर अपने कानों के इन्हीं छेदों से बाहर निकालती है ताकि वह भी दूसरे जानदारों की तरह खुली हवा में राहत भरी साँस लेती रहे।

इतनी सारी मछलियाँ

अब थोड़ा मछलियों की इतनी सारी नस्लों और उन की अलग-अलग ख़ास बातों पर भी ध्यान दो। मछली के अंदर इतने सारे अंडे होते हैं कि उन्हें गिना भी नहीं जा सकता। ऐसा इसलिए है क्योंकि मछली खाने वाले लोग बहुत ज़्यादा हैं। यहाँ तक कि जंगल में रहने वाले जानवर भी मछली के शिकार के लिए दरियाओं के किनारे ताक में खड़े हो जाते हैं और जैसे ही उन्हें मछली दिखाई पड़ती है वैसे ही उस पर झपट पड़ते हैं। साथ ही ऐसा भी नहीं है कि बस ज़मीन पर रहने वाले जानवर ही मछली का शिकार करते हों बल्कि परिंदे भी मछली खाते हैं, इन्सान भी मछली खाते हैं और ख़ुद मछलियाँ भी मछलियों का शिकार करके अपना पेट भरती हैं। इसलिए अल्लाह ने इतनी सारी मछलियाँ पैदा की हैं उन्हें गिना भी नहीं जा सकता।

अगर यह देखना चाहते हो कि इस दुनिया को बनाने वाले अल्लाह की हिकमत कहाँ-कहाँ तक फैली हुई है और उसके मुक़ाबले में आदमी की जानकारी कितनी कम है तो तुम मछलियों, पानी में रहने वाले दूसरे जानदारों, सीपों-मोतियों और पानी वाले दूसरे जानदारों को देखो जिन्हें तुम गिन भी नहीं सकते और न ही तुम इन सब चीज़ों से मिलने वाले फ़ाएदों को समझ सकते हो। अगर समझोगे भी तो बस थोड़ा-बहुत ही और वह भी हालात के तहत यानी जब कोई बात सामने आएगी तब ही समझ पाओगे जैसे आदमियों को घोंघे का फ़ाएदा तब पता चला जब उन्होंने लाल रंग को पहचाना और वह इस तरह कि एक बार उन्होंने किसी दरिया के किनारे एक कुत्ते को देखा जो दरिया के अंदर जाकर एक ऐसा कीड़ा खा रहा था जिसे खाने से उसका मुँह लाल रंग का हो गया था। जैसे ही लोगों ने कुत्ते का लाल रंग में रंगा मुँह देखा तो उन्हें लाल रंग बड़ा पसन्द आया और इस तरह लाल रंग का पता चला जिसके बाद लाल रंग इस्तेमाल होने लगा। इस तरह की बहुत सी बातें हैं जो लोगों को तभी समझ में आई हैं जब उनके सामने कुछ नया हुआ है।

तौहीद

पर तीसरा लेक्चर

(दुनिया के बारे में)

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैंः

शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमें सारे बन्दों में चुना है और किसी को भी हम से बड़ा नहीं बनाया है। अल्लाह ने अपने इल्म[1] से हमें चुना है और अपने हिल्म (The Forbearance) से हमारी मदद की है। अब जो भी हम से दूर होगा वह जहन्नम में जाएगा और जो हमारे सिखाए रास्ते पर चलेगा उसका ठिकाना जन्नत है।

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! मैंने तुम्हें इन्सानों के बारे में, उनके तरह-तरह के हालात के बारे में, उनके अंदर छुपी हुई गहरी-गहरी बातों के बारे में और जो कुछ इन सारी बातों से सीखा जा सकता है उसके बारे में तुम्हें बता दिया है। साथ ही मैंने तुम्हें जानवरों और परिंदों के बारे में भी काफ़ी कुछ बता दिया है।

आज मैं तुम्हें आसमान, सूरज, चाँद-सितारों, दिन-रात, गर्मी, ठंड, हवा, चारों अनासिर[2] यानी मिट्टी, पानी हवा व आग,

---

[1] ज्ञान
[2] तत्वों

बारिश, बड़े-बड़े पत्थरों, चट्टानों, पहाड़ों, पेड़-पौधों और इस तरह की दूसरी चीज़ों में पाई जाने वाली ऐसी-ऐसी बातें बताऊँगा जिनसे काफ़ी कुछ सीखा जा सकता है।

आसमान नीला क्यों है?

आसमान के रंग और उसके अंदर छुपी बातों पर ध्यान दो। आसमान का यह रंग हर तरह से ठीक और आँखों की रौशनी के लिए सब से अच्छा है। यहाँ तक कि अगर किसी की आँख कमज़ोर पड़ जाए तो डाक्टर और हकीम भी उससे यही कहते हैं कि गहरे हरे रंग की तरफ़ देखा करो। कुछ बड़े हकीम तो यह भी कहते हैं कि जिसकी आँख कमज़ोर हो गई हो उसे पानी से भरे हुए हरे रंग के बर्तन को देखते रहना चाहिए।

ज़रा देखो कि अल्लाह ने कैसे आसमान को उस रंग से बनाया है जो आँखों को बड़ा अच्छा लगता है और जिसे देखने से आँखें कभी नहीं थकतीं। जिस चीज़ को पढ़े-लिखे लोग सालों साल के तजुर्बों के बाद समझ पाए हैं उसे पहले से ही इस दुनिया के बनाने वाले ने इस आसमान में रख दिया है ताकि सीख लेने वाले सीख ले सकें और अल्लाह को न मानने वाले भी इस बारे में सोचने पर मजबूर हो जाएं।

सूरज के निकलने और डूबने का फ़ाएदा

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! सूरज के निकलने-डूबने और दिन-रात के इन चक्करों पर भी ध्यान दो। अगर सूरज न निकला करता तो सारी दुनिया तहस-नहस हो जाती। लोग न तो अपने काम कर पाते और न ही ठीक से जी पाते क्योंकि चारों ओर अंधेरा छाया होता और रौशनी के बिना भला कैसा जीना और जीने में कैसा मज़ा? इसलिए इस बात में तो कोई शक नहीं है कि सूरज तो हमें हर

हाल में चाहिए था। इस बात को साबित करने के लिए किसी और सुबूत की कोई ज़रूरत नहीं है। लेकिन सूरज डूबता क्यों है, इस पर ध्यान देने की ज़रूरत है। अगर सूरज न डूबता तो लोग परेशान हो जाते और उन्हें आराम न मिल पाता, जबकि आदमी के बदन को दूसरी हर चीज़ से बढ़कर आराम, दिमाग़ को सुकून और खाए हुए खाने को पचाने और फिर उस खाने को पूरे बदन में पहुँचाने के लिए वक़्त चाहिए होता है। इससे हटकर यह बात भी है कि अगर सूरज न डूबता तो आदमी अपने लालच भरे नेचर की वजह से दिन-रात काम करता रहता जिससे उसका बदन थक-थक कर बेकार हो जाता। बहुत सारे लोग ऐसे भी हैं कि अगर रात न हो और चारों ओर अंधेरा न फैले तो वह माल-दौलत कमाने और अपने ख़ज़ाने भरते रहने की लालच में कभी आराम ही न करें।

साथ ही हर वक़्त सूरज के निकले रहने से ज़मीन तप-तपकर आग की तरह गर्म हो जाती और सारे जानदार गर्मी से मर जाते। यहाँ तक कि न कहीं घास और पेड़-पौधे दिखाई पड़ते, न कहीं हरियाली।

इसलिए अल्लाह ने यह तय किया कि सूरज एक वक़्त तक निकलने के बाद डूब जाया करे, ठीक उसी तरह जैसे लोग काम करने के लिए चिराग़ जला लेते हैं और काम ख़त्म होने पर आराम करने के लिए चिराग़ को बुझा देते हैं। रौशनी और अंधेरा एक-दूसरे के बिल्कुल उलट हैं लेकिन यह दोनों अल्लाह के हुक्म पर इतनी पाबन्दी से दौड़ रहे हैं कि सारी दुनिया का काम बड़ी आसानी से चल रहा है।

साल में चार मौसम क्यों आते हैं?

अब ज़रा आगे बढ़कर सूरज के निकलने और डूबने से बनने वाले साल के चार मौसमों पर भी ध्यान दो। जाड़े के मौसम में पेड़-पौधों के अंदर सूरज की गर्मी समा जाती है जिससे वह

फलदार हो जाते हैं। इसी तरह हवा गाढ़ी हो जाती है और उसमें तेज़ी आ जाती है। हवा की इस तेज़ी व गाढ़ेपन से बादल और बारिश का चक्कर शुरू होता है। जानदारों के बदन मज़बूत और ताक़तवर हो जाते हैं।

फिर बसंत का मौसम आता है तो वही गर्मी जो जाड़े के मौसम में पेड़-पौधों के अंदर बैठ गई थी हरकत में आ जाती है जिससे कलियाँ, फूल और बौर पेड़ों पर निकल आते हैं। हर जगह हरियाली छा जाती है। साथ ही जानवर भी अपनी नस्ल बढ़ाने की तैयारी में लग जाते हैं और जोश में आ जाते हैं।

गर्मी के मौसम में हवा बहुत गर्म हो जाती है जिससे फल पकने लगते हैं। बदन के अंदर की फ़ाल्तू और नुक़सान देने वाली चीज़ें बाहर निकलने लगती हैं। ज़मीन का ऊपरी हिस्सा सूखने लगता है जिससे उस पर काम करना और घर बनाना आसान हो जाता है।

फिर पतझड़ का मौसम आ जाता है और इस मौसम में हवा साफ़ होने लगती है। बीमारियाँ दूर होने लगती हैं। बदन सेहतमंद होने लगते हैं और रातें लम्बी हो जाती हैं। इस मौसम से फ़ाएदा उठाकर बहुत सारे काम किए जा सकते हैं। मौसम अच्छा हो जाता है। इस जैसी और भी बहुत सारी बातें हैं कि अगर उन सब पर चर्चा की जाए तो बात बहुत लम्बी हो जाएगी।

सूरज से टाइम व मौसम की पहचान कैसे होती है?

अब तुम सूरज की चाल और उसके बारह बुर्जों में जाने पर ध्यान दो जिससे एक साल बनता है। सूरज के इन्हीं चक्करों से चार मौसम 'जाड़ा, गर्मी, बसंत और पतझड़' बनते हैं। सूरज की इसी चाल से वक़्त पूरा होने पर फल और अनाज भी तैयार होता है। फिर अगले साल वह नए सिरे से अपने निकलने और फलने- फूलने की तैयारियों में लग जाते हैं। क्या तुम नहीं देखते हो कि एक शम्सी साल (सौर वर्ष/ Solar Year) *हमल* (Aries)

से अगले साल के *हमल* तक होता है। जब से यह दुनिया बनी है तब से अभी तक महीनों और साल को तय करने का फ़ार्मूला यही रहा है। लोग अपनी उम्र, अपने टाइम, अपने लेन-देन और अपने दूसरे मामलों का हिसाब-किताब भी इसी फ़ार्मूले की मदद से ही लगाते आ रहे हैं। सूरज के एक चक्कर से एक साल पूरा हो जाता है और टाइम का हिसाब-किताब भी ठीक हो जाता है।

ज़रा देखो कि इस दुनिया को बनाने वाले ने सूरज के निकलने और डूबने में कैसी-कैसी गहरी बातें रख दी हैं! अगर सूरज आसमान में एक ही जगह टिका रहता तो उसकी किरनें और उसके फ़ाएदे हर जगह न पहुँच पाते क्योंकि पहाड़ और ऊँची-ऊँची दीवारें बहुत सी जगहों पर धूप को न पहुँचने देतीं। इसलिए अल्लाह ने यह तय किया कि सूरज सुबह में पूरब से निकले और फिर पश्चिम तक जो-जो चीज़ उसके सामने आती जाए उस पर चमकता रहे। इस तरह उसकी किरनें आगे बढ़ती रहती हैं और हर चीज़ पर पड़ती रहती हैं जिसके बाद वह आख़िर में पश्चिम में चला जाता है ताकि अब तक जिन जगहों पर उसकी रौशनी व किरनें न पहुँची हों वहाँ भी पहुँच जाएं और इस तरह ज़मीन की कोई भी जगह ऐसी नहीं बचती जहाँ सूरज की किरनें न पहुँचती हों और जो उससे फ़ाएदा न उठा पाती हो।

ज़रा सोचो कि अगर सूरज किसी साल या किसी साल के किसी महीने में काम करना बंद कर दे और दुनिया वालों पर न चमके तो लोगों का हाल क्या होगा? भला वह ज़िन्दा रह पाएंगे? क्या तुम नहीं देखते कि लोगों के लिए ही यह सब किया गया है। सच यह है कि इन सब चीज़ों के बिना आदमी का काम ही नहीं चल पाता मगर यह सारी चीज़ें बिना थके और बिना रूके हर पल अपना काम करती रहती हैं। दुनिया वालों को सुख पहुँचाने और उन्हें बाक़ी रखने के लिए कोई भी चीज़ अपने वक़्त से एक घड़ी भी पीछे नहीं हटती।

चाँद क्यों बनाया गया है?

अब चाँद को देखो। चाँद का मामला तो बिल्कुल साफ़ है क्योंकि लोग चाँद से ही अपने क़-म-री साल (चंद्र वर्ष/Lunar Year) का हिसाब-किताब लगाते हैं। यह चाँद वाला साल सूरज वाले साल से बिल्कुल अलग होता है क्योंकि चाँद वाला साल, साल के चारों मौसमों और फ़सलों व फलों के पकने के लिए काफ़ी नहीं है। इसीलिए चाँद वाले साल के महीने सूरज वाले साल के महीनों से बिल्कुल अलग होते हैं। तभी तो ऐसा होता है कि चाँद वाले साल का कोई महीना कभी जाड़े में पड़ता है और कभी गर्मी में।

ज़रा अंधेरी रात में चाँदनी और चाँद के चमकने को भी देखो। वैसे तो जानदारों के आराम के लिए और हवा की गर्मी कम होने के लिए रात में अंधेरा होना ज़रूरा था मगर यह भी सही नहीं था कि पूरी तरह से अंधेरा छा जाए और कोई भी काम न किया जा सके क्योंकि कभी-कभी लोगों को रात में भी काम करना होता है क्योंकि दिन कम पड़ जाता है जिसकी वजह से कुछ काम रात में भी करना पड़ते हैं। साथ ही ऐसा भी होता है कि कभी-कभी दिन में गर्मी बहुत पड़ने लगती है और बस रात में ही काम किया जा सकता है जैसे ज़मीन पर हल चलाना, ईंटें बनाना, लकड़ियाँ काटना या इस तरह के दूसरे काम। साथ ही चाँद की रौशनी लोगों के लिए एक बहुत बड़ी मदद भी है कि अगर ज़रूरत पड़ जाए तो वह रात में भी अपने काम कर लें। इतना ही नहीं बल्कि इसका एक फ़ाएदा यह भी है कि सफ़र करने वाले भी चाँद की रौशनी में अपना सफ़र कर सकते हैं।

महीने की कुछ रातों में तो चाँद पूरी तरह से चमकता है और कुछ रातों में ग़ायब हो जाता है। अल्लाह ने चाँद की रौशनी को सूरज की रौशनी से कम रखा है। अगर चाँद की रौशनी भी सूरज की रौशनी के बराबर होती तो फिर लोग दिन की तरह रात में भी अपने कामों में जुटे रहते जिसकी वजह से उन्हें आराम ही न मिल पाता और फिर आख़िर में उनका बदन

काम करना बंद कर देता और वह मर जाया करते। इसलिए अल्लाह ने यह फ़ैसला किया कि महीने की कुछ रातों में चाँद निकले और कुछ रातों में ग़ायब हो जाए। कभी उसकी रौशनी ज़्यादा हो और कभी कम। कभी चाँद ग्रहण भी हो जाता है। यह सब इस बात का सुबूत है कि इस दुनिया को बनाने वाला सब से बड़ा है और उसकी क़ुदरत व ताक़त के बराबर किसी की ताक़त नहीं है। उसी ने इस दुनिया और इस दुनिया में रहने वालों के लिए यह सारा सिस्टम बनाया है। जिसके पास अक़्ल और समझ होगी वही इन सारी बातों से सीखेगा और अपने पालने वाले को पहचान पाएगा।

आसमान में चमकते हुए सितारे

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! सितारों और उनकी अलग-अलग चाल पर भी ध्यान दो। कुछ सितारे ऐसे हैं जो अपने ऑर्बिट से बाहर ही नहीं निकलते और अपने साथी सितारों के साथ ही घूमते रहते हैं। कुछ सितारे ऐसे हैं जो बिल्कुल आज़ाद हैं और एक बुर्ज से दूसरे बुर्ज में आते-जाते रहते हैं और अलग-अलग रास्तों पर चलते हैं। हर सितारे की चाल दो तरह की होती हैः एक आम जो पूरब से पश्चिम की ओर होती है और दूसरी वह चाल जो हर सितारे की अपनी ख़ुद की चाल होती है और यह चाल पूरब की तरफ़ होती है जैसे कोई चींटी किसी चक्की के पत्थर पर चल रही हो। ऐसे में चक्की का पत्थर दाहिनी तरफ़ घूम रहा होता है और चींटी अपनी बाँई तरफ़ चल रही होती है। इस तरह चींटी की एक साथ दो तरह की चाल होती हैः एक ख़ुद उसकी अपनी चाल जो वह अपनी मर्ज़ी से चलती है और दूसरी चाल चक्की के पत्थर वाली चाल जो उसे ज़बरदस्ती चलना पड़ती है। यह दूसरी चाल चक्की का पत्थर चींटी को पीछे से ढकेल कर ज़बरदस्ती चलवाता है।

ग़लत सोच रखने वाले इन लोगों से ज़रा पूछो कि क्या यह सारे सितारे अपने आप बन गए हैं? क्या इन्हें किसी ने नहीं बनाया है? क्या यह बेकार, फ़ाल्तू और बिना किसी बनाने वाले के बन गए हैं? अगर ऐसा है तो फिर यह सारे सितारे एक साथ मिलकर क्यों मूवमेंट नहीं करते या क्यों सारे के सारे अपनी मर्ज़ी के मालिक नहीं हैं या यह सब बुर्जों के अंदर ही मूवमेंट क्यों नहीं करते? अगर यह सब कुछ अपने आप हो गया है तो फिर सितारों में यह दो तरह का इतना नपा-तुला मूवमेंट कहाँ से आ गया? इसका मतलब बस यही है कि इन दोनों तरह के सितारों को किसी जानकार हस्ती ने बड़े हिसाब-किताब से बनाया है। अपने आप कुछ भी नहीं बना है जैसा कि अल्लाह को न मानने वाले कहते फिरते हैं।

अब अगर कोई पूछने लगे कि ऐसा क्यों है कि कुछ सितारे तो एक साथ मिलकर मूवमेंट करते हैं और कुछ आज़ाद हैं। इन दोनों सितारों का मूवमेंट अलग-अलग क्यों है? तो इस बात का जवाब यह है कि अगर सारे सितारे एक ही जगह पर मूवमेंट करते रहते तो फिर वह फ़ाएदा न मिल पाता कि जो सितारों के एक बुर्ज से दूसरे बुर्ज में जाने से मिलता है क्योंकि कौन सा साल है या कौन सा महीना या कौन सा मौसम आने वाला है, यह सब सूरज और सितारों के मूवमेंट से ही तय होता है। अगर यह सारे सितारे एक बुर्ज से निकलकर दूसरे बुर्ज में जाते रहते तो भी मुसीबत हो जाती क्योंकि फिर उन्हें पहचानना ही मुश्किल हो जाता। किसी के मूवमेंट को तभी समझा जा सकता है जब बीच में कुछ मन्ज़िलें और ठहराव भी हों जैसे अगर कोई मुसाफ़िर कहीं जा रहा हो तो वह अपना रास्ता मील के पत्थरों से पहचानता है यानी जब कोई मन्ज़िल आ जाती है तो ठहर जाता है और फिर आगे बढ़ जाता है। अगर सारे सितारे एक ही जैसे होते तो जो सिस्टम आज हम देख रहे हैं यह कहीं से कहीं तक नज़र न आता। फिर जो फ़ाएदे हमें इस सिस्टम और सितारों के इस मूवमेंट से मिल रहे हैं वह न मिल पाते।

इन सारी बातों को ध्यान में रखकर क्या कोई कह सकता है कि यह सब अपने आप हो गया है और किसी बनाने वाले ने इन्हें नहीं बनाया है?

इसलिए सितारों का यह मूवमेंट जो दो तरह का है, यह ख़ुद अपने आप में इस बात का एक बहुत बड़ा सुबूत है कि यह दुनिया पूरी तरह से हिसाब-किताब के साथ और किसी ख़ास काम के लिए बनाई गई है। अपने आप कुछ भी नहीं बना है।

कुछ ख़ास सितारों के फ़ाएदे

अब उन सितारों के बारे में सोचो जो किसी साल तो दिखाई पड़ते हैं और किसी साल ग़ायब हो जाते हैं जैसे सुरय्या (Seven Sisters), Gemini, दो सितारे Sirius और Canopus। अगर यह सितारे एक साथ दिखाई पड़ते तो लोग इन सितारों से कोई फ़ाएदा न उठा पाते। फिर Taurus और जौज़ा सितारों के निकलने या डूबने से लोगों को अपने कामों में जो फ़ाएदा होता है वह बिल्कुल न हो पाता। इसलिए इन में से हर सितारा निकलता भी है और डूबता भी है और सितारों का यह निकलना-डूबना एक जैसा नहीं है ताकि लोग इन में से हर सितारे से जो फ़ाएदा उठाना चाहें उठा लें। साथ ही सुरय्या और उसके साथियों का निकलना या डूबना भी बेवजह नहीं है बल्कि इस में भी फ़ाएदे छुपे हुए हैं। अब यह बात कि ‘‘सात सितारे’’ (Ursa Major) हमेशा क्यों निकले रहते हैं तो इसके पीछे भी एक भलाई है क्योंकि यह सातों सितारे लोगों के लिए एक निशानी की तरह हैं जिनसे लोग खुले मैदानों और समुन्द्रों में अपना रास्ता तलाश करते हैं। यह सितारे कभी भी आँखों से ओझल नहीं होते ताकि लोग रात में जहाँ भी और जिधर भी जाना चाहें आराम से जा सकें। इसलिए सितारों के डूबने और निकलने, दोनों बातों में ही आदमी की भलाई है। इससे हटकर इन सितारों से ख़ास वक़्तों में होने वाले कुछ दूसरे फ़ाएदे भी हैं

जैसे खेती कब करना है, फ़सल कब उगाना है, मैदानों या दरियाओं में सफ़र करते हुए दिशाओं को तय करना या हवा और जाड़ा-गर्मी का मौसम भी इन्हीं सितारों से तय होता है।

लोग रातों को भयानक और डरावने मैदानों या समुन्द्रों की ख़तरनाक मौजों में सफ़र करते हुए इन्हीं सितारों से मदद लेते हैं।

खुले आसमान के सीने में यह सितारे कभी आगे बढ़ते हैं, कभी पीछे हटते हैं, कभी निकलते हैं और कभी छुप जाते हैं... इन सारी चीज़ों में आदमी के लिए बहुत गहरी-गहरी बातें छुपी हैं। खुले आसमान में मूवमेंट करते यह सितारे इतनी स्पीड से चलते हैं कि आदमी सोच भी नहीं सकता।

अगर सूरज, चाँद और सितारे हमारे आसपास इतनी भयानक स्पीड के साथ मूवमेंट कर रहे होते ताकि हम उनकी स्पीड को समझ सकें तो क्या उनसे निकलकर आँखों को चकाचौंध करने वाली रौशनी और गरज-चमक या गड़गड़ाहट हमारी आँखों को बेकार न कर देती और हम सब अंधे न हो जाते? जैसे अगर किसी कमरे में कुछ लोग बैठे हुए हों और उनके चारों ओर कुछ जलते हुए चिराग़ बराबर घूम रहे हों तो उन सब लोगों की आँखें चुंधिया जाएंगी और वह चकराकर गिर पड़ेंगे।

ज़रा सोचो कि जानकार और हकीम अल्लाह ने इन सितारों की स्पीड को हम से इतनी दूर रखा है कि हमारी आँखों को कोई नुक़सान ही नहीं होता और न ही हमारी आँखें काम करना बंद करती हैं। साथ ही उनकी स्पीड भी इतनी रखी है कि जितनी स्पीड से उन्हें मूवमेंट करना था उसमें कोई कमी न आ जाए। दूसरी बात यह कि जितनी रौशनी हमें चाहिए थी वह भी हमें मिल रही है ताकि अगर रात में चाँद न निकले तो भी आँखों के सामने बिल्कुल अंधेरा न हो जाए कि आदमी कहीं जा ही न सके या कोई काम ही न कर सके। अगर इन सितारों की रौशनी न होती तो आदमी अंधेरी रात में अपनी जगह से हिल भी न पाता और अगर कभी कोई अचानक मुश्किल आ जाती या कोई बहुत ज़रूरी काम पड़ जाता तो आदमी हाथ पर हाथ धरे बैठा रह

जाता। अगर हर तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा होता तो फिर रात में कुछ भी न हो पाता और वह जहाँ होता बस वहीं रह जाता।

अल्लाह के इस ज़बरदस्त सिस्टम और इस सटीक हिसाब-किताब पर ध्यान दो कि उसने दुनिया में अंधेरा भी रखा क्योंकि दुनिया में अंधेरे की भी ज़रूरत थी और इसी अंधेरे के अंदर ज़रूरत भर रौशनी भी रख दी जिस पर हम बात कर चुके हैं।

सूरज और चाँद-सितारे अल्लाह के होने का एलान करते हैं

सूरज, चाँद और सितारों व बुर्जों से बने इस आसमानी सिस्टम पर ध्यान दो कि कैसे यह सिस्टम बिना किसी गड़बड़ी के चलता चला आ रहा है जिससे दिन-रात बनते हैं, ज़मीन में चारों फ़सलें उगती हैं और जानवरों, पेड़-पौधों व इन्सानों समेत सारे जानदार फ़ाएदा उठाते हैं जिसके बारे में मैं तुम्हें काफ़ी कुछ बता चुका हूँ।

क्या कोई समझदार आदमी भला ऐसा भी सोच सकता है कि यह इतना शानदार सिस्टम, इतना ज़बरदस्त तालमेल और इतना नपा-तुला दुनिया का कारख़ाना अल्लाह के बिना चल रहा है?

अब अगर कोई यह कहे कि यह सारा सिस्टम बस इत्तेफ़ाक़ (संयोग) से ही ठीक चल रहा है तो हम इसके जवाब में कहेंगे कि यही बात लकड़ी के कुछ टुकड़ों से बने रहट के बारे में क्यों नहीं कही जाती है जो बाग़ों में लगे पेड़-पौधों को पानी देने का काम करता है?

अगर कोई लकड़ी से बनी इस मशीन के बारे में इस तरह की बातें सोचने लगे और लोग उसकी ज़बान से ऐसी बातें सुनें तो उसके बारे में क्या सोचेंगे और क्या कहेंगे? जब किसी छोटे से बाग़ में लगे हुए लकड़ी के रहट के बारे में ऐसी बात नहीं कही जा सकती कि वह बिना किसी बनाने वाले के बन गया है

और चल रहा है तो फिर इतनी बड़ी दुनिया के बारे में कोई यह बात कैसे सोच सकता है कि इतने हिसाब-किताब वाली यह दुनिया बिना किसी बनाने वाले के बन गई है और चल रही है ?

अगर दिमाग़ को चकरा देने वाला दुनिया का यह सिस्टम किसी आम मशीन की तरह दो पल के लिए भी ठहर जाए तो क्या लोग कुछ कर पाएंगे ?

दिन-रात की लम्बान

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अब ज़रा दिन-रात की लम्बान पर ध्यान दो कि कैसे इन्हें लोगों की भलाई के हिसाब से बनाया गया है। आमतौर पर हर जगह दिन या रात की लम्बान 15 घन्टों से ज़्यादा नहीं होती है। ज़रा सोचो कि अगर यह लम्बान सौ या दो सौ घन्टे की होती तो क्या होता ? अगर ऐसा होता तो क्या इन्सानों, जानवरों और पेड़-पौधों समेत हर चीज़ ख़त्म न हो जाती ? जानवर और लोग मर जाते क्योंकि फिर जानवर बस खाते ही रहते और उधर आदमी बस काम ही करता रहता और इस तरह जानवर खा-खाकर और लोग काम कर-करके मर जाते। पेड़-पौधों पर जब एक लम्बे वक़्त तक सूरज की रौशनी और उसकी गर्मी पड़ती रहती तो यह सब भी सूख जाते और हरियाली ख़त्म हो जाती।

रात का मामला भी ऐसे ही है। अगर रात भी दिन की तरह बहुत लम्बी हुआ करती तो सारे जानदार भूखे मर जाते क्योंकि फिर न कोई कुछ काम कर पाता और न अपनी रोज़ी-रोटी के लिए हाथ-पैर मार पाता। पेड़-पौधे भी सूख जाते क्योंकि उन्हें अपने हिसाब से जितनी गर्मी चाहिए उतनी न मिल पाती। तुम ने देखा ही होगा कि वह पेड़-पौधे भी सूख जाते हैं जिन्हें सूरज की धूप नहीं मिल पाती है।

गर्मी-जाड़े का फ़ाएदा

जाड़े और गर्मी पर भी ग़ौर करो कि कैसे यह दोनों दुनिया को संभाले हुए हैं। इन दोनों मौसमों की तेज़ी, कमी और बैलेंस की वजह से ही साल के चार मौसम बनते हैं और साल के बारह महीनों में हवा बदलती रहती है और ऐसा इसलिए है क्योंकि आदमी की भलाई इसी में है।

साथ ही यह दोनों मौसम आदमी के बदन को ठोक-बजाकर ठीक भी करते हैं और उसे मज़बूत व सेहतमंद बनाते हैं। अगर जाड़ा व गर्मी न होती और बदन ठंडा व गर्म न होता तो फिर बदन बेकार और ख़राब हो जाया करते।

यह भी देखो कि यह दोनों मौसम कैसे धीरे-धीरे एक-दूसरे में बदल जाते हैं। एक मौसम कम होता है तो दूसरा धीरे-धीरे बढ़ जाता है और फिर बढ़ता-बढ़ता अपने आख़िरी दर्जे पर पहुँच जाता है। अगर यह मौसम एक दम से बदल जाया करते तो फिर बहुत सी बीमारियाँ पैदा हो जातीं और बदन को बहुत नुक़सान पहुँचा करता। यह बिल्कुल ऐसे ही है जैसे तुम में से कोई बहुत गर्म बाथरूम से निकल कर एक दम से बहुत ठंडी हवा में चला जाए। सभी जानते हैं कि जो भी ऐसा करेगा उसके बदन को इस काम से बड़ा भयानक नुक़सान पहुँचेगा।

इसलिए अगर अल्लाह ने यह तय किया है कि जाड़ा और गर्मी धीरे-धीरे आया और जाया करें तो यह जानदारों के बदन की भलाई के लिए ही है। अगर इस काम के पीछे कोई हिसाब-किताब नहीं है तो फिर यह मौसम एक दम से क्यों नहीं बदल जाते हैं। आराम-आराम से क्यों आते हैं?

अब अगर कोई कहे कि धीरे-धीरे मौसम सूरज की चाल और ज़मीन से उसकी दूरी के बढ़ने या घटने से बदलता है तो उस आदमी से पूछना चाहिए कि सूरज की इस चाल और उसकी दूरी के घटने या बढ़ने की वजह क्या है? अगर वह कहे कि इसकी वजह पूरब-पश्चिम के बीच पड़ने वाली सूरज की किरणें हैं तो इसकी वजह भी पूछी जाना चाहिए। वह जो भी जवाब देता

जाएगा उसके पीछे से एक नया सवाल उभरता जाएगा कि ऐसा क्यों है या वैसा क्यों है? और आख़िर में आदमी को मानना ही पड़ेगा कि इस दुनिया को जानकार और क़ुदरत वाले अल्लाह ने ही बनाया है।

अगर गर्मी न होती तो कड़वे-कड़वे और कच्चे फल कभी न पकते और न मीठे बनते जिसकी वजह से लोग न तो रसदार फलों का मज़ा ले पाते और न ही सूखे फलों का। अगर जाड़ा न होता तो ज़मीन पर इस तरह से हरियाली भी न होती। फिर न आदमी अनाज व दालें खा पाता और न अपना पेट भर पाता। उसके हाथ इतना कुछ आता ही नहीं कि वह अगले साल की खेती के लिए कुछ बचाकर रख सके।

क्या तुम नहीं देखते हो कि जाड़ा-गर्मी दोनों मौसमों के कितने-कितने फ़ाएदे हैं मगर इतने फ़ाएदों के बाद भी यह मौसम आदमी के बदन को कितना दुख पहुँचाते हैं और लोग इन से कितना तंग आ जाते हैं? समझदार आदमी के लिए इस के अंदर भी सीख है और यह इस बात का सुबूत भी है कि इस दुनिया को बनाने वाले जानकार अल्लाह ने इस दुनिया की हर चीज़ आदमी की भलाई के लिए ही बनाई है।

हवा के फ़ाएदे

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अब मैं तुम्हें हवा और उसके फ़ाएदों के बारे में बताता हूँ। क्या तुम नहीं देखते कि अगर कुछ वक़्त के लिए हवा चलना बन्द हो जाए तो कैसी मुसीबत आ जाती है। साँस न ले पाने की वजह से आमदी की जान जोखिम में पड़ जाती है। सेहतमंद बीमार और बीमार मौत की कगार पर पहुँच जाते हैं। फल सड़ने लगते हैं। अनाज और सब्ज़ियाँ ख़राब हो जाती हैं। चारों ओर महामारी फैल जाती है और खाने-पीने की हर चीज़ बर्बाद हो जाती है। इससे पता चलता है कि हवा के चलने में भी

आदमी की ही भलाई है और यह सब भी अल्लाह की मर्ज़ी से ही होता है।

आवाज़ और हवा का रिश्ता

अब मैं तुम्हें हवा की एक बहुत ही ख़ास बात बताता हूँ। आवाज़ एक ऐसा असर है जो चीज़ों के टकराने से हवा में पैदा होता है और फिर इसी आवाज़ को हवा हमारे कानों तक पहुँचाती है। लोग इसी आवाज़ के सहारे ही तो एक-दूसरे से दिन-रात बातें किया करते हैं।

अगर यह आवाज़ें हवा में ही रह जाया करतीं जैसे लिखावट काग़ज़ पर रह जाती है तो यह पूरी दुनिया लोगों की आवाज़ों से भर जाती जिसका लोगों को बहुत भारी नुक़सान उठाना पड़ता। फिर जल्दी-जल्दी हवा को बदलना भी पड़ता। ठीक उसी तरह जैसे लिखते-लिखते जब काग़ज़ भर जाता है तो उसे बदलना पड़ता है बल्कि काग़ज़ से ज़्यादा हवा को बदलना पड़ता क्योंकि लोग जो बातें लिखते हैं वह उन बातों से कहीं कम होती हैं जो वह बोलते हैं। जानकार अल्लाह ने इस हवा को एक छुपे हुए काग़ज़ के जैसा बनाया है। यह हवा लोगों की आवाज़ों को अपने अंदर समो लेती है और फिर पूरी दुनिया में लोगों की इस ज़रूरत को पूरा करती है। इसके बाद इन आवाज़ों को मिटा देती है और फिर नए सिरे से तैयार हो जाती है। यह काम बिना किसी रूकावट के ऐसे ही चलता चला आ रहा है।

तुम्हें चाहिए कि हवा और उसके अंदर छुपे हुए फ़ाएदों को समझो और उन से सीख लो। बदन इसी हवा की वजह से ज़िन्दा हैं और अगर यह हवा न होती तो आदमी साँस ही न ले पाता। यह बाहर से अंदर जाने वाली हवा ही है जो बदन को अंदर जाकर ज़िन्दगी देती रहती है।

यही हवा है जो आवाज़ों को बहुत दूर-दूर से लाकर हमें सुनाती है। ख़ुशबुओं को इधर से उधर ले जाती है। क्या तुम ने

नहीं देखा है कि जिधर से हवा आती है उधर ही से बू आती है। आवाज़ भी इसी तरह से है कि जिधर से हवा आती है उधर ही से आवाज़ भी आती है।

जाड़े और गर्मी के मौसम में लोगों के लिए बहुत सारी भलाईयाँ छुपी हुई हैं। इन मौसमों को हवा ही लेकर आती है। तेज़ आंधी भी इसी हवा के ख़ानदान से है। जब हवा चलती है तो बदन को ठंडक मिलती है। यही हवा अपने कंधों पर बिठाकर बादलों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है। फिर यही हवा बादलों को इस तरह एक साथ इकट्ठा कर देती है कि सारा आसमान बादलों से ढक सा जाता है। फिर बारिश होती है जिसमें लोगों के लिए बहुत सारे फ़ाएदे छुपे हुए हैं। बारिश के बाद हवा इन बादलों को फिर से तितर-बितर कर देती है। यह हवा ही है जो पेड़-पौधों को हरा-भरा करती है, कश्तियों और नावों को पानी में चलाती है, खाने की चीज़ों को खाने लायक़ बनाती है, पानी को ठंडा करती है, आग को जलाती है और गीली चीज़ों को सुखाती है। मतलब यह है कि हवा की वजह से ही ज़मीन के ऊपर हर चीज़ ज़िन्दा है। अगर हवा न होती तो पेड़-पौधे मुरझा जाते, जानदार मर जाते और हर चीज़ ख़राब व बेकार हो जाती।

ज़मीन क्यों बनाई गई है?

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! अब उन चारों जौहरों (Elements) पर ध्यान दो जिन्हें अल्लाह ने बहुत बड़ी मिक़दार में बनाया है ताकि लोगों की ज़रूरतें आराम से पूरी हो जाएं। इन में से एक दूर-दूर तक फैली हुई यह ज़मीन है। अगर यह ज़मीन इतनी लम्बी-चौड़ी और फैली हुई न होती तो फिर इसके ऊपर इतने सारे आदमी रह पाते, कहाँ घर बनते, कहाँ खेती होती, खेत-खलियान, जंगल व पेड़-पौधे कहाँ होते, जड़ी-बूटियाँ व दवाईयाँ कहाँ से आतीं और फ़ाएदों से भरपूर खनिज कहाँ से आते?

हो सकता है कि कोई दूर तक फैले हुए इन रेगिस्तानों और लम्बे-चौड़े डरावने मैदानों को बेकार समझ बैठे, जबकि इस तरह की सारी जगहें जानवरों के रहने के लिए और उनके चरने-चराने के लिए हैं।

इस से हटकर जब कोई मजबूरी आ जाती है तो लोग अपना वतन छोड़कर किसी दूसरी जगह चले जाते हैं। ऐसे वक़्त में इसी तरह की जगहें काम आती हैं। न जाने कितने बड़े-बड़े मैदान व रेगिस्तान आज बड़े-बड़े मकानों और शहरों में बदल गए हैं और लोग वहाँ रह रहे हैं। अगर यह ज़मीन इतनी लम्बी-चौड़ी और दूर-दूर तक फैली हुई न होती तो लोग उस भीड़ की तरह रह रहे होते जो किसी छोटी सी जगह में फंस गई हो। अगर कोई ऐसी मजबूरी आ पड़ती कि उन्हें अपना वतन छोड़ना पड़े तो उनके पास ऐसी कोई जगह न होती जहाँ वह जा पाते।

अब इस ज़मीन को देखो और इसकी शक्ल पर ध्यान दो! अल्लाह ने ज़मीन को ऐसा बनाया है कि लोग आराम से इसके ऊपर अपने घर बनाकर रह सकें। ऐसा लगता है जैसे ज़मीन बिल्कुल ठहरी हुई हो। यह ज़मीन रहने के लिए सब से अच्छी जगह है। इस ज़मीन के ऊपर लोग आराम से अपने सारे काम कर सकते हैं, लेट सकते हैं, बैठ सकते हैं, सो सकते हैं और अपने दूसरे सारे काम कर सकते हैं। उनके किसी भी काम में किसी भी तरह की कोई रूकावट नहीं आती है।

अगर ज़मीन हिलती-डुलती हुई होती तो लोग इसके ऊपर अपने घर ही न बना पाते, न कारोबार कर पाते और न ही दूसरा कोई काम। अगर यह ज़मीन उनके पैरों के नीचे हर पल हिलती हुई होती तो इसके ऊपर रहना दूभर हो जाता। अगर कभी तुम ने ज़लज़ले (भूकम्प) पर ध्यान दिया हो तो तुम इस बात को बड़ी आसानी से समझ सकते हो, जबकि भूकम्प बस कुछ ही पलों के लिए आता है लेकिन लोगों के घर और सब कुछ बर्बाद करके जाता है और उन्हें अपनी जान बचाकर कहीं भागने की जगह भी नहीं मिल पाती है।

भूकम्प क्यों आते हैं?

अब अगर कोई कहे कि ज़मीन में भूकम्प आते ही क्यों हैं? तो इसका जवाब यह है कि भूकम्प या इसके जैसी दूसरी मुसीबतें इसलिए आती हैं ताकि भटके हुए और गहरी नींद में सोए हुए लोग जाग जाएं, होशियार हो जाएं और इस बात को समझ जाएं कि वह इस दुनिया के मालिक के सामने कुछ भी नहीं हैं। जब वह अपनी कमज़ोरी के साथ- साथ अपने बनाने वाले की क़ुदरत व ताक़त को भी समझ जाएंगे तो बुराईयों और गुनाहों से बचने की कोशिश करेंगे। आदमी के बदन व माल पर जितनी भी मुसीबतें या परेशानियाँ आती हैं उन सब के पीछे यही फ़ैक्टर होता है। इसका एक फ़ाएदा यह भी होता है कि आदमी के अंदर मुसीबतों से लड़ने की ताक़त भी आ जाती है।

अच्छे लोगों के लिए इसमें भलाई यह है कि उन्हें दूसरी दुनिया में ऐसी-ऐसी नेमतें मिलेंगी कि दुनिया की कोई भी नेमत उन नेमतों के सामने नहीं टिक सकती।

अल्लाह ने ज़मीन की सतह को ठंडा और सूखा बनाया है क्योंकि यह लोगों के काम आती है। पत्थर को भी उसने ऐसा ही बनाया है मगर पत्थर और ज़मीन के कुछ हिस्सों में फ़र्क़ यह है कि पत्थर ज़्यादा सूखा और कठोर होता है। ज़रा सोचो कि अगर सारी ही ज़मीन पत्थर की तरह कठोर होती तो क्या कोई चीज़ ज़मीन पर उग पाती जबकि इसी पर तो जानदारों की ज़िन्दगी का दारोमदार होता है। फिर न ही घर बन पाते और न ही दूसरे काम हो पाते।

इसीलिए अल्लाह ने ज़मीन को पत्थर से कम कठोर बनाया है बल्कि उसे नर्म व मुलायम बनाया है ताकि उसके ऊपर रहा जा सके और अपने रोज़ाना के काम किए जा सकें।

इतना सारा पानी क्यों पैदा किया गया है?

ज़मीन बनाते वक़्त अल्लाह ने ज़मीन के उत्तर का बड़ा हिस्सा दक्षिणी हिस्से से ऊँचा रखा है। ऐसा इसलिए किया ताकि पानी ज़मीन पर हर जगह पहुँच जाए, ज़मीन को सींचे और आख़िर में जाकर समुन्द्र में गिर जाए।

यह ठीक उसी तरह है जैसे किसी छत को एक तरफ़ से थोड़ा नीचा बनाया जाए ताकि उसके ऊपर से पानी रूके बिना आसानी से बह जाए। यही वजह है कि ज़मीन का उत्तरी हिस्सा दक्षिणी हिस्से से ऊँचा है। अगर ऐसा न होता तो ज़मीन पर पानी ठहरा हुआ रह जाता और लोग पानी से भरपूर फ़ाएदा न उठा पाते। साथ ही यह पानी लोगों के रास्तों को भी काट दिया करता और उनके कामों में रूकावट बन जाता।

यह भी ध्यान दो कि अगर इतना ज़्यादा पानी न होता, इतनी नदियाँ न बह रही होतीं, जगह-जगह नहरें, झरने और तालाब न होते तो फिर लोगों को बड़ी दिक़्क़त हो जाती जैसे पीने-पिलाने, जानवरों की प्यास बुझाने, खेती करने, बाग़ों व पेड़-पौधों की सिंचाई करने, जंगली जानवरों, परिंदों व दरिंदों के पीने, मछलियों और पानी के दूसरे जानदारों के ज़िन्दा रहने और साथ ही साथ दूसरे बहुत सारे कामों के लिए पानी ही न होता। सही बात यह है कि आदमी को पता ही नहीं है कि यह पानी कितनी बड़ी नेमत है और इसके कितने बड़े-बड़े फ़ाएदे हैं।

एक तरफ़ जहाँ ज़मीन के ऊपर रहने वाले सारे जानदारों की ज़िन्दगी पानी के ऊपर टिकी हुई है वहीं ज़मीन से उगने वाली चीज़ों में भी पानी एक बहुत बड़ा रोल निभाता है। साथ ही यह पानी पीने की दूसरी चीज़ों में भी मिलाया जाता है कि वह चीज़ ज़ायक़ेदार बन जाए और पीने लायक़ हो जाए।

यही पानी है जिससे लोग सफ़ाई के लिए अपने आप को और अपनी चीज़ों को धोते हैं। खेती और दूसरी चीज़ों में भी यही पानी काम आता है, लोग अपनी जान और अपना सामान बचाने के लिए भड़की हुई आग को भी इसी पानी से बुझाते हैं,

थका-हारा आदमी इसी पानी से नहाकर अपनी थकन दूर करता है और नहाकर फिर से तरोताज़ा हो जाता है। इससे हटकर भी पानी के दूसरे बहुत सारे फ़ाएदे हैं जो ज़रूरत पड़ने पर लोगों को पता चलते रहते हैं।

अब अगर इसके बाद भी तुम्हें समुन्द्रों में बहते पानी के इतने सारे फ़ाएदों के बारे में शक हो और तुम सोचो कि भला इतने सारे पानी की ज़रूरत ही क्या थी तो जान लो कि तरह-तरह की अनगिनत मछलियाँ और दूसरे बहुत सारे समुन्द्री जानदार पानी ही में रहते हैं (पानी न होता तो यह सारे जानदार कहाँ रहते ?)।

खनिज, मोती, मूँगे, याक़ूत और समुन्द्र में पाई जाने वाली ख़ुश्बूदार घास अम्बर और दूसरी बहुत सारी चीज़ें पानी से ही निकाली जाती हैं।

समुन्द्रों और नदियों के किनारे बहुत सारी ख़ुशबूदार घास व जड़ी-बूटियाँ भी उगती हैं जिनसे तरह-तरह के इत्र बनते हैं और दवाईयाँ तैयार होती हैं।

पानी लोगों के लिए बिल्कुल एक सवारी की तरह है जिस पर कारोबार करने वाले सवार होकर अपना सामान बेचने के लिए दूर-दूर तक आसानी से चले जाते हैं। पानी के रास्ते ही तो लोग चीन से ईराक़ और ईराक़ से चीन अपना सामान ले जाते हैं।

सच मानो! अगर पानी के रास्ते यह सारा सामान एक जगह से दूसरी जगह न जा पाता और हर चीज़ पीठ पर ही ढोई जाती तो सारी चीज़ें अपने ही शहर में और अपने ही मालिक के हाथों में रह जातीं क्योंकि सामान ढोने पर जो ख़र्चा आता वह ख़ुद सामान की क़ीमत से भी बढ़कर होता। इसलिए कोई भी कहीं सामान ले जाने की हिम्मत न जुटा पाता जिसकी वजह से दो तरह की दिक़्क़तों का सामना करना पड़ताः

1- ज़रूरत की बहुत सारी चीज़ें उन लोगों तक न पहुँच पातीं जिन्हें उन चीज़ों की ज़रूरत होती।

2- बहुत से लोगों को रोज़ी-रोटी न मिल पाती क्योंकि दुनिया भर में सामान को यहाँ से वहाँ ले जाने में बहुत सारे लोगों को कारोबार मिला हुआ है जिससे वह अपना और अपने घर वालों का पेट पाल रहे हैं।

हवा हर जगह क्यों है?

पानी की तरह हवा भी ऐसे ही है और हर जगह पाई जाती है। अगर हवा हर जगह न होती तो लोग धूल और धुएं से घुटकर मर जाते। दूसरी बात यह कि फिर बादल भी न बन पाते क्योंकि भाप उड़कर ऊपर ही न जा पाती।

वैसे हवा के बारे में हम इससे पहले भी अच्छी ख़ासी बात कर चुके हैं।

आग के फ़ाएदे

अगर आग भी पानी और हवा की तरह हर जगह होती तो यह दुनिया की हर चीज़ को जलाकर राख कर देती। लेकिन आदमी को आग की भी ज़रूरत थी और इस में उसके लिए बहुत सारे फ़ाएदे भी हैं। इसलिए अल्लाह ने आग को एक ख़ज़ाने की तरह पत्थर, लोहे और लकड़ी में छुपा दिया है कि जब भी ज़रूरत हो और जितनी ज़रूरत हो आदमी उतनी आग जला ले जिसके लिए बत्ती, तेल और ईंधन से आग जलाई जा सकती है। अगर हमेशा तेल की बत्ती और लकड़ी के सहारे ही आग को संभालकर रखना पड़ता तो लोगों को बड़ी दिक़्क़त हो जाती। और अगर आग पानी व हवा की तरह चारों ओर फैली होती तो यह हर चीज़ को जलाकर राख कर डालती। इसलिए अल्लाह ने दुनिया में आग बस इतनी ही रखी है कि इस से लोगों का भला भी हो और वह इसके नुक़सान से भी बचे रहें।

आग के अंदर एक दूसरी ख़ास बात भी छुपी हुई है और वह यह कि आग बस आदमी के हाथों में है क्योंकि आग की ज़रूरत सिर्फ़ आदमी को ही होती है।

अगर आदमी के पास आग न होती तो उसे अपने रोज़ाना के कामों में बहुत दिक़्क़त होती लेकिन जानवरों को आग से कोई मतलब नहीं होता और उनका कोई काम आग पर टिका हुआ नहीं है इसलिए आग उनके कंट्रोल में रखी ही नहीं गई।

अल्लाह ने जब यह तय किया कि आदमी आग से फ़ाएदा उठाए और जानवर न उठाएँ तो उसने उसे हाथ व उंगलियाँ भी ऐसी दीं जो आग जलाने और आग से फ़ाएदा उठाने के लिए बिल्कुल ठीक हैं। जानवरों का यूँ तो आग से कोई लेना-देना नहीं है लेकिन उन्हें इसके बदले में ठंड को झेलने की ताक़त ज़्यादा दी है ताकि आग के न होने से जो नुक़सान आदमी को होता है वह जानवरों को न हो।

अब मैं तुम्हें आग के एक ऐसे फ़ाएदे के बारे में बताता हूँ जो दिखने में तो छोटा है लेकिन असलियत यह है कि यह एक बहुत बड़ा फ़ाएदा है। जिस फ़ाएदे की मैं बात कर रहा हूँ वह यही छोटा सा चिराग़ है जो लोगों के घरों में जलता है और वह इसे जलाकर रात में अपने काम करते हैं।

अगर आग न होती तो लोग इस दुनिया में बिल्कुल ऐसे रहते जैसे अंधेरी क़ब्रों में रह रहे हों। फिर भला घुप अंधेरे में कौन पढ़ पाता, लिख पाता या कुछ याद कर पाता? या अंधेरे में कौन सिलाई, कताई और बुनाई कर पाता? अगर रात में अचानक कोई बीमार हो जाता और उसे फ़ौरन दवा की ज़रूरत पड़ जाती तो वह अंधेरे में कहाँ जाता?

इसी तरह खाना पकाने, बदन को गर्मी पहुँचाने, कपड़े सुखाने और चीज़ों को घोलने में आग के इतने फ़ाएदे हैं कि उन्हें गिना भी नहीं जा सकता और वैसे भी आग के फ़ाएदे तो इतने सामने के हैं कि उन पर बात भी करने की ज़रूरत नहीं है।

बादलों का आना-जाना

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! इस बात पर भी ध्यान दो कि दुनिया की भलाई के लिए आसमान कभी साफ़ रहता है और कभी बदली छा जाती है। अगर इन दोनों में से कोई भी मौसम हमेशा एक जैसा रहता तो जीना दूभर हो जाता। क्या तुम नहीं देखते कि अगर ज़्यादा बारिश हो जाए तो सब्ज़ियाँ और खाने-पीने की चीज़ सड़ने लगती हैं? जानदारों के बदन सुस्त पड़ जाते हैं, हवा ठंडी हो जाती है, हर जगह बीमारियाँ फैल जाती हैं और रास्ते बंद हो जाते हैं जिसकी वजह से आना-जाना मुसीबत बन जाता है।

इसी तरह अगर आसमान हमेशा साफ़ रहता और धूप निकली रहती तो ज़मीन सूखकर पत्थर हो जाती, पेड़-पैधे जल जाते और मुरझा जाते। झरनों और नदियों का पानी सूख जाता जिससे लोगों को बहुत बड़ा नुक़सान होता। साथ ही अगर हवा से नमी निकल जाए और उसकी जगह सूखापन पैदा हो जाए तो उस सूखेपन से भी बहुत सारी बीमारियाँ फैल जाएंगी।

इसके उलट अगर दोनों मौसम बारी-बारी से आएं यानी कभी आसमान पर सूरज चमकता रहे और कभी बारिश का मौसम आ जाए तो इसका फ़ाएदा यह है कि मौसम और हवा में बैलेंस बना रहता है और यह दोनों एक दूसरे से होने वाले नुक़सान की भरपाई कर देते हैं जिससे सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहता है।

अब अगर कोई कहे कि क्या ऐसा नहीं हो सकता था कि इन दोनों मौसमों से कोई नुक़सान ही न होता? तो इसका जवाब यह है कि दुनिया में आदमी की भलाई इसी में है कि वह थोड़ा-बहुत मुसीबतों और दिक़्क़तों को भी झेले ताकि गुनाहों से दूर रह सके। ठीक उसी तरह जैसे अगर कोई बीमार हो जाए तो फिर से ठीक होने के लिए वह कड़वी-कड़वी दवाएं खाता है, वैसे ही बुराईयों व गुनाहों में डूबा हुआ आदमी भी तभी अपने होश में आता है और पलट कर सीधे रास्ते पर आता है जब वह किसी मुसीबत में फंस जाता है। मुसीबतें उसका दिमाग़ ठिकाने पर लगा देती हैं।

अगर कोई बादशाह अपनी प्रजा के बीच सोना-चाँदी बाँटने लगे तो लोग उसकी कितनी इज़्ज़त करेंगे और उसकी कितनी तारीफ़ होगी? हर आदमी उसकी इतनी तारीफ़ करेगा कि हर जगह बस उसी के नाम के चर्चे होंगे। अब इस के मुक़ाबलें में बारिश की उन बूदों के बारे में सोचो जिनके बल पर ही यह सारा अनाज पैदा होता है, भला वह सोने-चाँदी के सिक्के कहाँ और यह बारिश की बूँदें कहाँ? इस बारिश की बूंदों से उन सोने-चाँदी के सिक्कों का कोई मुक़ाबला ही नहीं है।

क्या तुम जानते हो कि बारिश की एक-एक बूँद की क़ीमत क्या है? और यह कितनी बड़ी नेमत है? लेकिन लोग इस बारिश की क़ीमत को नहीं समझते। इतनी बड़ी नेमत मिलने के बाद भी अगर किसी आदमी की कोई दुआ पूरी होने में देर हो जाए तो वह चीख़ने-चिल्लाने लगता है और उल्टी-सीधी बातें करने लगता है, जबकि उसकी भलाई इसी में थी कि उसकी दुआ देर में पूरी हो। आदमी अपने छोटे-छोटे फ़ाएदों के लिए बड़े-बड़े फ़ाएदों को इतनी आसानी से गंवा देता है।

बारिश के फ़ाएदे

अब बारिश से होने वाले फ़ाएदों पर ध्यान दो! अल्लाह ने तय किया है कि बारिश काफ़ी ऊँचाई से ज़मीन पर बरसे ताकि ऊँची से ऊँची ज़मीन की प्यास भी बुझ जाए। अगर बारिश नीचे से ऊपर की तरफ़ हुआ करती तो बहुत सारी ऊँची जगहों पर बारिश का पानी पहुँच ही न पाता जिसकी वजह से उपजाऊ और खेती में काम आने वाली ज़मीन कम हो जाती।

बारिश से ज़मीन में जान पड़ जाती है। दूर-दूर तक फैले हुए मैदान और पहाड़ों की गोदियाँ खेतों में बदल जाती हैं और ख़ूब अनाज पैदा होता है। बारिश का एक फ़ाएदा यह भी होता है कि लोगों को एक जगह से दूसरी जगह पानी नहीं ले जाना पड़ता। पानी के ऊपर उनके बीच लड़ाईयाँ भी नहीं होतीं। ऐसा नहीं

होता कि ताक़तवर लोग तो बारिश के पानी को हथिया लें और कमज़ोर बस देखते ही रह जाएँ।

इसी तरह जब अल्लाह ने यह फ़ैसला किया कि बारिश का पानी ऊपर से नीचे की तरफ़ बरसे तो फिर यह भी तय किया कि आसमान से यह पानी बूँद-बूँद और थोड़ा-थोड़ा करके बरसे ताकि ज़मीन के अंदर नीचे तक जाकर उसकी अच्छी तरह से प्यास बुझा सके। अगर एक दम से बारिश हो जाया करती तो बारिश का पानी ज़मीन के अंदर गहराई तक न पहुँच पाता और खड़ी हुई फ़सलें बर्बाद हो जाया करतीं। इसी लिए बारिश का पानी बूँदों की शक्ल में नीचे आता है ताकि ज़मीन के अंदर पल रहे दानों को उगा सके और सूखी हुई ज़मीनों में जान डाल दे।

बारिश के और भी बहुत सारे फ़ाएदे हैं।

बारिश बदनों को नर्म और मुलायम बनाती है।

हवा को साफ़ करती है और बीमारियों को दूर भगाती है।

पेड़-पौधों और फ़सलों में होने वाली उस बीमारी को ख़त्म करती है जिसे 'य-र-क़ान' कहते हैं।

बारिश के फ़ाएदे तो इतने सारे हैं कि अगर उन सब पर चर्चा की जाए तो बात बड़ी लम्बी हो जाएगी।

अब अगर कोई कहे कि ऐसा भी तो होता है कि किसी-किसी साल बहुत ज़्यादा बारिश हो जाती है जिसकी वजह से बहुत सारा नुक़सान हो जाता है, आसमान से बर्फ़ गिरने से फ़सलें बर्बाद हो जाती हैं और फिर बहुत ज़्यादा बारिश होने से जब हवा ख़राब हो जाती है तो बीमारियाँ भी पनपती हैं? तो इसका जवाब यह है कि हाँ! किसी-किसी साल बारिश बहुत ज़्यादा भी होती है क्योंकि यह भी आदमी की भलाई ही में है। इसका फ़ाएदा यह है कि आदमी गुनाहों में डूबने से बच जाता है और गुनाहों की तरफ़ जाने से ख़ुद को रोक लेता है। ठीक है कि उसके माल का नुक़सान होता है लेकिन इसके साथ ही साथ जब बहुत ज़्यादा बारिश होने से बहुत सी मुसीबतें आती हैं तो इसमें लोगों की दीनी ज़िन्दगी और मरने के बाद वाली ज़िन्दगी में बहुत भलाई छुपी हुई है।

पहाड़ क्यों बनाए गए हैं?

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! मिट्टी और पत्थरों से बने इन पहाड़ों को भी देखो! नासमझ लोग समझते हैं कि यह पहाड़ बेकार बनाए गए हैं जबकि सच यह है कि इनके बहुत सारे फ़ाएदे हैं।

पहाड़ की चोटियों पर बर्फ़ इकट्ठा हो जाती है जिसका फ़ाएदा यह होता है कि लोग इससे अपनी ज़रूरतें पूरी करते हैं। पहाड़ों पर जमी हुई यह बर्फ़ पिघलती रहती है जिससे झरने फूटते हैं जो आगे बढ़कर नहर और दरिया बन जाते हैं। इसका एक फ़ाएदा यह भी होता है कि पहाड़ों में तरह-तरह के पेड़-पौधे और जड़ी-बूटियाँ भी उगती हैं जो मैदानी जगहों पर कभी नहीं उगतीं।

साथ ही पहाड़ों में गुफाएं और दर्रे भी होते हैं जो ख़तरनाक जंगली जानवरों के रहने की जगहें हैं।

इन्हीं पहाड़ों को काट-काटकर लोग पत्थर बनाते हैं और फिर उन पत्थरों से बड़े-बड़े मज़बूत क़िले बनाते हैं जो उन्हें दुश्मनों से बचाते हैं।

इन्हीं पहाड़ों से तराशे हुए पत्थरों से लोग अपने घर भी बनाते हैं। इन्हीं से आटा पीसने की चक्की का पत्थर भी बनता है। साथ ही इन्हीं पहाड़ों के अंदर तरह-तरह के अनमोल पत्थर और धातुएं भी होती हैं।

पहाड़ों के और भी बहुत सारे फ़ाएदे हैं जिन्हें अल्लाह ही सब से बहतर जानता है।

खदानों के फ़ाएदे

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! ज़रा खदानों (Mines) पर ध्यान दो जिनसे खड़िया, चूना, सल्फ़ेट आर्सेनिक, सुरमा, पारा, ताँबा, सीसा, चाँदी, सोना, याक़ूत (Ruby), पुखराज, पन्ना और दूसरे बहुत सारे पत्थर निकलते हैं।

इसी तरह तारकोल, मोमिया, गंधक, तेल, डीज़ल, पेट्रोल और ऐसी बहुत सारी चीज़ें भी खानों से ही निकलती हैं जिन्हें लोग आम तौर पर अपने कामों में लाते हैं।

क्या कोई समझदार आदमी इस बात को ठुकरा सकता है कि यह सारे ख़ज़ाने लोगों के लिए ही ज़मीन के अंदर रखे गए हैं ताकि जब उन्हें इन चीज़ों की ज़रूरत हो तो वह इन्हें ज़मीन से बाहर निकाल कर अपने कामों में ले आएँ?

मगर अल्लाह ने ऐसा भी नहीं किया है कि लोग अपनी लालच के जाल में फंसकर अपनी ज़रूरत से ज़्यादा जो चीज़ चाहें बना लें और इसीलिए लोगों की सारी कोशिशें यहाँ आकर बेकार हो गईं कि आदमी क़ीमती धातु नहीं बना सकता (यानी अल्लाह ने उससे कीमियागरी का इल्म (रस-विधा) छुपा दिया है)। अगर लोग अपनी लालच के जाल में फंसकर अपनी इस कोशिश में कामयाब हो जाते तो फिर ज़मीन के अंदर से इतने पत्थर निकालते कि हर जगह यही क़ीमती पत्थर दिखाई पड़ते। सोना-चाँदी हर जगह बिखरा पड़ा होता और इन चीज़ों की कोई क़ीमत न रह जाती। फिर लोग इन चीज़ों को हाथ भी न लगाते। जिसका नतीजा यह निकलता कि लेन-देन और कारोबार में सोने-चाँदी का बुनियादी रोल मिट ही जाता।

फिर तो बादशाह भी इन धातुओं को लगान के तौर पर न लेते और न ही लोग अपनी औलाद के लिए इन्हें संभाल कर रखते।

लेकिन अल्लाह ने आदमी को ताँबे से पीतल, रेत से शीशा और राँगे से चाँदी वग़ैरा बनाना और इस तरह के दूसरे काम सिखा दिए क्योंकि इन चीज़ों के जानने से उसे कोई नुक़सान नहीं होने वाला था।

ध्यान देने की बात यह है कि जिन कामों के बारे में जानने से आदमी को नुक़सान नहीं था ऐसे सारे काम वह कर लेता है लेकिन जिन कामों से उसे बहुत ज़्यादा नुक़सान था ऐसे काम वह कर ही नहीं पाता।

अगर कोई खदानों में बहुत गहराई तक उतर जाए तो एक ऐसी जगह पहुँच जाएगा जहाँ चारों ओर पानी ही पानी बह रहा होगा। उस पानी की गहराई का अंदाज़ा लगाना कोई आसान काम नहीं है और उस गहराई को पार भी नहीं किया जा सकता। उस पानी के पीछे चाँदी के पहाड़ छुपे हुए हैं।

अल्लाह चाहता था कि उसके बन्दे उसकी क़ुदरत और उसके ख़ज़ानों को भी देख लें और यह बात भी जान लें कि अगर अल्लाह चाहता तो चाँदी के पहाड़ ज़मीन के ऊपर भी बना देता लेकिन इसमें आदमी की भलाई नहीं थी जिस पर हम पहले भी बात कर चुके हैं। अगर अल्लाह ऐसा कर देता तो इन चीज़ों की क़ीमत कम हो जाती और फिर यह चीज़ें आदमी के किसी काम न आ पातीं।

इस बात को यूँ समझो कि कभी-कभी लोग कोई क़ीमती या अनूठी चीज़ भी बनाते हैं। यह चीज़ बस उसी वक़्त तक क़ीमती रह पाती है जब तक कम हो लेकिन जैसे ही यह चीज़ हर आदमी के हाथ में आ जाती है वैसे ही इसकी क़ीमत भी कम हो जाती है। इसका मतलब यह है कि किसी भी चीज़ की क़ीमत का दारोमदार उसके अनूठेपन पर होता है।

पेड़-पौधों के फ़ाएदे

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! यह पेड़-पौधे भी आदमी के बहुत काम आते हैं। पेड़ों से मिलने वाले फल बदन को ताक़त देते हैं, भूसा जानवर खाते हैं, ईंधन जलाने के काम आता है, लकड़ियाँ तरह-तरह की चीज़ें बनाने के काम आती हैं और पेड़ों की पत्तियाँ, छाल, जड़ें, टहनियाँ वग़ैरा भी बहुत सारे कामों में इस्तेमाल होती हैं।

क्या तुम जानते हो कि अगर यह फल हमें पूरी तरह से तैयार और पके हुए ज़मीन पर ही मिल जाया करते तो हमारी ज़िन्दगी में बहुत सारी मुश्किलें पैदा हो जातीं ? अगर फल हमें

पेड़ों पर लगने के बजाए ज़मीन पर ही तैयार मिल जाते तो हमें खाने के लिए फल तो मिल जाया करते मगर फिर लकड़ी, घास-फूस, ईंधन, भूसे जैसी बहुत सारी काम में आने वाली चीज़ें न मिल पातीं जिनके फ़ाएदों के बारे में हम बात कर चुके हैं। दूसरी बात यह है कि पेड़-पौधे दिखने में भी बड़े अच्छे लगते हैं और इस पूरी दुनिया में हरे-भरे पेड़-पौधों, बेलों, रंग-बिरंगे फूलों और तरह-तरह की कलियों से बढ़कर ख़ूबसूरत कोई चीज़ है ही नहीं।

अनाज इतना सारा क्यों पैदा किया गया है?

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! उस बरकत के बारे में सोचो जो अल्लाह ने खेती में रखी है कि एक-एक दाने से लगभग सौ-सौ दाने निकलते हैं। ऐसा भी तो हो सकता था कि एक दाने से बस एक ही दाना उगता लेकिन ऐसा है नहीं। सवाल यह है कि एक दाने से इतने सारे दाने क्यों निकलते हैं? ऐसा बस इसी लिए तो है ताकि अनाज व दालें ख़ूब पैदा हों जिसका फ़ाएदा यह है कि लोगों को आसानी से रोज़ी-रोटी मिल जाए और कारोबार करने वालों का कारोबार चलता रहे और साथ ही साथ अगले साल के बीज के लिए दाने भी बच जाएं। क्या तुम नहीं देखते कि अगर कोई बादशाह किसी ज़मीन या शहर को बसाना चाहता है तो वह वहाँ सब से पहले खेती के लिए किसानों को बीज देता है और उनकी रोज़ी-रोटी का बंदोबस्त करता है ताकि वह लोग आराम से खेती कर सकें।

देखो! जानकार अल्लाह ने कैसी हिकमत[1] वाला काम किया है कि इन्सानों को अनाजों का भण्डार दे दिया है ताकि उनका पेट भी भरता रहे और अगली फ़सल के लिए बीज भी तैयार हो जाएं।

---

[1] हिकमत ऐसे काम को कहते हैं जिसमें किसी भी तरह की कोई कमी, ग़ल्ती, बुराई या ख़राबी न हो यानी हर तरह से ठीक काम।

खजूर और उस जैसे पेड़ों में भी बहुत सारे फ़ाएदे हैं। तभी तो एक ही तने व टहनी में इतनी सारी पत्तियाँ और फल निकल आते हैं। ऐसा क्यों है? ऐसा बस इसीलिए तो है ताकि लोग यह फल तोड़कर अपनी ज़रूरतें पूरी करें। खजूर के पेड़ के तनों, पत्तियों या फलों को जितना भी तोड़ लो यह फिर से उग आते हैं। चाहे पेड़ को ही काट डालो मगर यह पेड़ फिर से निकल आता है क्योंकि इसकी जड़ ज़मीन में बची रहती है। खजूर के पेड़ के आसपास उसी के पौधे निकल आते हैं और इस तरह उनकी तादाद अपने आप बढ़ जाती है। अगर ऐसा न होता और यह पेड़ अकेला ही होता तो लोग इसे काटकर अपनी ज़रूरतें पूरी नहीं कर सकते थे। इसके लिए उन्हें फिर से नया पौधा ज़मीन में उगाना पड़ता। साथ ही अगर किसी पेड़ को कोई बीमारी लग जाती तो वह पेड़ सूख जाता और उसके बराबर में उग आने वाला दूसरा कोई पौधा भी न होता।

अनाज के दाने छिलकों के अंदर क्यों होते हैं?

कुछ अनाजों जैसे मूँग-मसूर की दाल और बाक़ला वग़ैरा की शक्ल पर भी ध्यान दो। इनके दाने एक थैली या पैकेट की तरह छिलकों के अंदर होते हैं ताकि दाने पकने के बाद तैयार होने तक बचे रह सकें और उन्हें कोई नुक़सान न पहुँचे, ठीक उसी तरह जैसे बच्चा माँ के पेट में एक थैली के अंदर ही पलता-बढ़ता है।

गेहूँ और उस जैसे दूसरे अनाज बालियों की शक्ल में और एक सख़्त छिलके के अंदर होते हैं। इतना ही नहीं बल्कि हर दाने के सिरे पर भाले जैसी एक नोक भी बनी होती है ताकि परिंदे गेहूँ के दाने न खा सकें और किसानों को नुक़सान न हो।

अब हो सकता है कि कोई कहने लगे कि परिंदे तो फिर भी गेहूँ और दूसरे अनाज खा जाते हैं तो इसका जवाब यह है कि हाँ! ऐसा ही होता है। परिंदों को भी अल्लाह ने ही बनाया है

और अपना पेट भरने के लिए उन्हें भी रोज़ी चाहिए। इसलिए अल्लाह ने इस ज़मीन के ऊपर उनका हिस्सा भी रखा है। फिर भी अल्लाह ने दानों के ऊपर यह कवर चढ़ा दिया है और बालियों को नोकदार बना दिया है ताकि परिंदे एक साथ ही सारी फ़सल चट न कर जाएं जिससे किसानों के नुक़सान की भरपाई ही न हो सके। अगर परिंदे बिना किसी रूकावट के अनाज के दाने पा जाते तो वह सारे दानों को बर्बाद कर डालते और हो सकता था कि ख़ुद भी इतना खा लेते कि खाते-खाते ही मर जाते। उधर पूरी खेती भी बर्बाद हो जाती। इसीलिए अल्लाह ने अनाज के दानों पर यह कवर चढ़ा दिया है कि दाने आख़िर तक बचे रह सकें और परिंदे बस ज़रूरत भर ही खाएं। बचा हुआ सारा अनाज लोगों के लिए रह जाए क्योंकि आदमी का दर्जा परिंदों से ऊँचा है और उसे कहीं ज़्यादा अनाज चाहिए। दूसरी तरफ़ वह अनाज पैदा करने के लिए इतनी मेहनत भी तो करता है।

पेड़-पौधे क्यों बनाए गए हैं?

ज़रा यह भी देखो कि अल्लाह ने तरह-तरह के इन पेड़-पौधों को कैसे बनाया है। पेड़-पौधों को उसी तरह खाने की ज़रूरत होती है जिस तरह दूसरे जानदारों को होती है लेकिन पेड़-पौधों के पास दूसरे जानदारों की तरह मुँह नहीं होता और न ही वह चल-फिर सकते हैं कि आगे बढ़कर अपनी रोज़ी उठा लें। इसी लिए पेड़ों की जड़ें मिट्टी के अंदर गहराई तक उतरी हुई होती हैं और वह वहीं से अपनी ख़ुराक लेते हैं जो जड़ों व तनों से होती हुई पत्तियों व फलों तक पहुँचती है। इसीलिए ज़मीन पेड़-पौधों के लिए बिल्कुल एक माँ की तरह है जो उन्हें पालती-पोसती है। पड़े-पौधों की जड़ें उनके मुँह का काम करती हैं जिसके रास्ते वह ज़मीन के अंदर से अपनी ख़ुराक लेते रहते हैं जैसे जानवर या इन्सान अपने बच्चों को दूख पिलाते हैं। तुम

ने देखा ही होगा कि जब कोई टेंट लगाना होता है तो उसकी छड़ों को चारों तरफ़ से रस्सी से बांध दिया जाता है ताकि टेंट सीधा खड़ा रहे और ज़मीन पर न गिर जाए या टेढ़ा न हो जाए। पेड़-पौधे भी ऐसा ही करते हैं। यह अपनी जड़ों को ज़मीन के अंदर चारों तरफ़ दौड़ा देते हैं ताकि सीधे खड़े रह सकें। अगर जड़ें न होतीं तो खजूर का लम्बा व मज़बूत पेड़ और सनोबर व चिनार के घने पेड़ कैसे सीधे रह पाते? तेज़ हवा के झक्कड़ों और आंधियों में यह कैसे तने रह पाते?

अल्लाह की हिकमत देखो कि उसने लोगों के हर काम और उनकी हर ज़रूरत का कितना ध्यान रखा है। आदमी ने पेड़ों की जड़ों को देखकर ही टेंट लगाना सीखा है क्योंकि उसने ज़मीन के ऊपर टेंट लगाना बाद में सीखा है, उससे पहले ही अल्लाह ने ज़मीन के अंदर पेड़ों की जड़ें गाड़ दी थीं। तुम ने इस बात पर भी ध्यान दिया होगा कि टेंट की छड़ें पेड़ों की लकड़ियों और तनों से ही बनती हैं जिसका सीधा सा मतलब यही है कि लोगों ने जो कुछ सीखा है वह सब अल्लाह की बनाई हुई चीज़ों को देखकर ही सीखा है।

अल्लाह ने पेड़ों पर पत्ते क्यों पैदा किए हैं?

अब ऐ मुफ़ज़्ज़ल! पेड़ों के पत्तों पर भी ध्यान दो! हर पेड़ के पत्ते के ऊपर आदमी के बदन की रगों जैसी कोई चीज़ बनी होती है। कुछ पत्ते बड़े होते हैं जिनकी रगें लम्बाई व चौड़ाई में फैली हुई होती हैं और कुछ पत्ते छोटे व नाज़ुक होते हैं जिनकी छोटी-छोटी सी रगें असली बड़ी रगों के साथ बुनी हुई होती हैं।

अगर आदमी को यह काम करना पड़ता तो वह एक साल में भी ऐसा एक पत्ता न बना पाता। साथ ही उसे बहुत सारे औज़ारों, तरह-तरह के कामों, बहुत सी बातों और सलाह-मश्वरों की ज़रूरत पड़ती। जबकि बसंत के मौसम में कुछ ही दिनों के अंदर सारे मैदान, दरिया, पहाड़ और जंगल सब के सब

हरे-भरे पत्ते-पत्तियों से ढक से जाते हैं। यह सब अल्लाह की क़ुदरत और उसके हुक्म से होता है जिसे किसी के भी मश्वरे या मदद की कोई ज़रूरत नहीं है।

अब यह भी जान लो कि पत्तों में बारीक-बारीक रगें इसलिए बनी होती हैं ताकि उनसे होकर खाना-पानी हर जगह पहुँच जाए। इसी तरह आदमी के बदन में भी रगें होती हैं और उनका काम भी यही होता है कि खाना-पानी बदन में हर जगह पहुँच जाए। मगर पत्तों में बड़ी व असली रगें इस काम से हटकर एक दूसरा काम भी करती हैं। यह बड़ी रगें इसलिए होती हैं ताकि अपनी मज़बूती व सख़्ती के बल पर पत्ते को संभाले रहें और पत्ता टूटने, मुरझाने या टुकड़े-टुकड़े होने से बचा रहे। इसी तरह आदमी भी जब किसी कपड़े या किसी और चीज़ से कुछ बनाना चाहता है तो उसे सीधा ठहराए रखने के लिए उसके अंदर लम्बाई व चौड़ाई में मज़बूत तीलियाँ डाल देता है ताकि वह चीज़ खिंची रहे और ढीली न हो। इस बात को भी समझ लो कि यूँ तो आदमी कभी भी नेचर की गहरी-गहरी बातों को नहीं समझ सकता लेकिन उसके काम और उसकी बनाई हुई चीज़ें अल्लाह की बनाई हुई चीज़ों को देखकर ही बनी हैं।

फलों में गुठली क्यों होती है?

फलों की गुठली और उनके बीजों पर भी ध्यान दो! गुठली फलों के अंदर होती है ताकि अगर कभी पेड़ के ऊपर कोई मुसीबत आ जाए तो उसकी गुठली को ज़मीन में बोकर नया पेड़ उगाया जा सके। यह बिल्कुल उसी तरह है जैसे किसी क़ीमती चीज़ को बचाकर रखने के लिए उस चीज़ की एक कापी किसी दूसरी जगह भी संभाल कर रख दी जाती है ताकि अगर पहली वाली कहीं गुम या बर्बाद हो जाए तो दूसरी वाली कापी से काम चलाया जा सके।

गुठली का एक फ़ाएदा यह भी है कि यह अपनी सख़्ती व मज़बूती की वजह से फलों के मुलायम व नर्म गूदे को संभाले रहती है। अगर गुठली न होती तो फल फट जाया करते, सुकड़ जाते या बहुत जल्दी ख़राब हो जाते।

कुछ गुठलियाँ और बीज ऐसे भी होते हैं जिन्हें तोड़कर खाया भी जाता है। कुछ गुठलियों से तेल भी निकाला जाता है। कुल मिलाकर इन गुठलियों और बीजों से बहुत से काम लिए जाते हैं।

अब तुम गुठलियों और बीजों के बहुत सारे फ़ाएदे समझ गए हो। ज़रा यह भी देखो कि खजूर की गुठली से खजूर और अंगूर के बीज से अंगूर ही क्यों उगता है? ऐसा क्यों नहीं होता कि खजूर और अंगूर जैसे मज़ेदार व मीठे फलों की जगह कोई कड़वी-कसीली चीज़ उग आया करती जैसे चीड़ व चिनार? ऐसा बस इसीलिए तो है ताकि आदमी इन फलों को खाकर अपना पेट भर सके और इनका ज़ाएक़ा ले सके।

बसंत और पतझड़ के मौसम क्यों आते हैं?

तुम्हें पेड़ों के अंदर छुपी हुई बहुत सारी बातों पर ध्यान देना चाहिए। तुम जानते हो कि पेड़ हर साल मर जाते हैं लेकिन उनके अंदर की गर्मी उनके अंदर बची रहती है और उसी गर्मी से फलों का असल माद्दा पैदा होता है जो पूरे पेड़ में फैल जाता है। यह काम बसंत के मौसम में होता है। जिस तरह तुम्हारे खाने के लिए दूसरी बहुत सारी चीज़ें हैं वैसे ही तरह- तरह के मज़ेदार और मीठे फल भी बनाए गए हैं। इन फलदार पेड़ों की टहनियाँ बिल्कुल ऐसे लगती हैं जैसे वह तुम्हारी तरफ़ हाथ फैलाए हुए हों कि आओ और फल तोड़ लो। उधर फूलों का यह हाल होता है कि जैसे तैयार बैठे हों कि कब आदमी आए और कब वह ख़ुद को उसे तोहफ़े में दे दें।

इस दुनिया का यह सारा हिसाब-किताब, इतना ज़बरदस्त सिस्टम और इतनी बारीकियाँ किसके हाथ का कमाल है? क्या

यह सब अल्लाह से हटकर किसी और ने बनाया है? क्या यह सब इसलिए नहीं है कि आदमी इन ज़ायक़ेदार फलों के मज़े ले और इन से फ़ाएदा उठाए?

ताज्जुब होता है कि लोग अल्लाह का शुक्र करने के बजाए ख़ुद अल्लाह का ही का इन्कार कर बैठते हैं!

अनार के अंदर पाई जाने वाली अद्भुत बातें

अनार के अंदर पाई जाने वाली बारीकियों से भी कुछ सीखो! ध्यान से देखो तो तुम्हें नज़र आएगा कि अनार के अंदर चर्बी से बनी दीवारों की तरह पतली सी झिल्ली की पर्तें बनी होती हैं और उनके चारों ओर अनार के दाने ऐसे चिपके होते हैं जैसे किसी ने उन्हें सजा दिया हो। इन दानों को कई हिस्सों में रखा गया है और इन में से हर हिस्सा एक ख़ास झिल्ली के अंदर होता है। ख़ुद वह झिल्ली इतनी बारीक होती है कि उसे देखकर अक़्ल दंग रह जाती है। इतना ही नहीं बल्कि यह दाने और झिल्लियों से बने यह कमरे अनार के बाहरी मोटे छिलके में रखे होते हैं।

अगर पूरे अनार में बस दाने ही दाने होते तो दानों तक पेड़ से मिलने वाली ख़ुराक न पहुँच पाती। इसलिए अल्लाह ने अनार के अंदर चर्बी जैसी एक झिल्ली रख दी है जिससे दाने एक-दूसरे से चिपके भी रहते हैं और हर दाने तक उसकी ख़ुराक भी पहुँच जाती है। तुम ने देखा ही होगा कि अनार के दाने इन चर्बी जैसी दीवारों के अंदर ही रखे गए हैं। फिर इन झिल्लियों के अंदर यह दाने एक के ऊपर एक रखे होते हैं ताकि ढीले न पड़ जाएं और हिलने न लगें। फिर इसके ऊपर भी एक मज़बूत और मोटे छिलके की एक चादर सी मंढ दी गई है ताकि दानों को कोई नुक़सान न पहुँचे।

यह तो अनार के अंदर छुपी हुई गहरी-गहरी बातों में से बस कुछ ही बातें थीं। अगर कोई अनार के अंदर छुपी हुई बातों की

गहराई में जाने की कोशिश करे तो न जाने कैसी-कैसी अद्‌भुत बातें उसके सामने आएंगी लेकिन अभी जो बातें बताई हैं वही सीख लेने के लिए काफ़ी हैं।

बड़े-बड़े फलों की महीन-महीन सी बेलें

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! इस बात पर भी ध्यान दो कि बेलें कितनी कमज़ोर होती हैं लेकिन उनके ऊपर कद्दू जैसी सब्ज़ियाँ और ख़रबूज़े व तरबूज़ जैसे भारी-भारी फल आते हैं। ज़रा सोचो तो अल्लाह ने किस हिकमत से यह काम किया है कि इन पतली-पतली और कमज़ोर सी बेलों पर इतने बड़े-बड़े और वज़नी फल आते हैं। अगर यह बेलें फ़सलों और पेड़ों की तरह खड़ी हो जातीं तो इन फलों व सब्ज़ियों का बोझ ही न उठा पातीं। इससे पहले कि यह सब्ज़ियाँ तैयार होतीं और फल पकते, सारी बेलें ही बर्बाद हो जातीं।

ध्यान देने की बात यह है कि यह बेलें और इनके पत्ते ज़मीन पर फैल जाते हैं जिसकी वजह से इन सब्ज़ियों व फलों का बोझ बेलों पर पड़ने के बजाए ज़मीन पर पड़ता है। कद्दू या ख़रबूज़े की बेलों को देखो कि कैसे यह दोनों अपने आसपास कद्दू या ख़रबूज़ों को संभाल कर रखती हैं जैसे कोई बिल्ली ज़मीन पर बैठी हुई हो और उसके बच्चे उसके आसपास लेटकर दूध पी रहे हों।

फलों के पकने का मौसम

यह भी ध्यान देने की बात है कि यह पेड़ और यह फल कब तैयार होते हैं। पेड़ और फल उसी मौसम में तैयार होते हैं जब लोगों को इनकी ज़रूरत होती है जैसे कुछ फल जब पकते हैं जब तेज़ गर्मी पड़ रही होती है ताकि आदमी इस मौसम के ख़ास

फलों का ज़ायक़ा ले सके। अगर गर्मी वाले यह फल जाड़े में पकते तो इन से बदन को होने वाला नुक़सान तो अपनी जगह, लोग इन्हें खाते भी नहीं और अगर खाते भी तो बस मरे हुए दिल के साथ।

तुम ने देखा ही होगा कि अगर कभी जाड़े में खीरा तैयार हो जाए या कोई कहीं से इस मौसम में ले आए तो इसे बस वही लोग खाते हैं जिन्हें न अपने बदन का ध्यान होता है और न इससे होने वाले नुक़सानों का। बस ऐसे ही लोग जाड़े में खीरा खाते हैं।

खजूर के पेड़ के फ़ाएदे

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! खजूर के पेड़ को भी ध्यान से देखो! खजूर के पेड़ों में एक पेड़ मादा होता है जिसे नर पेड़ की ज़रूरत होती है। इसीलिए कुछ पेड़ नर भी होते हैं। नर खजूर का पेड़ ठीक नर जानदार की तरह ही होता है और यह भी अपनी मादा के साथ मिलता है जिससे वह गर्भवती हो जाती है। नर पेड़ को कभी गर्भ नहीं होता।

अब खजूर की टहनियों पर भी ध्यान दो। इसकी टहनियाँ बिल्कुल ऐसी होती हैं जैसे किसी ने उन्हें अपने हाथों से कपड़े की तरह बुन दिया हो। ऐसा इसलिए है ताकि इनमें मज़बूती रहे और खजूर के भारी गुच्छों का बोझ उठा सकें और टूटने न पाएं। साथ ही तेज़ आंधियाँ भी उन्हें नुक़सान न पहुँचा सकें। इससे हटकर इनकी मज़बूती का एक फ़ाएदा यह भी है कि यह घरों की छत बनाने, पुल बनाने और दूसरे कामों में भी इस्तेमाल होती हैं।

खजूर की लकड़ी भी इसी तरह एक-दूसरे में गुथी हुई होती है और इस में रेशे भी होते हैं। इस लकड़ी की मज़बूती का फ़ाएदा यह है कि इसे बहुत सारे कामों में इस्तेमाल किया जा सकता है। इसकी लकड़ी में नर्मी भी होती है और अगर इसकी

लकड़ी पत्थर की तरह कठोर होती तो इस से छतें, खिड़कियाँ, डिब्बे और दूसरी चीज़ें न बन पातीं।

लकड़ी की सब से ख़ास बात यह होती है कि यह पानी में डूबती नहीं है बल्कि पानी के ऊपर रहती है। लोग लकड़ी की इस ख़ासियत को तो अच्छी तरह से समझते हैं लेकिन जिसने इस लकड़ी को बनाया है उससे अन्जान हैं। अगर लकड़ी में यह ख़ासियत न होती तो फिर पानी में चलने वाली इतनी बड़ी-बड़ी कश्तियाँ पहाड़ों जैसे बोझ को अपने ऊपर कैसे ढो पातीं। फिर लोग इतने भारी-भारी बोझ को एक जगह से दूसरी जगह कैसे लेकर जा पाते? अगर ऐसा न होता तो इन्सानों को बड़ी कठिनाइयाँ होतीं और ज़मीन की बहुत सारी चीज़ें या तो कम हो जातीं या सिरे से मिट ही जातीं।

जड़ी-बूटियों के फ़ाएदे

अब जड़ी-बूटियों के बारे में सोचो कि उनमें से हर एक को जानकार अल्लाह ने किसी न किसी ख़ास दवाई के लिए बनाया है। इनमें से कोई तो बदन की रगों और जोड़ों की गहराईयों में उतर कर फ़ाल्तू माद्दे को मार देती है तो कोई बलग़म को बदन से बाहर निकाल देती है या कोई बदन की सूजन को मिटा देती है।

इन जड़ी-बूटियों में किसने यह सारे फ़ाएदे रख छोड़े हैं? और किसने लोगों को इन जड़ी-बूटियों में छुपे फ़ाएदे बताए हैं? कुछ लोग सोचते हैं कि यह सब अपने आप हो गया है। क्या लोगों को इन जड़ी-बूटियों के फ़ाएदे अचानक पता चल गए हैं?

असल बात यह है कि आदमी को जो दिमाग़ व समझ दी गई है और तजुर्बों से सीखने का जो हुनर दिया गया है उसी की वजह से वह इन सारी बातों को सीख पाया है।

जानवर कुछ जड़ी-बूटियों में छुपे हुए फ़ाएदों को कैसे समझ जाते हैं? कुछ दरिंदे अपनी चोटों का इलाज जड़ी-बूटियों से कैसे

कर लेते हैं? एक परिंदा ऐसा भी है कि जब उसे क़ब्ज़ हो जाता है तो वह पानी से एनिमा लेता है। इस तरह की और भी बहुत सारी बातें हैं जो जानवरों में पाई जाती हैं। जानवरों और परिंदों को यह सब किसने सिखाया है?

शायद तुम सोचो कि वह जड़ी-बूटियाँ बिल्कुल बेकार हैं जो मैदानों और रेगिस्तानों में उगती हैं जबकि तुम्हारा ऐसा सोचना ग़लत है क्योंकि इन जड़ी-बूटियों की डालियों और पत्तियों को जानवर खाते हैं, इनके दाने परिंदे खाते हैं और इनकी सूखी लकड़ियाँ लोगों के काम आती हैं। आदमी इन में से बहुत सारी जड़ी-बूटियों से अपना इलाज भी करता है।

कुछ जड़ी-बूटियाँ चमड़ा बनाने में, कुछ चीज़ों को रंगने में और कुछ दूसरे कामों में भी इस्तेमाल होती हैं।

तुम जानते ही हो कि पुआल जिसे फूस भी कहते हैं यह छोटे और नाज़ुक पौधों में गिना जाता है। इस पौधे और इस जैसे दूसरे पौधों में बहुत सारे फ़ाएदे छुपे हुए हैं। पुआल से कागज़ बनता है जो बादशाहों और प्रजा दोनों के काम आता है। इससे चटाई भी बनाई जाती है जिसे हर आदमी इस्तेमाल करता है। शीशे और दूसरे टूटने वाले बर्तनों को टूटने से बचाने के लिए भी इसी सूखे हुए पौधे को बर्तनों के बीच में रखा जाता है।

इस दुनिया की छोटी-बड़ी, क़ीमती या बेक़ीमत और मोटी या बारीक हर चीज़ से कुछ न कुछ सीखने की कोशिश किया करो क्योंकि इन सारी चीज़ों में बहुत सारे फ़ाएदे और गहरी-गहरी बातें छुपी हुई हैं। भला जानवरों के गोबर और आदमी की टट्टी से भी गिरी हुई कोई चीज़ इस दुनिया में है जो गन्दी भी होती है और नजिस भी लेकिन खेतों, बाग़ों और पौधों या सब्ज़ियों के लिए यह इतने काम की चीज़ है कि कोई भी चीज़ इसके सामने नहीं टिकती। यहाँ तक कि कोई भी सब्ज़ी उतनी हरी-भरी नहीं होती या उतनी तेज़ी से नहीं बढ़ती जितनी उस चीज़ से बढ़ती है जिसे लोग ख़ुद से दूर फेंक देते हैं और जिसे छूना भी नहीं चाहते।

यह भी समझ लो कि कोई भी चीज़ अपनी क़ीमत की वजह से छोटी या बड़ी नहीं होती बल्कि दुनिया की हर चीज़ की दो क़ीमतें और दो बाज़ार हैं। हो सकता है कि कोई चीज़ आम मार्केट में बिल्कुल बेकार समझी जाए और कोई भी उसे ख़रीदने वाला न हो लेकिन वही चीज़ इल्म के मैदान में बड़ी क़ीमती हो और वहाँ उसे ख़रीदने वालों की भीड़ लग जाए। इसलिए अगर किसी चीज़ की क़ीमत कम हो तो कभी भी उसे बेकार मत समझना। अगर कैमिस्ट्री वालों को आदमी की टट्टी और गोबर के फ़ाएदे पता चल जाएं तो वह लोग इसे बड़ी मेंहगी क़ीमत देकर भी ख़रीदने को तैयार हो जाएंगे।

तौहीद

पर चौथा लेक्चर

(मुसीबतों और आपदाओं के बारे में)

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैंः

अब मैं तुम्हें उन मुसीबतों व आफ़तों के बारे में बताने जा रहा हूँ जिनको सामने रखकर बहुत से नासमझ इस दुनिया और इस दुनिया के मालिक के बारे में बहुत सी ग़लत-सलत बातें कहते रहते हैं और ख़ुदा का इन्कार कर बैठते हैं। यह लोग इस दुनिया को बनाने वाले अल्लाह का इन्कार करते हैं और मुसीबतों, मुश्किलों, परेशानियों और मौत के पीछे छुपी गहरी बातों का भी इन्कार करते हैं।

मुसीबतें और आपदाएं

कुछ नासमझ लोग कभी-कभी आ जाने वाली मुसीबतों जैसे महामारी व प्लेग या खेतियों को बर्बाद कर देने वाले ओलों और टिड्डियों को देखकर अल्लाह का ही इन्कार कर बैठते हैं।

इन लोगों के सवाल के जवाब में इन से यह सवाल करना चाहिए कि अगर इस दुनिया को बनाने वाला और चलाने वाला कोई नहीं है तो फिर इन मुसीबतों से बड़ी मुसीबतें क्यों नहीं आतीं ?

यह आसमान ज़मीन पर क्यों नहीं गिर पड़ता ? सारी की सारी ज़मीन अंदर क्यों नहीं धंस जाती ? कभी ऐसा क्यों नहीं होता कि सूरज ही न निकले या नदियाँ व समुन्द्र सूख क्यों नहीं जाते कि एक बूँद भी पानी न बचे ?

यह हवा ठहर क्यों नहीं जाती कि हर चीज़ सड़-गल जाए ?

इतना पानी क्यों नहीं पैदा हो जाता कि सारी दुनिया ही तहस-नहस हो जाए ?

यह महामारियाँ और यह टिडियाँ या इस जैसी दूसरी मुसीबतें हमेशा क्यों नहीं आतीं कि इस दुनिया की हर चीज़ बर्बाद हो जाए ? इसके उलट यह मुसीबतें कभी-कभी ही क्यों आती हैं और कुछ वक़्त के बाद ख़त्म क्यों हो जाती हैं ?

क्या तुम नहीं देखते कि यह दुनिया हर बड़ी मुसीबत से बची हुई है ? जो मुसीबतें आती भी हैं उनमें भी आदमी बस कभी-कभी ही फंसता है। अल्लाह इस रास्ते से इन्सानों को डराता है ताकि वह बहकने के बजाए सही रास्ते पर वापस आ जाएं और साथ ही साथ उनके अंदर मुसीबतों से लड़ने की ताक़त भी पैदा हो जाए। यह मुसीबतें हमेशा के लिए नहीं आती हैं बल्कि जैसे ही लोगों की उम्मीदें व हिम्मतें टूटने लगती हैं वैसे ही यह चली जाती हैं। यह मुसीबतें आदमी को समझाने और सही रास्ता दिखाने के लिए आती हैं और अल्लाह के करम से ही यह वापस जाती हैं।

अल्लाह को न मानने वाले आने वाली मुसीबतों व बलाओं को सुबूत बनाकर कहते हैं कि अगर इस दुनिया को किसी मेहरबान और मोहब्बत करने वाली हस्ती ने बनाया है तो फिर यह सारी मुसीबतें आती ही क्यों हैं ? यह लोग सोचते हैं कि इस दुनिया में आदमी को किसी भी तरह की कोई दिक़्क़त या

मुश्किल नहीं होना चाहिए बल्कि इसके उलट कुछ ऐसा हो कि आदमी हर पल बस ख़ुश रहे।

जबकि अगर ऐसा हो जाए तो आदमी मौज-मस्तियों में इतना खो जाएगा कि सारी दुनिया को बुराईयों से भर देगा और यह उसके दीन के लिए भी बहुत घातक होगा। आमतौर पर ऐसा ही होता है कि मौज-मस्तियों और आराम में जीने वाले लोग बहुत सी बुराईयों में घिर जाते हैं। ऐसे लोग तो इतना नीचे गिर जाते हैं कि यह भी भूल जाते हैं कि वह इन्सान भी हैं, उनका कोई पैदा करने और पालने वाला भी है या उन्हें कोई भयानक नुक़सान भी हो सकता है या कोई बहुत बड़ी मुसीबत भी आ सकती है। फिर न यह ग़रीबों का ध्यान रखते हैं न कमज़ोरों की मदद करते हैं, न किसी मुसीबत में फंसे हुए का हाथ थामते हैं और न किसी को दिली सुकून पहुँचाते हैं। लेकिन जैसे ही आदमी किसी मुसीबत या बीमारी में फंस जाता है और उसकी मीठी ज़िन्दगी ज़हरीली हो जाती है तो वह फ़ौरन ही संभल जाता है और उसकी आंखों पर पड़े हुए पर्दे हटने लगते हैं। फिर वह उस रास्ते की तरफ़ वापस आ जाता है जिससे मुँह मोड़कर कहीं और निकल गया था। इसके बाद वह अपनी ज़िम्मेदारियों का भी एहसास करने लगता है और उन्हें निभाता भी है।

जो लोग इन मुसीबतों व बलाओं को बेकार समझते हैं वह उन बच्चों की तरह हैं जो कड़वी-कड़वी दवाओं को बुरा-भला कहते हैं और जब उन्हें ज़ायक़ेदार खानों से रोका जाता है तो उन्हें ग़ुस्सा आता है, बड़ों की बात नहीं मानते और चाहते हैं कि उनसे कोई काम लेने के बजाए उन्हें बस खेलने दिया जाए और जो खाना वह खाना चाहें वह उन्हें खाने दिया जाए। जबकि इन बच्चों को पता ही नहीं होता कि बेकारी और हर वक़्त खेलने-कूदने के कितने बड़े-बड़े नुक़सान हैं। उन्हें पता ही नहीं होता कि मज़ेदार खानों से उन्हें क्या-क्या नुक़सान होने वाला है और बेमज़ा खानों के अंदर कौन-कौन से फ़ाएदे छुपे हुए हैं। उनको पता ही नहीं होता कि न जाने कितनी कड़वाहटें ऐसी हैं जिनके बाद मिठास ही मिठास मिलती है। बीमारियों से बदन को ठीक

करने वाली दवाएं चाहे कड़वी ही क्यों न हों मगर इन्हीं दवाओं के अंदर फ़ाएदे छुपे होते हैं।

आदमी को मासूम[1] क्यों नहीं बनाया गया है?

हो सकता है कि कोई यहाँ पर यह सवाल कर ले कि अगर ऐसा ही है तो आदमी को मासूम क्यों नहीं बनाया गया है? अगर इन्सान मासूम होता तो फिर उसे यह सारी बातें समझाने की ज़रूरत ही न पड़ती।

इस सवाल का जवाब यह है कि अगर ऐसा होता कि हर आदमी मासूम होता तो फिर उसके किसी भी काम का कोई अच्छा या बुरा बदला न होता (क्योंकि फिर आदमी अपनी मर्ज़ी से अपने काम न कर रहा होता)।

हो सकता है कि कोई इस पर यह सवाल कर बैठे कि जब आख़िर में जन्नत[2] में ही जाना है तो अगर अल्लाह अच्छे लोगों की तारीफ़ करने और उन्हें उनके कामों का अच्छा बदला देने के बजाए उन्हें सीधे जन्नत में ही भेज देता तो ज़्यादा अच्छा होता।

इस बात का जवाब यह है कि अगर किसी सेहतमंद और समझदार आदमी से कहा जाए कि तुम बस आराम से बैठो, तुम्हें कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। बस इतना करो कि फ़ुलाँ आदमी के पास चले जाओ, वहाँ तुम्हें कुछ भी नहीं करना पड़ेगा। उसके पास तुम्हारी हर ज़रूरत पूरी हो जाएगी और तुम बड़े आराम से रहोगे तो क्या यह आदमी इस बात पर राज़ी हो जाएगा? नहीं! बल्कि वह उस आदमी के पास बिना कुछ किए सब कुछ मिलने और पूरे आराम से रहने के बजाए अपनी मेहनत से थोड़ा-बहुत हाथ आए को ही ज़्यादा पसन्द करेगा।

क़यामत की नेमतें भी कुछ ऐसी ही हैं कि उन्हें भी मेहनत और कोशिश करके ही पाया जा सकता है। अब अगर देखा जाए

---

[1] मासूम उस आदमी को कहते हैं जो ग़ल्तियाँ या गुनाह नहीं करता।
[2] स्वर्ग

तो इन नेमतों का दोहरा फ़ाएदा है। एक तो यह कि आदमी को इस दुनिया में ही उसकी मेहनत और कोशिश का फल मिल जाता है। दूसरा फ़ाएदा यह है कि मरने के बाद उसकी यही मेहनत व कोशिशें उसे उसके कामों का अच्छा बदला दिलवाने में मदद करती हैं जिससे आदमी को दिली सुकून और ख़ुशी मिलती है।

हो सकता है कि कोई कहे कि कभी-कभी ऐसा भी तो होता है कि आदमी को बिना मेहनत किए ही नेमतें मिल जाती हैं जिससे वह बड़े आराम में रहता है। अगर ऐसा है तो फिर क़यामत में भी ऐसा ही क्यों नहीं होगा कि उसे बिना कुछ किए ही ख़ुशियाँ मिल जाएं?

इस बात का जवाब यह है कि अगर यह रास्ता खुल जाए तो फिर आदमी पागल कुत्ते की तरह हो जाएगा और सारी दुनिया बुराईयों व गुनाहों से भर जाएगी। अगर कोई अपने आप को किसी बुरे काम से बचाता है या किसी अच्छे काम के लिए ख़ुद को किसी मुसीबत में डालता है तो वह जानता है कि आख़िर में उसे इस काम का फल ज़रूर मिलेगा और उसे जन्नत भी मिलेगी। अगर लोगों को क़यामत में होने वाले हिसाब-किताब का डर न होता तो फिर भला किसकी जान, इज़्ज़त या माल बच पाता? इस काम से क़यामत में जो नुक़सान होता वह तो अपनी जगह, उससे कहीं बड़ा नुक़सान यहीं इसी दुनिया में होता। साथ ही अगर ऐसा होता तो फिर इंसाफ़ व हिकमत का भी कोई मतलब न बनता। इतना ही नहीं बल्कि फिर तो इस दुनिया के पूरे सिस्टम पर ही सवाल खड़ा हो जाता और हर आदमी इसे बुरा कहता। फिर कोई भी चीज़ अपनी सही जगह पर न ठहर पाती।

मुसीबतें अच्छे-बुरे सब लोगों के लिए क्यों हैं?

कभी ऐसी मुसीबतें भी आती हैं जिनमें अच्छे और बुरे दोनों तरह के लोग फंस जाते हैं। कभी ऐसा भी होता है कि अच्छे

लोग तो मुसीबतों में फंस जाते हैं लेकिन बुरे लोग मज़े से जी रहे होते हैं। अल्लाह को न मानने वाले लोग कहते हैं कि यह अल्लाह का कैसा इंसाफ़ है? यह तो बड़ी अजीब सी बात है।

इन लोगों की इस बात का जवाब यह है कि हम ने माना कि यह मुसीबतें व आफ़तें अच्छे और बुरे दोनों तरह के लोगों के ऊपर आती हैं लेकिन अल्लाह इन मुसीबतों में दोनों तरह के लोगों की भलाई का ध्यान भी रखता है क्योंकि जब अच्छे लोग मुसीबतों में फंसते हैं तो वह अपने पिछले अच्छे कामों और अल्लाह की नेमतों को याद करने लगते हैं। अपना सिर सजदे में रख देते हैं और अल्लाह का शुक्र करते हुए सब्र करते हैं। बुरे लोग भी जब इन मुसीबतों में फंसते हैं तो उन्हें यह फ़ाएदा होता है कि उनकी अकड़ कम हो जाती है और वह गुनाहों व बुराईयों से बचने लगते हैं।

अगर इन दोनों को नेमतें मिलती हैं और दोनों ही आराम से रह रहे होते हैं तब भी इस में इन दोनों की ही भलाई है। अच्छे लोग अपनी अच्छाईयों और अपने अच्छे होने पर ख़ुश होते हैं। उन्हें जब नेमतें मिलती हैं तो अच्छे कामों के लिए उनका शौक़ और भी बढ़ जाता है। बुरे लोगों को जब नेमतें मिलती हैं तो वह भी अल्लाह की नेमतों और उसकी रहमत को देखकर अच्छे काम करने लगते हैं और यह समझ जाते हैं कि उनके बुरे होने के बाद भी अल्लाह ने उन पर एहसान किया है और उन्हें अपनी नेमतें दी हैं। अल्लाह की यह रहमत और उसकी यह माफ़ी इस बात की वजह बन जाती है कि बुरे लोग भी दूसरे लोगों के साथ मोहब्बत करने लगते हैं और उन्हें माफ़ कर देते हैं।

हो सकता है कि कोई कहे कि यह सारी बातें तो तब सही हैं जब मुसीबत माल-दौलत पर आए लेकिन अगर मुसीबत लोगों की जानों पर आ जाए जैसे कहीं आग लग जाए, कोई डूब जाए, सैलाब आ जाए या भूकम्प आ जाए और बहुत सारे लोग मर जाएं तो आप क्या कहेंगे?

इसका जवाब यह है कि अल्लाह ने यहाँ भी दोनों तरह के लोगों की भलाई रखी है। जहाँ तक अच्छे लोगों की बात है तो

वह दुनिया से कूच करके यहाँ की तकलीफ़ों व दुखों से छुटकारा पा जाते हैं। अगर बुरे लोग इन मुसीबतों की वजह से मर जाते हैं तो उन्हें यह फ़ाएदा होगा कि क़यामत में उनकी मुसीबतें कम हो जाएंगी। साथ ही इसका यह फ़ाएदा भी है कि ऐसे लोगों की बुराईयाँ ख़त्म हो जाती हैं (और उनके मरने के बाद दूसरे लोग ज़रा सुकून से साँस ले लेते हैं)।

कुल मिलाकर अगर कहा जाए तो जानकार और हिकमत व क़ुदरत वाले अल्लाह ने हर मुसीबत व तकलीफ़ में सब की भलाई रखी है। जैसे अगर आँधी किसी बड़े से पेड़ को जड़ से उखाड़ कर फैंक दे तो कोई न कोई माहिर बढ़ई उसी पेड़ को बहुत सारे कामों में इस्तेमाल कर लेता है। जानकार और हकीम अल्लाह भी ऐसा ही करता है। अगर किसी मुसीबत से जानें चली जाती हैं या माल-दौलत बर्बाद हो जाती है तो इसमें भी अल्लाह ने सब की भलाई रखी है।

अब अगर कोई यह सवाल कर बैठे कि सिरे से यह मुसीबतें व तकलीफ़ें आती ही क्यों हैं?

तो इसका जवाब यह है कि अगर ऐसा न होता तो बुरे लोग अपनी सेहत-सलामती, अपने आराम और मौज-मस्तियों व अय्याशियों में इतना डूब जाते कि बढ़-चढ़कर बुरे काम और गुनाह करने लगते। उधर अच्छे लोग भी अच्छे काम करने में सुस्ती दिखाने लगते। आमतौर पर ऐसा ही होता है कि जब लोग आराम से जी रहे होते हैं तभी ऐसे हालात बनते हैं। मुसीबतें और तकलीफ़ें आकर उन्हें डराती हैं जिससे गुनाह कम हो जाते हैं। साथ ही उन्हें इस बात का भी एहसास कराती हैं कि किस काम में उनका फ़ाएदा है और किस काम में नुक़सान। अगर लोगों पर मुसीबतें न आएं तो वह बुराईयों व गुनाहों में गले-गले डूब जाएं और उसी तरह बेक़ाबू हो जाएं जैसा कि शुरू में भी हो चुका है कि लोग गुनाहों व बुराईयों में इतना डूब गए थे कि तूफ़ान आया और सब के सब उसमें फंस गए। तब कहीं जाकर यह ज़मीन उनसे पाक हुई।

मौत क्यों आती है?

जिन बातों की वजह से कुछ लोग अल्लाह का इन्कार करते हैं उनमें से एक मौत भी है। यह लोग कहते हैं कि आदमी को इस दुनिया में कभी नहीं मरना चाहिए बल्कि हमेशा ज़िन्दा रहना चाहिए और उस पर कोई मुसीबत या आफ़त भी नहीं आना चाहिए।

अगर गहराई में जाकर इन लोगों की इस बात पर ध्यान दिया जाए तो यह बात सिरे से ग़लत साबित हो जाएगी।

अगर इस दुनिया में आने वाला हर आदमी ज़िन्दा रहता और कभी भी न मरता तो क्या यह ज़मीन कम न पड़ जाती? रहने के लिए घर, खेत-खलियान और दूसरे काम करने के लिए लोग कहाँ जाते? अभी जबकि लोग एक-एक करके मरते हैं तब तो उनके बीच ज़मीनों, मकानों और खेतों-खलियानों के लिए इतने झगड़े होते हैं कि बात जंग तक पहुँच जाती है और ख़ूब ख़ून बहता है। ज़रा सोचो कि अगर इस दुनिया में आने के बाद कोई भी न मरता तो फिर क्या हाल होता?

यह बात तो तय है कि फिर उनके बीच लालच व बुराई ख़ूब फैल जाती और लोगों के दिल पत्थर के हो जाते। अगर आदमी को पता होता कि उसे कभी मरना ही नहीं है तो फिर जो कुछ उसके हाथ में होता उस पर वह कभी राज़ी न होता और न ही कभी किसी को अपनी कोई चीज़ देता।

अगर किसी पर कोई मुसीबत या तकलीफ़ आ पड़ती तो उसे कभी भुला ही न पाता। जिसके बाद आदमी अपनी ज़िन्दगी और इस दुनिया की हर चीज़ से थक जाता, ठीक उसी तरह जैसे लम्बी उम्र वाला आदमी अपनी ज़िन्दगी से ऊब जाता है, यहाँ तक कि वह अपनी मौत की दुआ भी माँगने लगता है ताकि उसे इस दुनिया से छुटकारा मिल जाए।

अगर कोई कहे कि लोगों पर मुसीबतें व तकलीफ़ें न आतीं तो बड़ा अच्छा होता क्योंकि फिर वह मौत की दुआ ही न करते।

तो इस बात का जवाब यह है कि अगर ऐसा होता तो लोग आपे से बाहर हो जाते और उतपात मचाने लगते। सारी दुनिया में बुराईयाँ फैल जातीं और लोग अपने दीन व दुनिया को बर्बाद कर डालते।

हो सकता है कि कोई कहे कि कितना अच्छा होता अगर इन्सानों की नस्ल आगे ही न बढ़ती। फिर अगर कोई भी न मरता तब भी रहने और खाने-पीने के लिए यह ज़मीन कम न पड़ती।

तो इस बात का जवाब यह है कि अगर इन्सानों का बस एक ही ग्रुप इस दुनिया में आता और उसकी नस्ल कभी आगे न बढ़ती तो लोगों की एक बहुत बड़ी आबादी इस दुनिया की नेमतों का मज़ा न ले पाती। सारी नेमतें बस लोगों के एक ग्रुप के लिए ही होतीं जो बस एक बार पैदा होता। फिर जब दूसरे लोग इस दुनिया में न आते तो वह सब इस दुनिया से और मरने के बाद वाली दुनिया की नेमतों से भी दूर हो जाते।

इस पर कोई यह भी कह सकता है कि पहली बार में ही क़यामत तक आने वाले सारे लोगों को एक साथ पैदा कर दिया जाता तो फिर कोई दिक़्क़त ही न होती।

इसके जवाब में हम वही बात दोहराएंगे जो पहले भी कह चुके हैं कि अगर ऐसा होता तो फिर घरों, खेतों और कारोबार के लिए ज़मीन कम पड़ जाती। साथ ही अगर लोगों की नस्ल आगे न बढ़ती तो घरों व ख़ानदानों के अंदर आपस में मोहब्बत न होती, आपसी मेल-जोल मिट जाता और मुसीबतों या मुश्किलों में कोई एक-दूसरे का साथ देने वाला न होता, न ही बच्चों को पालने से होने वाले फ़ाएदे मिल पाते और न ही बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा करने के बाद जो फ़ाएदे होते हैं वही मिल पाते। सब कुछ ख़त्म हो जाता।

यह सब इस बात का सुबूत है कि जो कुछ और जैसा इस दुनिया के मालिक ने बना दिया है बस वही ठीक है। इससे हटकर सारी बातें गलत हैं कि ऐसा होता या वैसा होता। जो कुछ दुनिया वाले कहते हैं वह सब ग़लत बातों का पलिंदा है।

एक बात और

हो सकता है कि कोई आदमी जानकार अल्लाह के हाथों बने इस सिस्टम में एक दूसरी तरह से सवाल उठाने लगे कि यह भला कौन सा सिस्टम है कि जहाँ हर जगह कमज़ोर लोगों पर ज़ुल्म हो रहा है, उन्हें दबाया जा रहा है, उनका माल लूटा जा रहा है और उन्हें ज़ुल्म की चक्की में पीसा जा रहा है। कमज़ोर हर दिन कमज़ोर होता जा रहा है और ताक़तवर की ताक़त हर दिन बढ़ती ही जा रही है। जो मोमिन व अच्छे लोग हैं वह ग़रीब हैं और मुसीबतों में फंसे हुए हैं जबकि जो बुरे लोग हैं वह आराम से मज़े में जी रहे हैं। बड़े से बड़ा गुनाह करने के बाद भी आदमी को फ़ौरन सज़ा नहीं मिलती।

इन सारी बातों से पता चलता है कि अगर यह दुनिया किसी मज़बूत और नपे-तुले सिस्टम पर चल रही होती तो कभी भी यहाँ यह सब न हो रहा होता और हर चीज़ अपनी सही जगह पर होती यानी अच्छे लोगों को नेमतें व आराम मिला करता और बुरों को कुछ भी न मिलता। अगर इस दुनिया का सिस्टम ठीक होता तो कभी भी कोई किसी को दबाने या किसी पर ज़ुल्म करने की हिम्मत न जुटा पाता। साथ ही अगर इस दुनिया का सिस्टम ठीक-ठाक होता तो बुरे काम और गुनाह करने वालों को फ़ौरन ही सज़ा भी मिल जाया करती।

जो लोग इस तरह की बातें करते हैं उन्हें यह बात भी समझना चाहिए कि अगर ऐसा होता तो फिर लोगों की एक बहुत बड़ी क्वालिटी यानी 'एहसान' भी दुनिया से उठ जाता जबकि यही एहसान आदमी को दूसरे सारे जानदारों से अलग करता है। अगर ऐसा होता तो फिर कोई भी सवाब[1] के लिए या क़यामत के बारे में अल्लाह के वादे पर भरोसा करते हुए अच्छे काम न करता। अगर ऐसा हो जाता तो इन्सानों और जानवरों में कोई फ़र्क़ न रह जाता क्योंकि फिर आदमी के हाथ में कुछ भी न होता और वह कोई भी काम अपनी मर्ज़ी से न कर पाता।

---

[1] पुण्य

जिसका नतीजा यह होता कि उसे जानवरों की तरह हर वक़्त डंडे मार-मारकर डराया-धमकाया जाता और घास व चारे की लालच देकर काम करवाया जाता। अगर ऐसा हो जाता तो फिर कोई भी सवाब (पुण्य) की उम्मीद या अज़ाब (प्रकोप) के डर से अच्छे काम न करता। फिर तो इन्सान अपनी इन्सानियत से भी बाहर निकल जाता और जानवरों जैसा हो जाता। उसे फ़ौरन मिलने वाले फ़ाएदे या सज़ा का तो ध्यान होता मगर मरने के बाद मिलने वाले सवाब या सज़ा की कोई ख़बर न होती।

इन हालात में कोई भी अच्छा आदमी बस अपनी रोज़ी-रोटी और अपनी गुज़र-बसर के लिए ही अच्छे काम करता। दूसरी बात यह है कि अगर कोई किसी पर ज़ुल्म न करता तो बस इस वजह से कि कहीं फ़ौरन ही आसमान से अज़ाब न आ जाए। कुल मिलाकर आदमी का हर काम दुनिया के फ़ाएदे या नुक़सान को सामने रखकर होता और फिर न किसी का ख़ुदा पर ईमान होता और न उन वादों पर भरोसा जो अल्लाह ने मरने के बाद वाली ज़िन्दगी के लिए अपने बन्दों से किए हैं। फिर मरने के बाद अच्छे या बुरे बदले की जगह ही न बचती

साथ ही साथ सवाल करने वाले को यह बात भी समझ लेना चाहिए कि हमेशा ऐसा भी नहीं होता है कि मुसीबतें या तकलीफ़ें बस अच्छे लोगों को ही झेलना पड़ती हों बल्कि कभी इसके उलट भी होता है। इसीलिए अल्लाह ने सिस्टम कुछ ऐसा बनाया है कि लोग यह न समझ बैठें कि माल-दौलत व आराम भरी ज़िन्दगी बस बुरे लोगों के लिए है और अच्छे लोगों को कुछ भी नहीं मिलने वाला और यह सोचकर वह भी गुनाह करने की होड़ में लग जाएं। यही वजह है कि बहुत सारे अच्छे लोग भी बड़े मालदार होते हैं।

बहुत से बुरे लोग ऐसे भी हैं जब वह अपने गुनाहों में गले-गले डूब जाते हैं और उनके साथ दूसरे लोगों को भी भयानक नुक़सान झेलना पड़ता है तो यहीं इसी दुनिया में उन पर अज़ाब

(प्रकोप) हो जाता है जैसे फ़िरऔन[1] जो इसी दुनिया में दरिया में डूबकर मर गया था या बुख़्तुन्नस्र[2] जो हलाक हो गया था।

अगर तुम्हें लगता है कि बुरे लोगों को छूट मिली हुई है या अच्छे लोगों को दूसरी दुनिया में अच्छा बदला दिया जाएगा तो यह भी बन्दों की भलाई में ही है जिसे लोग जानते ही नहीं हैं। इस काम और अल्लाह की हिकमत के बीच कोई टकराव नहीं है। यहाँ तक कि इस दुनिया में बसने वाले बादशाह भी कभी-कभी इसी तरकीब को अपनाते हैं और कोई भी उनके इस काम को बुरा नहीं कहता बल्कि अगर कभी वह किसी काम को किसी वजह से टालते हैं या कोई दूसरा काम पहले कर लेते हैं तो देखने वाले इसे बादशाह की सूझ-बूझ मानते हैं। यह फ़ार्मूला इस बात का सुबूत है कि इस दुनिया की हर चीज़ को किसी जानकार रचयता ने बनाया है और कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जो अल्लाह के बनाए इस सिस्टम को तोड़ कर बाहर निकल जाए क्योंकि कोई भी रचयता अपनी बनाई चीज़ों को बस तीन वजहों से ही बेकार बना सकता है और उन चीज़ों को उनके हाल पर छोड़ सकता है: पहली यह कि उसके अंदर बनाने की ताक़त ही न हो। दूसरी यह कि उसे अपनी बनाई चीज़ों के बारे में जानकारी ही न हो और तीसरी यह कि उस बनाने वाले के अंदर शरारत या बुराई पाई जाती हो। मगर यह तीनों बातें सिरे से अल्लाह के अंदर हैं ही नहीं और न हो सकती हैं क्योंकि अगर उसके अंदर यह सब बनाने की ताक़त न होती तो वह इतनी शानदार दुनिया बना ही न पाता। अगर जाहिल होता तो फिर यह दुनिया इतने नपे-तुले और सटीक सिस्टम पर न चल रही होती और अगर वह बुरा होता तो फिर दुनिया और दुनिया में रहने वालों को पैदा ही न करता।

अब जब ऐसा है तो यह बात तय है कि इस दुनिया को बनाने वाला बड़ा जानकार है और वह दुनिया को बड़ी ख़ूबी के

---

[1] फ़िरऔन पुराने ज़माने में मिस्र का एक बहुत बड़ा बादशाह था जो अपने आप को ख़ुदा कहता था।

[2] नबी दानियाल[अ०] के ज़माने में एक बहुत ज़ालिम बादशाह

साथ चलाने वाला है। उसकी बनाई हर चीज़ में कोई न कोई भलाई या गहरा राज़ ज़रूर छुपा होता है। यह अलग बात है कि हमारी अक़्ल उन सारी बातों को नहीं समझ पाती जैसे बादशाहों की बहुत सारी बातें और तरकीबें आम लोगों की समझ में नहीं आती हैं और वह उनके पीछे छुपी वजहों को नहीं जान पाते हैं। अगर लोग उन बातों को जान जाएं तो अपने आप उसकी तारीफ़ करने लगेंगे।

अगर लोगों को किसी दवा के बारे में शक होता है तो दो-तीन बार के तजुर्बे के बाद उनका शक दूर हो जाता है और उन्हें पता चल जाता है कि इस दवा का असर ठंडा है या गर्म। जब ऐसा है तो फिर यह जाहिल व नासमझ लोग इतने सारे अनगिनत सुबूतों के बाद भी क्यों इस दुनिया के बनाने वाले का और उस सिस्टम का इन्कार कर देते हैं जिस पर यह दुनिया चल रही है? अगर यह मान भी लिया जाए कि इस दुनिया के आधे हिस्से में लगी हुई तरकीबें और सिस्टम आदमी की समझ से बाहर है तब भी इस आधे हिस्से को देखकर कोई समझदार आदमी यह नहीं कह सकता कि सारी की सारी दुनिया ही बेकार है और अपने आप बन गई है क्योंकि दूसरा जो आधा हिस्सा है वह तो पूरी तरह से नपा-तुला, सटीक और तालमेल वाला है। जब ऐसा है तो फिर आदमी को कोई भी फ़ैसला करने में जल्दी नहीं करना चाहिए। जबकि अगर हम सारी दुनिया की छान-बीन करें तो हमें एक-एक चीज़ के अंदर भलाई और अच्छाई ही दिखाई पड़ेगी। फिर यह दुनिया इतनी अच्छी और इतनी शानदार दिखाई पड़ेगी कि हम दाँतों तले उंगलियाँ दबाकर रह जाएंगे। यह सारी दुनिया कुछ इतनी ही शानदार बनी हुई है कि जब भी आदमी सोचेगा कि दुनिया को ऐसा होना चाहिए था या वैसा होना चाहिए था तो वह दुनिया को अपनी सोच से अच्छा ही पाएगा।

यूनानियों के यहां यूनिवर्स का नाम

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! यह भी जान लो कि यूनान वाले इस यूनिवर्स को ''Cosmos'' कहते हैं जिसका मतलब ज़ीनत (सजावट) होता है। फ़िलास्फ़र्स और समझदारी की बातें करने वालों ने ही यह नाम रखा है। यह नाम उन्होंने इसीलिए तो रखा है क्योंकि उन्हें इस दुनिया में हर जगह एक तरह का हिसाब-किताब, तालमेल, बैलेंस और नपा-तुला सिस्टम दिखाई दे रहा था। वह लोग इतने पर ही राज़ी नहीं हुए बल्कि उन्होंने इस यूनिवर्स का नाम ही 'Cosmos' रख दिया ताकि यह बता सकें कि यहाँ हर जगह ख़ूबसूरती ही ख़ूबसूरती बिखरी पड़ी है।

नास्तिक अक़्ल के अंधे और नासमझ होते हैं

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! लोग डाक्टरों की ग़ल्तियाँ देखकर कभी भी मेडिकल साइंस को ग़लत नहीं ठहराते मगर कितनी अजीब सी बात है कि यही लोग इस दुनिया की हर चीज़ को तो नपा-तुला और बहतरीन बताते हैं लेकिन फिर भी कहते हैं कि यह दुनिया अपने आप बन गई है और इसे किसे ने भी नहीं बनाया है। यह भी कितनी अजीब सी बात है कि कुछ लोग ख़ुद को पढ़ा-लिखा तो कहते हैं लेकिन जैसे ही उन्हें इस दुनिया की किसी चीज़ के पीछे छुपा राज़ समझ में नहीं आता तो फ़ौरन ही इस दुनिया के बनाने वाले अल्लाह की बुराई करने बैठ जाते हैं। ताज्जुब होता है 'मानी' जैसे बहके हुए आदमी पर जो हर चीज़ के बारे में जानने का दावा तो करता है मगर वह इस दुनिया के अंदर छुपे हुए राज़ों को नहीं समझ पाता और कहता है कि इस दुनिया का पूरे का पूरा सिस्टम बेकार और भूल-चूक से भरा हुआ है। इतना ही नहीं बल्कि वह तो इस दुनिया को बनाने वाले हकीम और करम करने वाले अल्लाह पर भी सवाल खड़ा कर देता है।

अल्लाह हमारी समझ से परे है

इससे भी बढ़कर ताज्जुब की बात यह है कि अल्लाह को न मानने वालों के एक ग्रुप ने तो यहाँ तक चाहा कि उस चीज़ को भी अपनी इन्द्रियों से महसूस कर लें जिसे अक़्ल भी नहीं समझ सकती। जब यह लोग उसे नहीं समझ पाए तो फ़ौरन उसका इन्कार कर बैठे और उसे झुठला दिया। कहने लगे कि जो चीज़ हमारी अक़्ल में नहीं आती हम उसे मान ही नहीं सकते।

उनसे कहा गया कि वह तो अक़्ल और समझ से भी ऊपर है, बिल्कुल उसी तरह जैसे आँखें उन चीज़ों को नहीं देख सकतीं जो आँखों से परे हों। अगर तुम्हें हवा में कोई पत्थर दिखाई दे तो तुम फ़ौरन समझ जाओगे कि ज़रूर किसी ने यह पत्थर हवा में उछाला है। तुम यह बात पत्थर उछालने वाले को देखकर नहीं कहते हो बल्कि अपनी अक़्ल से समझकर कहते हो क्योंकि तुम्हारी अक़्ल तुम्हें यही बताती है कि कोई भी पत्थर अपने आप हवा में नहीं उछल सकता। क्या तुम नहीं देखते कि आँखें भी बस अपनी हद के अंदर ही देख पाती हैं? ठीक इसी तरह अक़्ल की भी अपनी एक हद है और वह अपनी उस हद से आगे नहीं बढ़ सकती। यही वजह है कि अक़्ल अल्लाह की इस ख़िलक़त (रचना) को नहीं समझ सकती लेकिन अपनी अक़्ल से आदमी इतना ज़रूर समझ जाता है कि कोई हस्ती है जिसे न ही देखा जा सकता और न ही महसूस किया जा सकता है।

यहाँ तक आने के बाद हम कह सकते हैं कि हमारी अक़्ल इस दुनिया के बनाने वाले को इस तरह से पहचानती है कि हमें उस ख़ालिक़ (रचयता) को मानने पर मजबूर कर देती है। ऐसा नहीं है कि अक़्ल उस हस्ती को पूरी तरह से पहचान लेती है।

हो सकता है कि यहाँ पर कोई यह सवाल कर बैठे कि जब अक़्ल अल्लाह को समझ ही नहीं सकती तो फिर उसने अपने कमज़ोर बन्दों को यह ज़िम्मेदारी क्यों दी है कि वह अपनी अक़्ल से उसे समझने और पहचानने की कोशिश करें?

इस सवाल का जवाब यह है कि बन्दों की ज़िम्मेदारी बस उतनी ही है जितनी उनके अंदर समझने की ताक़त है यानी उन्हें बस इतनी कोशिश करना है कि उन्हें अल्लाह के होने का यक़ीन हो जाए ताकि अल्लाह ने जो कुछ इन्सान से करने के लिए कहा है वह उसे पूरा करे और जिन-जिन बातों से रोका है उनसे दूर रहे। अल्लाह की हक़ीक़त को समझना और पहचानना लोगों की ज़िम्मेदारी बिल्कुल नहीं है। ठीक उसी तरह जैसे कोई राजा अपनी प्रजा से कभी यह नहीं चाहता कि वह उसके क़द को जानने की कोशिश करे कि लम्बा है या नाटा, गोरा है या काला बल्कि वह तो उनसे बस यह चाहता है कि उसकी बादशाहत को मानें और उसके हुक्म पर चलें। ज़रा सोचो कि अगर कोई आदमी किसी बादशाह के दरबार में पहुँचकर कहे कि ऐ बादशाह! आप ख़ुद अपनी असलियत मुझे दिखाईए ताकि मैं आपको पहचान सकूँ और अगर आपने ऐसा नहीं किया तो मैं आपका हुक्म नहीं मानूँगा... तो ऐसी हालत में क्या होगा? बेशक! वह बादशाह उसे सज़ा देगा। इसी तरह अगर कोई यह कहे कि मैं अपने पालने वाले को तब तक नहीं मानूँगा जब तक कि उसे पूरी तरह से समझ न लूँ और उसकी असलियत तक न पहुँच जाऊँ तो ऐसी हालत में वह आदमी अल्लाह के ग़ज़ब (प्रकोप) का शिकार नहीं होगा तो और क्या होगा।

अगर कोई पूछ ले कि उसके बारे में लोगों की मान्यताएं और सोच इतनी अलग-अलग क्यों हैं?

तो इस बात का जवाब यह है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि लोगों की अक़्ल अल्लाह को नहीं समझ सकती। मगर लोग अपनी इसी कमज़ोर और छोटी सी अक़्ल से जब अल्लाह को पूरी तरह से समझने व जानने की कोशिश करते हैं तो उनकी अक़्ल उलझ जाती है। जब लोग बहुत सी छोटी-छोटी चीज़ों को नहीं समझ पाते तो वह भला अल्लाह को कहाँ समझ सकते हैं?

सूरज के बारे में होने वाले झगड़े

इस तरह की समझ में न आने वाली चीज़ों में से एक सूरज भी है जो सारी दुनिया पर चमकता है और जिसे कोई भी नहीं समझ पाया है। यही वजह है कि सूरज के बारे में हर आदमी एक नई बात कहता दिखाई पड़ता है। फ़िलास्फ़र्स ने भी इसके बारे में एक जैसी बातें नहीं कही हैं।

कुछ कहते हैं कि सूरज एक ऐसा तारा है जिसके पेट में आग भरी हुई है। जिसके मुँह से गर्मी और आग निकलती रहती है।

कुछ कहते हैं कि सूरज बादल की तरह है।

कुछ कहते हैं कि यह शीशे की तरह है जो आग को अपनी तरफ़ खींचकर उसकी किरनें दुनिया पर फैंकता रहता है।

कुछ कहते हैं कि यह एक बहुत नाज़ुक जिस्म है जो पानी से बना है।

कुछ दूसरे कहते हैं कि सूरज आग के बहुत सारे टुकड़ों से मिलकर बना है।

कुछ का कहना है कि यह चार अनासिर (तत्वों) के बाद पाँचवाँ उन्सुर (तत्व) है जो पिछले चारों तत्वों से अलग है मगर यह लोग इसकी शक्ल के बारे में कोई एक बात नहीं कहते।

कुछ का मानना है कि यह तवे की तरह चपटा है।

कुछ का मानना है कि गेंद की तरह गोल है लेकिन कितना बड़ा है इस पर सब की राए एक नहीं है।

कुछ दूसरे कहते हैं कि यह बिल्कुल ज़मीन की तरह और ज़मीन के ही बराबर है।

कुछ का मानना है कि यह ज़मीन से छोटा है।

कुछ कहते हैं कि सूरज ज़मीन से भी बड़ा है।

मैथ्मीटीशियंस का कहना है कि सूरज ज़मीन से 170 गुना बड़ा है।

सूरज के बारे में इतनी सारी अलग-अलग बातें इस बात का सुबूत हैं कि अभी तक आदमी सूरज की असलियत तक भी नहीं पहुँच पाया है।

अब जबकि सूरज को आँख देख भी सकती है फिर भी अक़्ल इसे नहीं समझ पा रही है तो फिर वह हस्ती (अल्लाह) कैसी होगी जिसे देखा भी नहीं जा सकता और न ही वह किसी हिस्स (इन्द्रि) में आती है।

अल्लाह छुपा हुआ क्यों है?

अगर कोई यह पूछे कि अल्लाह छुपा हुआ क्यों है तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह के छुपे होने का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि उसने किसी चीज़ की मदद से अपने आप को छुपा लिया है या लोगों की तरह किसी दीवार या दरवाज़े के पीछे छुप गया है बल्कि हमारे कहने का मतलब यह है कि वह इससे कहीं परे है कि अक़्ल की पकड़ में आ सके। अक़्ल उसे समझ ही नहीं पाती है। ठीक उसी तरह जैसे उसकी बनाई हुई एक चीज़ रूह (आत्मा) है जिसे कोई भी नहीं समझ सका है (यानी जब अक़्ल रूह को नहीं समझ सकती तो फिर जिसने रूह को बनाया है जिसे अल्लाह कहते हैं उसे कैसे समझ पाएगी)।

अब अगर कोई यह सवाल कर ले कि अल्लाह समझ में क्यों नहीं आता?

तो इसके जवाब में हम यह कहेंगे कि यह सवाल ही सिरे से ग़लत है क्योंकि जिसने हर चीज़ बनाई है उसे हर चीज़ से अलग और हर चीज़ से परे होना चाहिए।

बेशक वह इन नासमझों की सोच से कहीं परे और पाक है।

अल्लाह को चार तरह से पहचाना जा सकता है

अगर कहा जाए कि अल्लाह हर चीज़ से अलग और हर चीज़ से परे क्यों है यानी वह हमारी समझ में क्यों नहीं आता?

तो जवाब में हम कहेंगेः

किसी भी चीज़ को चार तरह से पहचाना जा सकता हैः

(1) पहले देखा जाए कि वह चीज़ है भी कि नहीं?

(2) उसकी असलियत क्या है?

(3) वह कैसी है और उसके सिफ़ात (गुण) क्या हैं?

(4) वह क्यों ऐसी बनी है?

अल्लाह के बारे में आदमी इन चारों में से बस यही जान सकता है कि वह है। अगर हम जानना चाहें कि वह कैसा है और क्या है तो इस सवाल का जवाब हमें नहीं मिल पाएगा क्योंकि उसकी असलियत की तह तक पहुँचा ही नहीं जा सकता।

अब अगर हम यह पूछने बैठ जाएं कि वह कैसे बना है तो यह पूछकर हम उसके ख़ालिक़ (रचयता) होने पर सवाल खड़ा कर रहे होंगे क्योंकि वह -अल्लाह- तो ख़ुद ही हर चीज़ को बनाने वाला है। इसलिए कोई भी चीज़ ऐसी नहीं हो सकती जो उसके बनने की वजह बन जाए (यानी उसे किसी ने नहीं बनाया है)।

दूसरी बात यह कि अगर आदमी को यह पता चल जाए कि अल्लाह मौजूद है तो फिर यह ज़रूरी नहीं है कि वह यह भी जाने वह कैसा है और क्या है (यानी यह ज़रूरी नहीं है कि अगर आदमी अल्लाह को मानता हो तो उसकी असलियत और उसकी सिफ़ात (गुणों) को भी समझ ले)। जैसे आदमी अगर रूह (आत्मा) को पहचान ले तो ज़रूरी नहीं है कि वह यह भी समझे कि रूह कैसी होती है और क्या होती है। इसी तरह दूसरी रूहानी (Spritual) चीज़ें भी हैं।

अल्लाह हर चीज़ से बढ़कर हमारे पास है

अगर हम से कहा जाए कि आप तो अल्लाह के बारे में बिल्कुल ऐसा बता रहे हैं जैसे वह कोई नामालूम चीज़ हो जिसे समझा ही न जा सकता हो।

तो इसके जवाब में हम कहेंगे कि हाँ! जहाँ तक उसे अक़्ल से समझने और उसकी असलियत को जानने की बात है तो बेशक वह ऐसा ही है और उसकी असलियत को कोई भी नहीं समझ सकता लेकिन दूसरी तरफ़ से अगर दलीलों (Proofs) के साथ उसे जानने की कोशिश की जाए तो फिर वह हर चीज़ से बढ़कर हमारे पास है। इस बात को हम यूँ भी कह सकते हैं कि एक हिसाब से वह इतना साफ़ और खुला हुआ है कि किसी से भी छुपा हुआ नहीं है और दूसरे हिसाब से वह इतना छुपा हुआ और पेचीदा है कि कोई उसे पहचान ही नहीं सकता। अक़्ल का मामला भी कुछ ऐसा ही है कि यह सुबूतों की बुनियाद पर बिल्कुल हमारी आँखों के सामने होती है मगर दूसरे हिसाब से अक़्ल को कोई देख ही नहीं सकता।

नेचर को खुदा मानने वाले लोग

कुछ लोग नेचर को ही ख़ुदा मान लेते हैं और कहते हैं कि नेचर कभी भी कोई बेकार या फ़ाल्तू काम नहीं करता। नेचर की हर चीज़ पूरी और पक्की होती है। यह लोग अपने इस अक़ीदे (Belief) की वजह 'हिकमत' बताते हैं।

कोई इन लोगों से पूछे कि वह कौन है जिसने इस नेचर को यह समझ, अक़्ल व हिकमत दी है कि नेचर की कोई भी चीज़ अपनी हद से कभी बाहर नहीं निकलती ? जबकि यह वह काम है जो अक़्लें इतने सारे तजुर्बो के बाद भी नहीं कर पाती हैं।

अगर यह लोग जवाब में कहें कि ख़ुद नेचर के अंदर ही यह क़ुदरत (ताक़त) व हिकमत पाई जाती है तो इसका मतलब यह

होगा कि इन लोगों ने उस बात को मान लिया है जिसका यह इन्कार कर रहे थे क्योंकि हिकमत व क़ुदरत तो उसी बनाने वाले अल्लाह की सिफ़त हैं (बस नाम का फ़र्क़ है कि हम उसे अल्लाह कहते हैं और यह लोग उसे नेचर कहते हैं)। लेकिन अगर यह लोग कहें कि नेचर के अंदर यह हिकमत व क़ुदरत कहीं बाहर से आई है तो इसका मतलब अपने आप यह हो जाएगा कि फिर यह काम उसी हिकमत वाले अल्लाह का है।

पिछले वाले लोगों में से कुछ का मानना था कि इस दुनिया के अंदर कोई सिस्टम, कोई तालमेल या बैलेंस नहीं है बल्कि हर चीज़ अपने आप अचानक बन गई है यानी दुनिया को किसी ने भी नहीं बनाया है। वह लोग अपनी इस ग़लत सोच को साबित करने के लिए कई ऐसी बातों का सहारा लिया करते थे जो दिखने में ही ग़लत होती थीं। यह लोग कहते थे कि कुछ बच्चे ऐसे भी तो पैदा होते हैं जिनका बदन पूरा नहीं होता, किसी के हाथ या पैर में छः उंगलियाँ होती हैं, किसी का बदन पूरी तरह से बन ही नहीं पाता कि बच्चा माँ के पेट से बाहर आ जाता है या किसी के बदन के हिस्से एक-दूसरे से जुड़े होते हैं... यह सारी बातें हमें बताती हैं कि यह दुनिया एकदम से बन गई है और इसे किसी ने नहीं बनाया है।

मशहूर फ़िलास्फ़र अरस्तातालीस (अरस्तू/ Aristotle) ने इन लोगों का यह जवाब दिया था:

अगर कभी कोई चीज़ अपने नेचुरल रास्ते से हटकर किसी दूसरी तरह से बन जाए तो इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं होता कि वह चीज़ अपनी नेचुरल हालत से बाहर निकल गई है। इस तरह की बातें बस कभी-कभी ही होती हैं। हमेशा नहीं हुआ करतीं (कि यह कह दिया जाए कि कोई सिस्टम ही नहीं है और दुनिया अपने आप एकदम से बन गई है)।

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! तुम ख़ुद देखते रहते हो कि जानदारों की शक्लें एक जैसी ही होती है जैसे जब बच्चा माँ के पेट से निकल कर इस दुनिया में आता है तो दो हाथ-पैर और पाँच उंगलियाँ लेकर ही आता है और लगभग सारे लोग ही ऐसे होते हैं लेकिन अगर

कोई इस शक्ल के साथ पैदा न हो तो इसका मतलब यह है कि ज़रूर माँ के पेट में या ख़ुद उस माद्दे के अंदर ही कोई ऐसी ख़राबी रही होगी जिसकी वजह से यह बच्चा दूसरे बच्चों से अलग पैदा हुआ है।

आदमी जब अपने काम करता है तो सोच-समझकर करता है लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि वह काम तो ठीक करता है लेकिन जो औज़ार उसके पास होते हैं उन में कोई न कोई कमी होती है जिससे उसका काम ख़राब हो जाता है। कभी-कभी ऐसी ही कमियों की वजह से पैदा होने वाले बच्चों में भी गड़बड़ी हो जाती है जैसे किसी बच्चे में कोई चीज़ बढ़ जाती है तो किसी में कम, किसी का चेहरा बहुत भद्दा हो जाता है या किसी के दो हिस्से एक-दूसरे में मिल जाते हैं लेकिन आमतौर पर लोग ठीक-ठाक ही इस दुनिया में आते हैं।

जैसे अगर किसी ख़ास वजह से किसी बनाने वाले के किसी काम में कोई ख़राबी आ जाए तो उस बनाने वाले को कोई बुरा नहीं कहता, ठीक उसी तरह अगर इस दुनिया में कुछ चीज़ें ऐसी हो जाएं जो दिखने में हिकमत व सिस्टम से मेल न खाती हों तो यह नहीं कहा जा सकता कि पूरे का पूरा नेचर और इस नेचर का सिस्टम ही गड़बड़ है जिसमें कोई तालमेल नहीं है या किसी ने इसे बनाया ही नहीं है या यह अपने आप ही अचानक बन गया है।

इसलिए यह बात कहीं से कहीं तक ठीक नहीं है कि कोई आदमी डगर से हटी हुई दो-चार चीज़ें देख ाकर यह कहने लगे कि इस दुनिया में कोई क़ायदा-क़ानून नहीं है बल्कि जो कुछ हो रहा है वह बस चलता चला जा रहा है जिसे न किसी ने बनाया है और न कोई इसे चला रहा है।

अब अगर कोई यह कहने लगे कि ऐसा होता ही क्यों है?

तो इसका जवाब यह है कि ऐसा इसलिए है ताकि कोई यह न सोच बैठे कि चीज़ें नेचर के हाथों बनती हैं और अगर ऐसा होता तो हमेशा सारी चीज़ें एक जैसी ही बना करतीं लेकिन ऐसा नहीं है जिसका सीधा सा मतलब यह है कि नेचर से हटकर कोई

दूसरी हस्ती भी है जो जानकार भी है और हिकमत वाली भी। उस हस्ती ने इस नेचर को कुछ ऐसा ही बनाया है कि यह आमतौर पर एक ही फ़ार्मूले पर चलता रहे लेकिन कभी-कभी किसी ख़ास वजह से अपने रास्ते से हट भी जाए ताकि हर एक की समझ में यह बात आ जाए कि सब कुछ नेचर का किया-धरा नहीं है बल्कि कोई और भी है जो इस दुनिया को चला रहा है। यह दुनिया अपने बाक़ी रहने में, चलने में और जिस काम के लिए इसे बनाया गया है उस काम को पूरा करने में अल्लाह की मोहताज है और बेशक वही सबसे अच्छा बनाने वाला है।

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! जो कुछ मैंने तुम्हें बताया और सिखाया है उसे संभाल कर रखना। अपने पालने वाले का उसकी दी हुई नेमतों पर शुक्र अदा करो और उसके भेजे हुए नेक बन्दों के बताए रास्ते पर चलते रहो। इस दुनिया और इसे बनाने वाले के बारे में बहुत सारी दलीलों में से मैंने तुम्हें बस कुछ ही बताई हैं। जो कुछ मैंने तुम्हें बताया है उस पर ध्यान देना और ग़ौर करना। इन सारी बातों से सीखने की कोशिश भी करना।

कुछ मुफ़ज़्ज़ल बिन उमर के बारे में

इमाम सादिक़[अ०] के इस सहाबी का नाम *मुफ़ज़्ज़ल*, बाप का नाम *उमर* और उनकी कुन्नियत *अबू मोहम्मद* या *अबू अब्दुल्लाह* थी। मुफ़ज़्ज़ल पहली सदी हिजरी के आख़िर में या दूसरी सदी हिजरी के शुरू में ईराक़ के शहर कूफ़े में पैदा हुए थे।

मुफ़ज़्ज़ल बिन उमर, इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] और इमाम मूसा काज़िम[अ०] के बड़े ख़ास शार्गिदों और साथियों में से थे। मासूम इमामों[अ०] की नज़र में उनका दर्जा बड़ा ऊँचा था।

वह कूफ़े में इमाम सादिक़[अ०] और इमाम काज़िम[अ०] के वकील भी थे। इमाम सादिक़[अ०] ने उन्हें यह काम भी सौंप रखा था कि इमाम के लिए लोगों की तरफ़ से जो पैसा आता था वह उस पैसे को लोगों की भलाई पर ख़र्च करें और उनकी मदद करें।

हदीसें लिखने वालों के बीच में मुफ़ज़्ज़ल का दर्जा कितना ऊँचा है इस बात को समझने के लिए वही हदीसें बहुत हैं जो ख़ुद मासूमीन[अ०] ने उनकी तारीफ़ में बयान की हैं। यह हदीसें एक-दो नहीं बल्कि बहुत सारी हैं। इन हदीसों में से हम यहाँ बस एक हदीस पेश कर रहे हैं।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं:

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! ख़ुदा की क़सम! मैं तुम्हें और तुम्हारे दोस्तों को बहुत चाहता हूँ। अगर मेरे दूसरे सब साथी भी उतना ही जानते होते जितना तुम जानते हो तो कभी भी उन में से किसी दो के बीच कोई मतभेद न होता।

ऐसी बहुत सारी हदीसें हैं जो यह साबित करती हैं कि इमामों के दिल में मुफ़ज़्ज़ल के लिए बहुत बड़ी जगह थी और वह उनसे बड़ी मोहब्बत किया करते थे।

*****